राजभाषा विशेषांक

जल विकास

Jal Vikas

त्रैमासिक पत्रिका

खण्ड-27

अक्तूबर 2019

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण की आंतरिक पत्रिका
(Inhouse Bulletin of National Water Development Agency)

हिन्दी पखवाड़े के उद्घाटन समारोह की झलकियां

"जल ही जीवन है, इसका संरक्षण करें"

जल विकास राजभाषा विशेषांक

संपादक मंडल

श्री आर.के. जैन, मुख्य अभियंता (मुख्यालय)

अध्यक्ष

श्री के.पी. गुप्ता, निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी

सदस्य

श्री राकेश कुमार गुप्ता, कार्यपालक अभियंता (मुख्यालय)

सदस्य

श्रीमती अर्चना गुप्त, सहायक निदेशक (राजभाषा)

सदस्य–सचिव

पत्रिका में छपे सभी लेखों के लेखकों के विचार उनके अपने हैं
और राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण उसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

हिन्दी पखवाड़े के उद्घाटन समारोह की झलकियां

हिन्दी पखवाड़े के उद्घाटन समारोह की झलकियां

इस अंक में

संदेश एवं अपील

– महानिदेशक, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण द्वारा राजभाषा अपील
– माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार द्वारा राजभाषा संदेश
– माननीय मंत्री, जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राजभाषा संदेश
– माननीय राज्य मंत्री, जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राजभाषा संदेश
– सचिव, जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राजभाषा अपील
– महानिदेशक महोदय की ओर से
– मुख्य अभियंता (मुख्यालय) का संदेश
– निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी द्वारा संपादकीय

लेख

– इक्कीसवीं सदी की जल संसाधन चुनौतियों से निबटने में सहायक भारतीय जल संरक्षण परम्पराएं
श्री राजीव निगम, कनिष्ठ अभियंता, नई दिल्ली
– वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अनुवाद की भूमिका
डॉ. अनिल कुमार द्विवेदी, हिन्दी अनुवादक, नई दिल्ली
– पृथ्वी और पर्यावरण की रक्षा
श्री ललित कुमार स्यानियॉ, कनिष्ठ अभियंता एवं श्रीमती राधा, अवर श्रेणी लिपिक, नई दिल्ली
– जल–जीवन और प्रबंधनः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में
श्री हरि ओम वार्ष्णेय, कनिष्ठ अभियंता, नई दिल्ली

तकनीकी सारसंग्रह

– प्रशिक्षण/संगोष्ठी/सम्मेलनों में भागीदारी
– नियुक्ति/पदोन्नति/सेवानिवृत्ति/शोक का विवरण

रा.ज.वि.अ. की गतिविधियां

– मुख्यालय में हिन्दी पखवाड़ा–2019 का आयोजन
– मुख्य अभियंता (उत्तर) के कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़ा–2019 का आयोजन
– मुख्य अभियंता (दक्षिण) के कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़ा–2019 का आयोजन

कविताएं

– जल की व्यथा

श्री राजीव निगम, कनिष्ठ अभियंता, रा.ज.वि.अ., नई दिल्ली

अन्य

– दिनांक 14–15 जून, 2019 को हैदराबाद में आयोजित ''जल संसाधन के ईष्टतम उपयोग में प्रबंधन की भूमिका'' विषय पर तकनीकी संगोष्ठी की रिपोर्ट

– छठा भारत जल सप्ताह – 2019

– राजभाषा संबंधी प्रमुख बैठकें

– सीएसआईआर द्वारा आयोजित दिनांक 06 सितम्बर, 2019 को राष्ट्रीय हिन्दी वैज्ञानिक कार्यशाला में ''स्मार्ट शहरों के संदर्भ में कुशल जलापूर्ति प्रणाली'' विषय पर श्री राजीव निगम, कनिष्ठ अभियंता, रा.ज.वि.अ., नई दिल्ली शील्ड प्राप्त करते हुए

– अन्वेषण सर्किल ग्वालियर को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर से प्राप्त प्रशस्ति पत्र

– अन्वेषण सर्किल, भुवनेश्वर को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भुवनेश्वर से प्राप्त प्रशस्ति पत्र

एम. के. श्रीनिवास
महानिदेशक
M. K. Srinivas
Director General

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण
जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार
(जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग)
National Water Development Agency
Ministry of Jal Shakti, Government of India
(Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation)

दिनांक : 19 अगस्त, 2019

अपील

हमारी हर गतिविधि के लिए चाहे वह छोटी हो या बड़ी, व्यक्तिगत हो या सामाजिक, उसे किसी न किसी भाषा की जरूरत पड़ती ही है। यह एक भाषा की ही ताकत है कि हम अपनी हर गतिविधि, सोच-विचार एवं भावनाओं को दूसरों तक बहुत सरलता से पहुंचा कर अपने दायित्वों का निर्वहन करते हैं। हमारी इन्हीं आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुए भारतीय संविधान द्वारा 14 सितंबर 1949 को भारत जैसे विशाल भूभाग को धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और आर्थिक परंपराओं को एक धागे में पिरोये रखने के लिए, देश में सर्वाधिक बोली जाने वाली हिन्दी भाषा को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया।

हिन्दी का क्षेत्र आज इतना व्यापक हो गया है कि हम हर क्षेत्र की चुनौतियों का सामना हिन्दी के माध्यम से कर सकते हैं। विश्व में भी हिन्दी ने अपनी सार्थक उपस्थिति दर्ज की है।

संविधान में देश की संघ सरकार को जिम्मेदारी दी गई कि वह संविधान द्वारा प्रदत्त इस दायित्व का क्रियान्वयन करे और इसका प्रचार- प्रसार एवं संवर्धन भी करे।

अतः हम सब का भी यह दायित्व है कि हम हिन्दी का मूल रूप से प्रयोग करें और मेरी यह अपील है कि संविधान की भावनाओं के अनुरूप हम अपने सभी कार्यालयी दैनिक कार्य हिन्दी में ही करें और इसके लिए अपने सहकर्मियों को भी प्रेरित करें।

(एम.के. श्रीनिवास)
महानिदेशक

18-20, सामुदायिक केन्द्र, साकेत, नई दिल्ली / 18-20, Community Centre, Saket, New Delhi-110017
दूरभाष / Phone : 011-26519164 / 41033995 फैक्स / Fax : 011-26513846
ई-मेल / E-mail : dg-nwda@nic.in वेबसाइट / Website : www.nwda.gov.in

सत्यमेव जयते

अमित शाह
गृह मंत्री
भारत
AMIT SHAH
HOME MINISTER
INDIA

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं !

हमारा देश विविध भाषाओं, बोलियों एवं संस्कृतियों का देश है। भारतीय सभ्यता, संस्कृति, सहित्य एवं दर्शन का गौरवपूर्ण इतिहास हिंदी भाषा में उपलब्ध है। हिंदी देश के सभी भाषा-भाषियों के मध्य भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। हिंदी भाषा में संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं तथा बोलियों के भाव जीवंत हैं। भारतीय सभ्यता की अविरल धारा प्रमुख रूप से हिंदी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है।

किसी भी लोकतांत्रिक देश में जनता और शासन के मध्य जन भाषा ही संपर्क भाषा के रूप में सार्थक भूमिका अदा कर सकती है। हिंदी भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हिंदी एक उन्नत, समृद्ध और वैज्ञानिक भाषा है। हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना बड़ा सरल है। हिंदी में जो बोला जाता है वही लिखा जाता है। हिंदी की इन विशेषताओं एवं सर्वाधिक लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए ही भारतीय संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया एवं संविधान में इस संबंध में समुचित प्रावधान किए गए।

अपनी भाषा में मौलिक लेखन और कामकाज से अभिव्यक्ति बहुत ही सहज और सरल होती है, जो अनुवाद की भाषा से संभव नहीं है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी को सरलतम रूप में अपनाकर राजकीय कामकाज में अधिक से अधिक इसका प्रयोग किया जाए। मैं भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/ कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों इत्यादि के कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से अनुरोध करता हूँ कि वे अपने दैनिक और सरकारी कामकाज में मूल रूप से हिंदी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिले।

उदारीकरण, भूमंडलीकरण और उपभोक्तावाद के इस युग में देश को आर्थिक रूप से शक्तिशाली बनाने तथा कौशल विकास को प्रोत्साहन देते हुए आम जनता को सूचना प्रौद्योगिकी, कृषि अभियांत्रिकी और स्वास्थ्य सेवाओं जैसे क्षेत्रों में राजभाषा हिंदी के माध्यम से शिक्षित करने की बहुत अधिक आवश्यकता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी का और अधिक प्रचार-प्रसार करने के लिए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **कंठस्थ** का निर्माण किया है। स्मृति आधारित इस अनुवाद कार्य प्रणाली की विशेषता यह है कि इसमें अनुवादक पूर्व में की गई अनुवाद सामग्री का पुनः प्रयोग कर सकता है जिससे समय की काफी बचत होती है। राजभाषा विभाग द्वारा जन-साधारण के लिए **लीला हिंदी प्रवाह मोबाइल ऐप** तैयार किया गया है जिसके माध्यम से 14 विभिन्न भाषा-भाषी अपनी अपनी मातृभाषाओं में निःशुल्क हिंदी सीख सकते है।

संघ की राजभाषा नीति का आधार सद्भावना, प्रेरणा और प्रोत्साहन है। संघ की राजभाषा होने के कारण हम सभी का यह संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन उसी दृढ़ता और तत्परता के साथ करें, जिस प्रकार अन्य सरकारी अनुदेशों का अनुपालन करते हैं। हम स्वयं अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करते हुए अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों से भी राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आम आदमी सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ उठा सके।

आइए ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर हम यह प्रतिज्ञा लें कि हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी के माध्यम से स्वदेशी विज्ञान की समृद्ध परंपरा को जन-जन तक पहुंचाकर शिक्षित, शक्तिशाली एवं नए भारत का निर्माण करेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे सामूहिक एवं सार्थक प्रयासों से हिंदी न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु विश्व पटल पर ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण एवं समृद्ध भाषा के रूप में विश्व भाषा बनेगी।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से पुनः हार्दिक शुभकामनाएं !

जय हिंद !

(अमित शाह)

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2019

गजेन्द्र सिंह शेखावत
Gajendra Singh Shekhawat

सत्यमेव जयते

जल शक्ति मंत्री
भारत सरकार
Minister for Jal Shakti
Government of India

03 SEP 2019

संदेश

भारत एक बहुभाषी देश है। यहां की सभी भाषाएँ अपने आपमें समृद्ध और सक्षम हैं। हमारे संविधान निर्माताओं ने काफी सोच-विचार के बाद 14 सितम्बर, 1949 के दिन हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया था और संविधान सभा ने सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया था कि स्वतंत्र भारत की राजभाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी होगी। उस समय भी यह एक ऐसी भाषा थी जिसे भारत की अधिकतर जनता बोल सकती थी।

हिन्दी बहुत सरल और मधुर भाषा है। यह संपूर्ण भारत में सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली और समझी जाती है। इसी भाषा के माध्यम से जन-जन में हम जागृति ला सकते हैं। विश्व उस देश को सम्मान की दृष्टि से देखता है जिस देश के नागरिक अपनी भाषा में सोंचे और लिखें। भारत जैसे विशाल, बहुभाषी और प्रजातांत्रिक देश की चहुँमुखी विकास प्रक्रिया में हिन्दी के साथ ही अन्य भारतीय भाषाओं की भी अहम भूमिका रही है। राष्ट्रहित में हमें अपनी राष्ट्रभाषा को उसकी गरिमा देकर उसका गौरव बढ़ाना है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने कहा था कि राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की एकता व उन्नति के लिए आवश्यक है।

हिन्दी दिवस के अवसर पर मैं जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग तथा इसके सभी संबद्ध व अधीनस्थ कार्यालयों के अधिकारियों तथा कर्मचारियों से अनुरोध करता हूँ कि इस अवधि के दौरान अधिक से अधिक काम हिन्दी में करें तथा भविष्य में भी उसे जारी रखें। राजभाषा अधिनियम व उसके अधीन बनाये गये नियमों का पूरा-पूरा अनुपालन करना हम सबका संवैधानिक कर्तव्य है। इस अवसर पर हम सब अपने इस दायित्व को समझते हुए शपथ लें कि अपना अधिक से अधिक सरकारी कामकाज यथासंभव हिन्दी में करते हुए राजभाषा के विकास में अपना योगदान देंगे।

हिन्दी दिवस के अवसर पर आप सबको मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

Office : 210, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110 001
Tel: No. (011) 23711780, 23714663, 23714200, Fax : (011) 23710804
E-mail : minister-mowr@nic.in

रतन लाल कटारिया
RATTAN LAL KATARIYA

सत्यमेव जयते

जल शक्ति
और सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली-110001
MINISTER OF STATE FOR
JAL SHAKTI AND SOCIAL JUSTICE & EMPOWERMENT
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI - 110001

संदेश

हिंदी दिवस पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

भारत में भाषायी विविधता के होते हुए भी हिन्दी हम सबको एकता के सूत्र में पिरोए हुए है । हिन्दी किसी भी वर्ग विशेष की भाषा नहीं है अपितु इसका प्रयोग कश्मीर से कन्याकुमारी तक पूरे भारत में सभी वर्ग के लोगों द्वारा किया जाता है, इसलिए संविधान निर्माताओं ने हिन्दी को देश की राजभाषा का दर्जा दिया है । राष्ट्रहित में हमें अपनी राष्ट्रभाषा को उसकी अस्मिता, गौरव और उचित स्थान देते हुए अपने संवैधानिक दायित्व को निभाना है। आजादी मिले हुए 72 वर्षों से भी अधिक समय हो चुका है किन्तु हम सरकारी कामकाज में अभी भी हिन्दी को वह स्थान नहीं दे सके जो बहुत पहले ही दिया जाना चाहिए था । जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय में 14 सितम्बर, 2019 से 28 सितम्बर, 2019 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया जा रहा है । सभी से मेरा यह आग्रह है कि इस शुभ अवसर पर जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय तथा इसके अधीन आने वाले कार्यालयों के सभी अधिकारीगण और कर्मचारीगण मिलकर यह संकल्प करें कि हम अपने निजी व सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिक से अधिक उपयोग करेंगे ।

विभाग के अधिकांश अधिकारी तथा कर्मचारी हिन्दी में या तो प्रवीणता प्राप्त हैं अथवा उन्हें हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान है । ऐसी स्थिति में हमें राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए ठोस कार्रवाई करनी है । ये लक्ष्य तभी प्राप्त किए जा सकते हैं जब हम यह संकल्प करें कि हम अपने सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिक से अधिक उपयोग करेंगे । यह कार्य केवल हिन्दी पखवाड़े तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए बल्कि पूरे वर्ष हिन्दी में कार्य किया जाना चाहिए, तभी हम निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ पाएंगे ।

मैं विभाग में हिन्दी पखवाड़े की सफलता की कामना करता हूँ ।

(रतन लाल कटारिया)

215, श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली -110 001, 215, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110 001
दूरभाष : (011) 23708419, 23718759, फैक्स : 011-23354496, Tel. : (011) 23708419, 23718759, Fax : 011-23354496
Delhi Residence : 4A, Telegraph Lane, Firoz Shah Road, New Delhi, Phone : 011-23329660
Residence : 352, Katariya Kunj, Mata Mansa Devi Complex, Sector-4, Panchkula, Haryana, Tel. : 0172-2555352,

॥ नमामि गंगे ॥

यू. पी. सिंह, आई. ए. एस.
U.P. SINGH, IAS
सचिव
SECRETARY
Tel. : 23710305
Fax : 23731553
E-mail : secy-mowr@nic.in

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
जल शक्ति मंत्रालय
जल संसाधन, नदी विकास
और गंगा संरक्षण विभाग
श्रम शक्ति भवन
रफी मार्ग, नई दिल्ली-110 001
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF JAL SHAKTI
DEPARTMENT OF WATER RESOURCES,
RIVER DEVELOPMENT & GANGA REJUVENATION
SHRAM SHAKTI BHAWAN
RAFI MARG, NEW DELHI-110 001
http://www.mowr.gov.in

अपील

हिन्दी प्राचीन काल से ही भारत की सम्पर्क भाषा रही है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक इसके बोलने और समझने वालों की संख्या सर्वाधिक रही है। भाषाओं को बोलने वालों की दृष्टि से देखा जाए तो सारे संसार में पहला स्थान चीनी भाषा का, दूसरा स्थान अंग्रेजी का और तीसरा स्थान हिन्दी का है। भारत में हिन्दी की व्यापकता और लोकप्रियता को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इसी कड़ी में राजभाषा अधिनियम और नियम बनाए गए है। इनके अंतर्गत हम से यह अपेक्षा की जाती है कि हम अपना अधिक–से–अधिक काम हिन्दी में करें। सरकारी कामकाज में पिछले कई वर्षो से हिन्दी का प्रयोग कमिक दृष्टि से आगे बढ़ा है। हिन्दी को आगे बढ़ाने में विभिन्न प्रकार के मीडिया/सोशल मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। परन्तु उस गति से सरकारी कार्यो में इसका प्रयोग नहीं बढ़ पाया है। सरकारी दफ्तरों में हिन्दी की गति को तीव्रता देने के लिए अभी और प्रयास करने की जरूरत है। सूचना क्रांति के इस युग में सरकारी कार्यालयों में हिन्दी भाषा को सुगम बनाने के लिए हिंदी को भी नई तकनीकों से लैस करना होगा और आधुनिक सुविधाओं के उपयोग से हिन्दी को आगे बढ़ाने में अपना योगदान करना होगा।

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय में 14 सितम्बर, 2019 से 28 सितम्बर, 2019 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया जा रहा है। इसके दौरान हिन्दी से संबंधित अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है। मुझे उम्मीद हे कि मंत्रालय के अधिक–से–अधिक अधिकारी/कर्मचारी इनमें भाग लेंगे और यह आयोजन हिन्दी में काम करने के लिए आप सभी को नई स्फूर्ति और प्रेरणा प्रदान करेगा। हिन्दी में काम करने की भावना केवल हिन्दी पखवाड़े तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए बल्कि पूरे वर्ष हिन्दी में कार्य किया जाना चाहिए ताकि हम अपेक्षानुसार अपने संवैधानिक दायित्वों को पूरा कर सकें।

हिन्दी दिवस के लिए मैं आप सब को बधाई देता हूँ और हिन्दी पखवाड़े की सफलता के लिए कामना करता हूँ।

उपेन्द्र

(उपेन्द्र प्रसाद सिंह)

जल संरक्षण - जीवन संरक्षण
Conserve water - Save life

महानिदेशक महोदय की ओर से

भारत के संविधान में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है। किसी भी भाषा को राजभाषा का गौरव प्राप्त करने के लिए सरल और सहज होना आवश्यक है जिससे कि एक आम नागरिक भी सरकार के काम–काज को समझ सके। इसके साथ–साथ उसमें सर्वव्यापकता, प्रचुर साहित्य, सरलता और वैज्ञानिक, सभी प्रकार के भावों को प्रकट करने का सामर्थ्य होना अनिवार्य है और ये सभी गुण हिन्दी भाषा में मिलते हैं।

हिन्दी विश्व की तीसरी और भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। तकनीकी में भी हिन्दी ने अपना आधार दृढ़ कर लिया है। माइक्रोसॉफ्ट जैसी बड़ी कंपनी ने हिन्दी की लोकप्रिय और वैश्विक स्थिति के कारण हिन्दी सॉफ्टवेयर के साथ–साथ कई एप भी हिन्दी भाषा में बनाए हैं। आज ग्लोब्लाइजेशन के दौर में भी हिन्दी का महत्व इससे सिद्ध होता है कि इन्टरनेट पर भी हिन्दी आधिकारिक भाषा के रूप में प्रयोग मे लाई जा रही है।

जनसंपर्क का सरल एवं सुगम माध्यम होने के कारण इसने सभी भाषाओं और बोलियों के बीच अपना एक अलग स्थान सुनिश्चित कर लिया है। इसके साथ–साथ विदेशों जैसे फिजी, ट्रिनिडाड, गुयाना, सूरीनाम, मॉरीशस आदि में भी हिन्दी को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। राष्ट्रपति जॉर्ज बुश ने अमेरिकी नागरिकों से कहा था कि "भारत से जुड़ना है, भारतीयों के मन में जगह बनानी है तो हिन्दी सीखो"। हिन्दी की महत्ता तथा लोकप्रियता का इससे बड़ा प्रमाण क्या होगा कि विश्व के 130 विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन किया जा रहा है और इसे सीखने की सुविधा दी जा रही है। हिन्दी की फिल्मों और संगीत ने भी इसके प्रचार–प्रसार में बड़ी भूमिका निभाई है और इसे लोकप्रिय बनाने में अपना सशक्त योगदान दिया है।

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण भी राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के लिए पूर्णतः प्रतिबद्ध है। जैसा कि आप सभी को ज्ञात है इस वर्ष हिन्दी दिवस पर माननीय गृह मंत्री, श्री अमित शाह ने रा.ज.वि.अ. को "राजभाषा कीर्ति पुरस्कार" (द्वितीय) से सम्मानित किया। यह हम सभी के लिए अत्यंत गौरव का विषय है और हमें इस गौरव को बनाए रखने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहना है।

सधन्यवाद।

(भोपाल सिंह)
महानिदेशक
राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण

संदेश

भारत एक बहुभाषी देश है फिर भी हिन्दी इसकी एक प्रमुख और बहुत बड़े भू–भाग में बोली और उससे भी अधिक पूरे भारत में समझी जाने वाली भाषा है। हिन्दी की परम्परा और इतिहास सुदृढ़ है आज वह तकनीकी भाषा के रूप में अपना एक मजबूत स्थान बना रही है। अब हिन्दी बाजार, कम्प्यूटर, जनसंचार और रोजगार का सहज माध्यम बन चुकी है। यह हमारे पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु का काम कर रही है। हिन्दी भारत संघ की राजभाषा होने के साथ–साथ 11 राज्यों और 3 संघ शासित क्षेत्रों की भी राजभाषा है।

केन्द्र सरकार के कार्यालयों में हिन्दी का अधिकाधिक उपयोग सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा तथा अपने मंत्रालय द्वारा जारी सभी आदेशों का अनुपालन राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण द्वारा सुनिश्चित किया जाता है। राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण मुख्यालय तथा इसके सभी क्षेत्रीय कार्यालय हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की तिमाही रिपोर्ट सूचना प्रबंधन प्रणाली के माध्यम से राजभाषा विभाग को ऑनलाइन भेजते हैं। भारतीय भाषा प्रौद्योगिकी मिशन ने हिन्दी भाषा में काम करने के लिए कई सॉफ्टवेयर टूल्स भी विकसित किए हैं जिनके माध्यम से कम्प्यूटर पर हिन्दी में काम करना अत्यधिक सरल हो गया है।

हम सबका यह कर्तव्य है कि सरकार के अन्य नियमों की भांति हम ''राजभाषा के नियमों'' का पालन भी पूरी निष्ठा और लगन से करें और मुझे बहुत खुशी है कि राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण बहुत हद तक इस कार्य में सफल भी हुआ है जिसका प्रमाण है कि हमें वर्ष 2017–18 के लिए दोबारा ''राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'' शील्ड की प्राप्ति हुई है। आप सभी इसके लिए बधाई के पात्र हैं।

आर के जैन

(आर. के. जैन)
मुख्य अभियंता (मुख्यालय)

संपादकीय

जल विकास का राजभाषा विशेषांक आपके सम्मुख प्रस्तुत है जिसमें राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण (रा.ज.वि.अ.) के सभी कार्य परिचालित हो रहे हैं। रा.ज.वि.अ. अपने तकनीकी कार्यों के साथ–साथ राजभाषा संबंधी कार्य करने में सदा प्रयासरत है। केवल मुख्यालय ही नहीं बल्कि पूरे राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में पदाधिकारियों द्वारा हिन्दी संबंधी कार्य विशेष रूचि एवं निष्ठा से किए जा रहे हैं। जिसके फलस्वरूप वर्ष 2017–18 के लिए राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण के ''राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'' प्राप्त करने का गौरव मिला है। मुझे आशा है कि जल विकास के इस विशेषांक का आप स्वागत करेंगे और यह आपकी रूचि के अनुकूल होगा।

इस अंक में रा.ज.वि.अ. के पदाधिकारियों द्वारा विभिन्न विषयों पर लिखे गए लेख प्रकाशित किए गए हैं। आशा है कि ये लेख आपको पसंद आएंगे।

राजभाषा विशेषांक के ''तकनीकी सारसंग्रह'' में रा.ज.वि.अ. के तकनीकी कार्यों की प्रगति को दर्शाया गया है।

इस अंक में रा.ज.वि.अ. मुख्यालय एवं मुख्य अभियंता, उत्तर एवं दक्षिण तथा उनके अधीनस्थ क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा–2018 में कराई गई विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं एवं उनमें पुरस्कृत पदाधिकारियों का विवरण भी झलकियों के साथ प्रकाशित किया जा रहा है। इस अंक में महानिदेशक महोदय द्वारा जारी की गई अपील भी प्रस्तुत है। हिन्दी पखवाड़े के आयोजन में आप सभी की भागीदारी ही इसकी शानदार सफलता का कारण है।

वर्ष 2018–2019 में हिन्दी के उत्कृष्ट क्रियान्वयन के लिए ''राजभाषा वैजयंती'' अन्वेषण सर्किल, हैदराबाद को और लघु राजभाषा वैजयंती उसके अधीनस्थ अन्वेषण प्रभाग, हैदराबाद, अन्वेषण प्रभाग, बंगलौर, अन्वेषण प्रभाग, चेन्नई, अन्वेषण प्रभाग, नागपुर एवं अन्वेषण प्रभाग–।।, नासिक को प्राप्त हुई। मेरी सभी को हार्दिक बधाई और आशा है कि रा.ज.वि.अ. के सभी कार्यालय हिन्दी का प्रयोग सदा इसी निष्ठा पूर्वक करेंगे।

रा.ज.वि.अ. के पदाधिकारियों द्वारा जिन विभिन्न प्रशिक्षण/संगोष्ठी/सम्मेलन एवं कार्यशालाओं में भाग लिया गया उनका विवरण भी इस अंक में प्रस्तुत किया गया है एवं साथ ही रा.ज.वि.अ. में हुई नई नियुक्तियों, पदोन्नतियों व सेवानिवृत्तियों का विवरण भी दिया गया है। इस अंक के अंत में रा.ज.वि.अ. के पदाधिकारियों की रोचक कवितायें प्रस्तुत हैं जो आप सभी को काव्य रस की अनुभूति कराएंगी।

अंत में आप सभी से मेरा अनुरोध है कि आपको यह अंक कैसा लगा, और इसको बेहतर बनाने के बारे में अपने विचार हम तक पहुंचाएं।

सधन्यवाद।

(के. पी. गुप्ता)
निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी

इक्कीसवीं सदी की जल संसाधन चुनौतियों से निपटने में सहायक भारतीय जल संरक्षण परम्पराएं

*राजीव निगम

21 वीं सदी के भौतिकवादी युग में, जहां एक ओर समाज के अमीर एवं बड़े शहरों के लोग स्विमिंग पूल, खूबसूरत फव्वारों, गाड़ियों व सड़कों की धुलाई, बाथ टब आदि का आनंद लेने हेतु भारी मात्रा में पेयजल को नष्ट करते हैं, वहीं दूसरी ओर इसी समाज का एक वृहद् भाग स्वच्छ पेयजल की अनुपलब्धता की मार झेल रहा है।

प्रकृति ने तो सभी जीवों के लिए अन्न, जल एवं स्वच्छ वातावरण प्रचुर मात्रा में उपलब्ध कराया। परंतु मनुष्य ने स्वयं की स्वार्थ सिद्धि हेतु न केवल प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित रूप से दोहन किया अपितु उन्हें दूषित करने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी। फलस्वरूप, वही स्वच्छ प्राकृतिक सम्पदाएं जो कभी जीवनदायिनी थीं आज जीवन नाशक के रूप में प्रतीत हो रही हैं चाहे वह अन्न हो जल हो या वायु हो।

भारतीय साहित्य, वेदों एवं उपनिषदों में जल के महत्व, जल की गुणवत्ता एवं संरक्षण की बात बारम्बार की गई है। यजुर्वेद में कहा गया है–

"मायो मौष घीहि ऊं सीर्घाम्नोः घाम्नो राजस्तो वरूण नो मुंच।" – यजुर्वेद 6/22

अर्थात् हे राजन, आप अपने राज्य के किसी भी स्थान में जल एवं वनस्पतियों को नुकसान न पहुचाएं तथा ऐसा उद्यम करें जिससे सभी जीवों को जल एवं वनस्पतियां सतत रूप से प्राप्त होती रहें।

आयुर्वेद के अतिरिक्त ऋग्वेद एवं अथर्ववेद में भी जल के औषधीय गुणों की चर्चा मिलती है। ऋग्वेद का नदी सूक्त नदियों के संरक्षण एवं संवर्धन की कामना का संदेश देते हैं। छान्दोग्य उपनिषद में कहा गया है– जल ही जीवन का मूल है, बिना जल के जीवन की कल्पना नहीं हो सकती।

प्राचीन समय में जल को तालाब एवं झीलों में इकट्ठा किया जाता था। जल की उपलब्धता के लिये कुएँ खोदे जाते थे। यहाँ तक कि वर्षाजल संग्रहण के लिये खेतों में छोटे बाँध बनाने की चर्चा भी है। जल संग्रहण के लिये सहोदक सेतु एवं अहारणोदक सेतु बनाने का भी जिक्र है अर्थात बाँध बनाने का जल संरक्षण कार्यों में नए वास स्थानों पर विशेष रूप से जनता की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने की बात की गई है। उसमें जलस्रोतों पर कर लगाने एवं जिन स्थितियों में कर माफी हो सकती है इसका भी जिक्र है। प्राचीन साहित्य में जल की महत्ता को ध्यान में रखते हुए उसे देवता का दर्जा मिला है तथा साथ ही उसके स्रोत संरक्षण के तरीकों एवं उसके शुद्धीकरण की भी चर्चा है।

*कनिष्ठ अभियंता, नई दिल्ली

भारत में जल संरक्षण की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पारंपरिक मूल्यवान परंपरा रही है। देश के विभिन्न हिस्सों में, वहाँ की जलवायु के उपयुक्त, अलग–अलग प्रकार के पारंपरिक तरीकों को अपनाया गया है। भारत में निर्मित विभिन्न क्षेत्रीय पारंपरिक जल संरक्षण संरचनाओं की सूची निम्न प्रकार है–

जैव भौ. क्षेत्र	राज्य / क्षेत्र	संरचना	व्याख्या
परा – हिमालय	लद्दाख	जिंग	बर्फ से जल इकट्ठा करने का टैंक
पश्चिमी हिमालय	जम्मू, हिमाचल,	कुल	पर्वतीय क्षेत्रों में जल के नाले
	उत्तरांचल	नौला	छोटे तालाब
	हिमाचल प्रदेश	कुह्ल	प्राकृतिक धाराओं से सिंचाई का बाँध
	हिमाचल प्रदेश	खत्रि	पत्थरों को कुरेद कर बनाए गए टैंक
पूर्वी हिमालय	अरुणाचल प्रदेश	अपतानी	सीढ़ीनुमा जलसंग्रहण क्षेत्र जहां पानी के आने और निकलने के रास्ते होते हैं।
उत्तर पूर्वी हिमालय	नागालैंड	आबो	रन ऑफ (बहते पानी का संग्रहण)
	नागालैंड	कियो– ओ – निही	नदियों से नहर
	मेघालय	बाँस बूँद सिंचाई	बाँस की नलियों के द्वारा धाराओं से जल लाकर ड्रिप इरिगेशन
ब्रह्मपुत्र घाटी	असम	डोंग	तालाब
	प. बंगाल	डूंग / झंपोस	धान के खेतों एवं छोटे सिंचाई नहर धारा को जोड़ने वाले नाले
गंगा सिंधु मैदान	द. बिहार	आहर–पइन	कैचमेन्ट बेसिन में बाँध एवं नाले / नहरें
	प. बंगाल		जलप्लावन (इनुनडेरान) नहरें
	दिल्ली–आसपास	दिघी	छोटे चौकोर या गोल जलाशय, जिन्हें नदी से भरा जाता था।
	दिल्ली–आसपास	बावली	सीढ़ीदार कुएँ
थार	प. राजस्थान	कुण्डा / कुण्डी	जमीन के अंदर संचयन
	प. राजस्थान	कुई / छेरी	टैंकों के पास गहरे पिट
	राजस्थान	बावरी / बेर	सामाजिक कुएँ
	राजस्थान / गुजरात	झालर	टैंक
	जोधपुर	नदी	गाँव के तालाब
	बीकानेर	टंका	जमीन के अंदर टैंक
	जैसलमेर	खादिन	निचले पहाड़ी ढलानों पर बाँध
	गुजरात / राजस्थान	ताव / बावरी	सीढ़ीनुमा कुएँ
		बावली / बावड़ी	
	कच्छ	विरदास	कम गहरे कुएँ
	गुजरात / राजस्थान	पार	जल संग्रह क्षेत्र, जिसे कुएँ के द्वारा उपयोग में लाया जाता है।
मध्यवर्ती भूमि	उच्च बुंदेलखण्ड	ताबाल / बंधिस	जलाशय
	मेवाड	साझा कुआँ	खुले कुएँ
	अलवर	जोहड़	मिट्टी के चेक डैम
	मेवाड़	नाडा / बाँध	पत्थर के चेक डैम
	झाबुआ	पत	नदियों के बीच में डॉइवर्जन बाँध
	राजस्थान	रापत	वर्षा जल संयत्र टैंक जैसी संरचना
	राजस्थान	चन्देला टैंक	टैंक
पूर्वी ऊँची जमीन	उड़ीसा	फटा / मुंड	पानी के रास्ते में मिट्टी के बाँध

जैव भौ. क्षेत्र	राज्य/क्षेत्र	संरचना	व्याख्या
दक्कन का पठार	चितूर, डप्पा	चेरूबु	वर्षाजल संग्रहण जलाशय
	महाराष्ट्र	कोहली	टैंक
	उ. प. महाराष्ट्र	भंडार	चेक डैम
	उ. प. महाराष्ट्र	फड़ चेक	डैम एवं नहरें
	रामटेक	रामटेक	भूगर्भीय जलस्रोत एवं सतही जल स्रोतों का नेटवर्क
पश्चिमी घाट	कासारगोड	सुरन्गम	क्षैतिज कुएँ
पूर्वी घाट	कासारगोड	कोराम्बु	घास एवं अन्य पौधों तथा कीचड़ से बने तात्कालिक बाँध
पूर्वी तटीय मैदान	तमिलनाडु	घेरो	टैंक
	तमिलनाडु	उरानी	तालाब

प्राचीन जल संरक्षण एवं प्रबंधन की तकनीकें

खुले स्थानों में वर्षाजल संग्रहण, नदी या अन्य धाराओं एवं उनके रन ऑफ से जल संग्रहण तथा बाढ़ के पानी का संग्रहण आदि भारत के विभिन्न क्षेत्रों में उस स्थान की विशेषताओं के अनुरूप जल संरक्षण एवं प्रबन्धन की विकसित की गई तकनीकें थीं। इसके अतिरिक्त–

अ. पहाड़ी एवं ढ़लान वाले क्षेत्रों में जहाँ बहुत सारी धारायें उपलब्ध थीं वहाँ से एवं नदियों में से जल को नहरों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में पहुँचाया गया।

ब. शुष्क एवं अर्ध शुष्क क्षेत्रों में नहरों का इस्तेमाल कर मौसमी नदियों एवं धाराओं के जल को एक संग्रहण टैंक तक पहुँचाया जाता और साथ ही वहाँ वर्षाजल संग्रहण की व्यवस्था भी की गई थी।

स. बाढ़ वाले क्षेत्रों में विभिन्न संरचनाएँ विकसित की गई जिनके द्वारा बाढ़ के पानी को इकट्ठा किया जाता था।

द. समुद्री किनारों पर जहाँ नदियों एवं अन्य मीठे पानी के स्रोतों में खारा पानी मिलने की संभावना बहुत होती थी, वहाँ खारे पानी को मीठे पानी तक न पहुँचने देने की व्यवस्थाएँ की गई थी।

प. जहाँ भूमिगत जलस्रोत उपलब्ध थे वहाँ कुएँ एवं अन्य व्यवस्थाएँ की गई थी, ताकि जल की व्यवस्था की जा सके।

मौजूदा महत्त्वपूर्ण पारम्परिक संरचनाएँ

प्राचीन काल की निर्मित जल संरचनाओं में से महत्त्वपूर्ण मौजूदा पारम्परिक संरचनाएँ, जो आज भी जीवोपयोगी हैं, के विवरण नीचे प्रस्तुत किए गए हैं–

1. तालाब/बन्धीस :

तालाब, एक प्रकार के जलाशय हैं। ये प्राकृतिक या कृत्रिम हो सकते हैं। प्राकृतिक तालाब जिसे कई क्षेत्रों में परिवारियाँ कहा जाता है, का अच्छा उदाहरण बुन्देलखण्ड के टीकमगढ़ के तालाब हैं। जबकि कृत्रिम जलाशय के उदाहरण उदयपुर की झीलें हैं। जिन जलाशयों का क्षेत्रफल पाँच बीघे से कम होता है उन्हें तमाई कहते हैं। मध्यम आकार के जलाशयों को बन्धी और तालाब कहा जाता है। बड़े जलाशयों को झील, सागर या समन्दर कहा जाता है। गर्मी में जब पोखरियों का पानी सूख जाता है तब उसमें खेती भी हो सकती है। कई स्थानों पर इनके अंदर भी कुएँ खोदे जाते थे ताकि भूमिगत जलाशयों को रिचार्ज किया जा सकता है।

2. साझा कुआँ :

ये सामाजिक कुएँ हैं, जिनको मुख्यतः पीने के पानी के स्रोत के रूप में उपयोग में लाया जाता था। इनमें से अधिकांशः काफी पुराने हैं और कई बंजारों द्वारा बनाए गये हैं। इनमें पानी काफी लम्बे समय तक बना रहता है, क्योंकि वाष्पीकरण की दर बहुत कम होती है।

3. जोहड़ :

कर्नाटक में मदकस, ओडिशा में पेमघरा और राजस्थान में जोहड़ नामक इन पानी के गड्ढों को सोखने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला सबसे पुराना सिस्टम है जो भूजल के संरक्षण और पुनर्भरण के लिए इस्तेमाल किया जाता है। जोहड़ एक प्रकार के छोटे चेक डैम होते हैं जिनका उपयोग वर्षा जल को इकट्ठा करने और भूजल की स्थिति को और बेहतर करने का काम किया जाता था। जोहड़ में मानसून का पानी इकट्ठा होता है, जो धीरे–धीरे भूजल को रिचार्ज करने और मिट्टी की नमी बनाए रखने के लिए रिसता है। कभी–कभी, कई जोहड़ों को एक नदी या धारा में एक एकल आउटलेट के साथ गुलेली या गहरे चैनलों के साथ जोड़ा जाता है ताकि संरचनात्मक क्षति को रोका जा सके।

तीन तरफ प्राकृतिक रूप से उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्र में निर्मित, एक भंडारण क्षेत्र बनाने के लिए मिट्टी की खुदाई की जाती है और पानी को रखने के लिए चौथी तरफ एक दीवार बनाई जाती है। इस लागत–कुशल और सरल संरचना को खरपतवार एवं कचरे की सफाई और सफाई के लिए वार्षिक रखरखाव की आवश्यकता होती है। भारत के कई हिस्सों में खेतों में सिंचाई करने के लिए जोहड़ों के पानी का अभी भी व्यापक रूप से किसानों द्वारा उपयोग किया जाता है। आज पुराने जोहड़ों के पुनरुद्धार की जरूरत है, जिनमें से कई खरपतवार पौधों के बढ़ने और कचरे को डंप करने के कारण जर्जर हो गए हैं।

4. कट्टा :

कट्टा एक अस्थायी संरचना है जो स्थानीय रूप से उपलब्ध मिट्टी और ढीले पत्थरों को बांधकर बनाई जाती है। छोटी नदियों और नदियों के पार निर्मित, यह पत्थर का बांध पानी के प्रवाह को धीमा कर देता है, और बारिश के महीनों के दौरान जल की बड़ी मात्रा (इसकी ऊंचाई के आधार पर) को संग्रहीत करता है। एकत्रित पानी धीरे–धीरे जमीन में रिसता है और आस–पास के कुओं का जल स्तर बढ़ाता है। तटीय क्षेत्रों में, वे समुद्र में ताजे पानी के प्रवाह को कम करते हैं। यह एक लागत प्रभावी और सरल विधि है, जिसका ग्रामीण क्षेत्रों में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। पत्थर के बंडों की श्रृंखला एक के पीछे एक बांध बनाने से कुछ गाँवों में आधुनिक कंक्रीट के बाँधों की तुलना में अधिक प्रभावी साबित हुई है, क्योंकि इन स्थानीय संरचनाओं को आसानी से किसानों द्वारा खुद ही मरम्मत किया जा सकता है।

5. बावड़ी/बेर :

ये सीढ़ीदार चरण–कुएं प्राचीन काल से निर्मित उच्च पुरातात्विक महत्व की भव्य संरचनाएं हैं, जो मुख्य रूप से राजाओं और रानियों के सम्मान में आम तौर पर सुंदर मेहराब, रूपांकनों और कभी–कभी कमरों के साथ चौकोर आकार के स्टेप–वेल होते हैं। बुनियादी जरूरतों के लिए पानी के भंडारण के लिए इस्तेमाल होते हैं। गुजरात, राजस्थान और कर्नाटक में इन संरचनाओं की अधिकतम संख्या है, जो दुनिया भर से पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। रिहायशी इलाकों से दूर, इन बावड़ियों में पानी की गुणवत्ता अच्छी मानी जाती है।

पैसे के बड़े निवेश और कई कुशल मजदूरों के साथ निर्मित, ये शानदार संरचनाएं आज समाज द्वारा खारिज कर दी गई हैं। इन संरचनाओं में से कई का अतिक्रमण किया गया है और केवल डंपिंग साइटों के रूप में प्रयोग किया गया है। राजस्थान में उनमें से कुछ के नवीनीकरण ने उनकी विशाल जल भंडारण क्षमता को बहाल किया है और पानी खींचने के लिए बिजली के पंपों के उपयोग के साथ यह शुष्क अवधि के दौरान उपयोगी साबित हुआ है।

6. जल मंदिर सीढ़ियाँ या सीढ़ीदार कुएँ :

यह संरचना केवल भारत में पाई जाती है। यह भारत के शुष्क क्षेत्रों में काफी लोकप्रिय रहा है। इसका

उपयोग वर्षाजल संग्रहण एवं पीने के पानी के लगातार उपलब्धता के लिये किया जाता है। इस प्रकार के कुएँ बनाने का विचार सूखे की समस्या के कारण आया।

इनके विभिन्न क्षेत्रों में उनके नाम अलग–अलग हैं जैसे काव, वावड़ी, बावरी, बादली एवं बावड़ी। उदाहरण स्वरूप अहमदाबाद के पास अडालज बाव हैं जिसमें 6 मंजिलें हैं। यह एक मंदिर है जो एक कुएँ पर जाकर समाप्त होता है। इनकी मंदिरनुमा संरचना एवं जल उपलब्धता के लिये महत्ता को ध्यान में रखते हुए इन्हें जलमंदिर भी कहा जाता है।

7. कुण्ड :

सामान्य तौर पर कुण्ड का अर्थ भूगर्भीय टैंक होते हैं। जिनका विकास सूखे की समस्या के समाधान के लिये किया गया था। धार्मिक स्थानों पर वहाँ के कुण्ड पवित्र माने जाते हैं और उनमें प्रदूषण फैलाने की मनाही होती है। जैसे गौरी कुण्ड, सीता कुण्ड, ब्रह्म कुण्ड इत्यादि। कई बार ऐसे कुण्ड नदियों के किनारे भी स्थापित किये गए हैं। प्राचीन काल में भारत में कुण्ड जल उपलब्धता के एक प्रमुख स्रोत थे।

8. टंका :

ये एक छोटा टैंक होता है जिसमें पानी को इकट्ठा किया जाता है। यह जमीन के अंदर होता है और इसकी दीवारों पर चूना लगाया जाता है। इसमें सामान्य तौर पर वर्षाजल इकट्ठा किया जाता है। हमारे पूर्वजों के पास विचार था कि हर परिवार में एक टंका, गाँव में मंदिर एवं चारागाह होना चाहिये। यह विचार सतत् समावेशी विकास को निरूपित करता है। बड़े टैंक पूरे गाँव की आवश्यकता को पूरा करते थे। इसके अतिरिक्त बड़े टैंकों का उपयोग बाढ़ को रोकने, मृदा अपरदन रोकने से होने वाले वेस्टेज को रोकने में एवं भूगर्भीय जलस्रोतों को रिचार्ज करने के लिये किया जाता था। इनका प्रबंध किसी शक्ति या पूरे गाँव के जिम्मे होता है।

टैंकों को इरिस भी कहते हैं। इरिस भारत में जल प्रबन्धन के लिये किये गये प्राचीनतम संरचनाओं में एक हैं। दक्षिण भारत में टैंक मंदिर स्थापत्य से सीधे तौर पर जुड़े हैं साथ ही टैंकों का निर्माण सिंचाई सुविधा के लिये भी किया गया था। चोल राजाओं ने वर्षाजल संरक्षण के लिये बहुत से टैंकों का निर्माण कराया था। प्राचीन काल के सभी मंदिरों में टैंक की व्यवस्थाओं को जो ना केवल आगंतुकों को जल उपलब्ध कराते रहे हैं बल्कि भूजल स्तर को भी बनाए रखने के लिये उपयोग में लाया जाता है।

9. झालर :

झालर कृत्रिम टैंक है जिनका उपयोग धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों में होता है लेकिन इसके जल का उपयोग पीने के लिये नहीं करते हैं। अक्सर ये आयताकार होते हैं। यह आस–पास की धाराओं एवं भूगर्भीय स्रोतों की सहायता से जलभरण किए जाने वाली सतही जल संरचना है।

10. सैंड बोर :

कर्नाटक में दशकों से रेत की बोर तकनीक का उपयोग किया जा रहा है। एक मात्र दोष यह है कि यह केवल तटीय क्षेत्रों में या रेतीले क्षेत्रों में संभाव्य है। यह भूजल को प्रभावित किए बिना खेत की सिंचाई के लिए एक सुरक्षित विकल्प प्रदान करता है। यह तकनीक रेत के कणों द्वारा पानी को निहित रखने की अवधारणा का उपयोग करता है। रेत के कण नमक की मात्रा को नीचे की ओर बनाए रखते हुए शुद्ध पानी को बाहर निकालकर उत्तम जल शोधक के रूप में कार्य करते हैं। माना जाता है कि सफेद बालू पर्याप्त मात्रा में जल शोधन कर पीने योग्य पानी प्रदान कर सकती है। नदियों के किनारे जमा रेत (15–30 फीट ऊंची) एक मैनुअल मिट्टी कटर का उपयोग करके खोदी जाती है। आवरण पाइप को फिल्टर के रूप में कार्य करने के लिए डाला जाता है और मीठे पानी को बाहर निकालने के लिए एक इलेक्ट्रिक या डीजल मोटर का उपयोग किया जाता है। रेत अच्छी

गुणवत्ता वाली और साफ होती है तो कम रखरखाव की आवश्यकता होती है।

11. बाँस की ड्रिप सिंचाई :

उत्तर पूर्वी राज्यों की जनजातियों द्वारा खोजी गयी यह तकनीक शुष्क मौसम के दौरान पानी का अल्पतम उपयोग करती है। यह विधि पहाड़ी क्षेत्रों में उपयोगी है जहां तीक्ष्ण ढाल और पथरीले इलाकों के कारण जमीनी चैनलों का निर्माण संभव नहीं है। इस व्यवस्था से खेतों में सिंचाई के लिए झरने का पानी लिया जाता है। प्रवाह को नियंत्रित करने के लिए विभिन्न व्यास के बांस के द्वारा बनाए गए चैनलों का एक नेटवर्क गुरुत्वाकर्षण द्वारा पानी को नीचे की ओर प्रवाहित होने में मदद करता है। एक कुशल प्रणाली कृषि क्षेत्रों को 20–80 बूंद प्रति मिनट की दर से जल पहुंचाने में प्रति कि.मी. प्रवाह में लगभग 20 लीटर पानी की बचत करती है।

बांस और फाइबर जैसी निर्माण सामग्री स्थानीय रूप से उपलब्ध होती है। यह लागत प्रभावी और कम रख. रखाव वाली है। केवल 1–2 मजदूर, 15 दिनों में एक हेक्टेयर भूमि की सिंचाई के लिए सामान्य उपकरणों का उपयोग कर बांस के पाइप का एक नेटवर्क बना सकते हैं। यह प्रणाली लगभग तीन साल तक चलती है जिसके बाद लकड़ी सड़ जाती है और पोषक तत्वों से भरपूर मिट्टी में परिवर्तित हो जाती है। खासी और जयंतिया जनजातियों के किसान काली मिर्च, सुपारी आदि के खेतों की सिंचाई के लिए इस अनूठी तकनीक का सफलतापूर्वक उपयोग करते हैं। इसे शहरी क्षेत्रों में भी आजमाया गया है, जहाँ खेतों और बगीचों को सींचने के लिए बांस के चैनलों के माध्यम से छत के टैंकों का पानी प्रयोग किया जाता है। प्रणाली का मुख्य लाभ यह है कि यह प्लास्टिक की तरह प्रदूषण नहीं करती और निर्माण के लिए बहुत ही किफायती और सरल विधि है।

12. कुहल :

कुहल विशेषकर हिमाचल प्रदेश में बनाए जाते हैं। ये एक प्रकार की नहरें होती हैं जिनका उपयोग ग्लेशियर के पिघलने से पानी को गाँवों तक पहुँचाने के लिये किया जाता है। कुहल जम्मू में भी पाए जाते हैं।

13. गड़ :

असम में राजाओं ने वर्षाजल संरक्षण के लिये तालाब और कुण्ड बनाए थे। कई स्थानों पर गड़ का उपयोग नदी के पानी को चैनलाइज करने के लिये किया गया था। गड़ बड़े नाले की तरह होते हैं। गड़ों का उपयोग सिंचाई के लिये किया जाता था। साथ ही बाढ़ की विभीषिका रोकने के लिये भी होता था।

युगों से, भारत के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों ने विभिन्न वर्षा और भूमि स्थलाकृति के कारण या तो अतिरिक्त या दुर्लभ जल का अनुभव किया है। फिर भी, वे स्थानीय जल संचयन विधियों का उपयोग करके अपने कृषि क्षेत्रों को सिंचित करने में कामयाब रहे हैं। उनके पारंपरिक तरीके, हालांकि कम लोकप्रिय हैं, अभी भी उपयोग और कुशल हैं। उपरोक्त उदाहरण हमें यह बताते हैं कि प्राचीन भारत में जल संरक्षण एवं जल. स्रोतों का प्रबंधन बहुत विकसित था और इन सबका उपयोग वर्तमान काल में तेजी से बदलती जलवायु एवं सूखे की समस्या के समाधान के लिये किया जा सकता है। पारंपरिक तरीकों से पानी का प्रबंधन भूल. कर नवीनतम तकनीक या विचार को लागू करने पर बल देने के बजाय उन्हें ज्ञान के साथ समृद्ध किया जाना चाहिए। जल संसाधनों को विकसित करने के मामले में प्राचीन काल की निर्मित जल संरचनाओं का परित्याग किए बिना हमें पारंपरिक तरीकों से जल प्रबंधन विधियों को नवीनतम तकनीक ज्ञान के साथ समृद्ध करना होगा। तभी इक्कीसवीं सदी की जल संसाधन चुनौतियों से निपटना संभव होगा।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अनुवाद की भूमिका

*डॉ अनिल कुमार द्विवेदी

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भूमंडलीकरण राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रक्रिया के साथ एक ऐसी आवश्यक व्यवस्था बन गया है जिसनें सात समुंद्र पार की दूरियों को लगभग समाप्त सा कर दिया है। इससे भौगोलिक संकुचन हुआ है। यह भूमंडलीकरण आर्थिक उदारीकरण एवं बढ़ते हुए औद्योगीकरण के कारण अपने इस विकराल रूप में हमारे समक्ष है। भूमंडलीकरण के इस दौर में सामाजिक, आर्थिक सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं समस्त समाज शास्त्रीय पहलुओं पर विस्तृत चर्चा भी हुई है। इन पहलुओं के प्रसार एवं प्रचार तथा उनके अनुप्रायोगिक पक्षों को जन मानस ने विश्व के एक परिवार के एक सदस्य के रूप में बिना किसी भेद–भाव के स्वीकार कर लिया है परन्तु जितनी कोशिशें एवं भगीरथ प्रयास इन क्षेत्रों में किए गए और अभी भी किए जा रहे हैं उतना भाषा के क्षेत्र में अभी तक नहीं किया गया अर्थात भाषिक भूमंडलीकरण पर पूर्व में कुछ नहीं किया गया और इस प्रसार से भाषिक भूमंडलीकरण का पक्ष अछूता ही रहा है। परंतु भाषा विज्ञानियों ने अब भूमंडलीकरण के इस दौर में एक नए भाषिक आयाम अर्थात भाषिक भूमंडलीकरण पर विचार विमर्श करना आरंभ कर दिया है।

वर्तमान भाषिक भूमंडलीकरण की अवधारणा की शाब्दिक उत्पत्ति भाषा और भूमंडलीकरण के योग से हुई है। जिसमें यह पाया गया है कि भूमंडलीकरण के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और प्रौद्योगिकीय आयामों पर भाषा संबंधी कई समस्याएं उत्पन्न हुई हैं। वस्तुतः भूमंडलीकरण की इस प्रक्रिया में भाषाओं का अधिक महत्व होता है। बिना भाषिक एकरूपता के किसी भी स्तर पर भूमंडलीकरण संभव नहीं हो पाता। इसीलिए भाषिक भूमंडलीकरण से अभिप्राय आज के विश्व समाज में भाषा की विभिन्न भूमिकाओं का विस्तार होता है जो एक सशक्त विश्व बाजार की स्थापना करने में बहुत महत्वपूर्ण कारक तत्व के रूप में बनकर उभरा है। भाषिक भूमंडलीकरण की यह स्थिति वाणिज्यिक और अंतर्राष्ट्रीयकरण के माध्यम से सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लेती है। वर्तमान में बहुराष्ट्रीय कंपनियां इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। भूमंडलीकरण द्वारा विश्वग्राम की जो परिकल्पना की गई है उस में भाषाओं की भी विशिष्ट भूमिका होती है। प्रचलन में अन्य भाषाओं में से एक भाषा इतनी सशक्त हो जाती है कि वह अन्य भाषाओं को पीछे छोड़कर आगे बढ़ जाती है। ऐसी भाषा के विभिन्न आयामों का अध्ययन ही भाषिक भूमंडलीकरण की श्रेणी में आता है।

वस्तुतः वर्तमान भूमंडलीकरण के युग में अंग्रेजी भाषा का वर्चस्व निरंतर बना हुआ है फिर भी इसके प्रयोक्ताओं द्वारा लगभग 7 हजार बहुसंख्यक एवं अल्पसंख्यक भाषाओं का प्रयोग भी हो रहा है। यह बात अलग है कि वास्तविक भूमंडलीकरण के इस दौर में कुछ स्थानीय भाषाओं ने अपना दम भी तोड़ा है। बहुसंख्यक भाषाओं का अपना–अपना क्षेत्र होता है और उनका प्रयोग भी विभिन्न कार्य क्षेत्रों एवं सामाजिक संदर्भो में हो रहा है यह प्रयोग वैश्विक भाषा एवं सामाजिक संदर्भो में हो रहा है जो वैश्विक भाषा को भी प्रभावित कर सकती है। इस प्रकार हिन्दी भाषा भी भूमंडलीकरण और बाजार में अपना शीर्ष स्थान बना रही है। हिन्दी ने अब बहुसंख्यक भाषा के रूप में अंग्रेजी चीनी भाषा के साथ वैश्विक स्तर पर आगे आने की ओर विश्व बाजार की भाषा बनने की होड़ लगा दी है। इस प्रक्रिया में अंग्रेजी का चयन बहुत पहले से ही हो चुका है और इनका मानकीकरण एवं आधुनिकीकरण भी होता रहा है। इस संदर्भ में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ब्रिटिश इंगलिस और अमेरिकी इंगलिस में एक विवाद छिड़ गया है कि इन दोनों में कौन सा प्रयुक्ति की दृष्टि से मानक रूप है। लेकिन दूसरी ओर भारत में इंडियन इंग्लिश

*हिन्दी अनुवादक, नई दिल्ली

भी अपने पैर पसार चुकी है जिसका स्वरूप भारतीय संस्कृति, परंपरा, आम बोल–चाल एवं व्यवहार में आने वाले अनेकों हिन्दी शब्दों से भरा पड़ा है।

हिन्दी के संदर्भ में यदि देखा जाए तो भारतीय संदर्भ में हिन्दी का चयन राजभाषा के रूप में पूर्व में ही हो चुका है। इसी के विस्तार क्रम में अब इसका प्रयोग अनेक कार्य क्षेत्रों में हो रहा है। समय–समय पर इसका मानकीकरण और आधुनिकीकरण भी होता रहता है। अब हिन्दी भी भूमंडलीकरण और आधुनिकीकरण के अनुरूप अपना स्थान बनाने में सक्षम है। सूचना प्रौद्योगिकी के संदर्भ में जहां अंग्रेजी का वर्चस्व दिखाई देता है वहीं दूसरी ओर हिन्दी ने भी अपना स्थान बना लिया है। अब यह प्रौद्योगिकी सूचना प्रौद्योगिकी और इलेक्ट्रानिकी के साथ–साथ अपने कदम आगे बढ़ा रही है।

इस दृष्टि से भाषा का महत्व और भी बढ़ जाता है। एक ओर जहां छोटी–छोटी भाषाएं लुप्त होने के कगार पर हैं, वहीं दूसरी ओर वही भाषा आगे बढ़ सकती है जिसे बोलने वाले सर्वाधिक हों और वह अपने स्वभाव से सर्वग्राही हो। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अंग्रेजी और चीनी भाषा के साथ–साथ हिन्दी भी एक ऐसी भाषा है जो जन–जन की अपेक्षाओं पर खरी उतरते हुए व्यावसायिक एवं व्यावहारिक दृष्टि से आगे बढ़ रही है। यह विशेषरूप से उल्लेखनीय है कि वर्तमान हिन्दी की इस शक्ति को समझने में बाजारवादी विशेषज्ञों को कोई कठिनाई नहीं हुई। उनके निशाने पर हर देश का उपभोक्ता ही रहता है। इस समाज से जुड़ने के लिए अनुवाद जैसा कारगर अस्त्र आज कहीं नहीं मिलता है। इसलिए भाषिक भूमंडलीकरण में अनुवाद का विवेचन करना आवश्यक हो जाता है। जो बाजार की अपेक्षाओं के अनुरूप महत्वपूर्ण और प्रभावकारी भूमिका निभा सकता है।

हिन्दी भाषा और साहित्य ना केवल संस्कृत से समृद्ध हुआ बल्कि अंग्रेजी कृतियों के अनुवाद से भी समृद्ध हुआ है। नवजागरण कालीन साहित्यकार इस कटु सत्य से अनभिज्ञ नहीं थे। बल्कि महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इसका समर्थन करते हुए कहा है कि जैसे अंग्रेजों ने ग्रीक और लैटिन भाषा की सहायता से अंग्रेजी की उन्नति की और उन भाषाओं के उत्तमोत्तम ग्रंथों का अनुवाद करके अपने साहित्य की शोभा बढ़ाई। अतः हमको चाहिए कि उस भाषा के अच्छे–अच्छे ग्रंथों का अनुवाद करके हिन्दी साहित्य की दशा को सुधारें। अंग्रेजी साहित्य के संपर्क में आने पर भारतीय साहित्यकारों ने अंग्रेजी नाटकों का अनुवाद आरंभ कर दिया। इसी क्रम में आगा खां ने शेक्सपीयर के 'मर्चेंट ऑफ वेनिस' का अनुवाद 'दिलफरोश' नाम से किया। उमराव अली लखनवी ने 'हैमलेट' को 'जहांगीर' नाम से तथा अहमद हुसैन खान ने 'ऑथेलो' को 'जाकर' नाम से अनूदित किया।

बाद में आधुनिक भारत की भाषाओं के परस्पर अनुवाद में काफी तेजी आई है, विशेषकर, बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारतीय भाषाओं के बीच जितना अनुवाद कार्य हुआ है, उतना उससे पहले के सैकड़ों सालों में भी नहीं हुआ। पूर्वांचल में संस्कृत साहित्य का प्रभाव बंगला, उड़िया, असमिया आदि पर अधिक प्रभाव पड़ा और इन भाषाओं में सर्वाधिक अनुवाद बंगला भाषा से हुए। उत्तर–मध्य अंचल में हिन्दी का प्रभाव सर्वाधिक रहा। दक्षिण में तमिल–मलयालम के बीच अधिक अनुवाद हुए और दूसरी ओर कन्नड़–तेलुगु के बीच भी अधिक अनुवाद हुए। पश्चिमी क्षेत्र में मराठी और गुजराती के बीच जो अनुवाद हुआ, वह लगभग समान है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि भारतीय भाषाओं में सर्वाधिक अनुवाद हिन्दी में हुए।

इस प्रकार अंग्रेजी से हिन्दी और भारतीय भाषाओं के परस्पर अनुवाद से हिन्दी और भारतीय भाषाओं का विकास हुआ है। इस विकास से हिन्दी भाषिक भूमंडलीकरण का एक अंग बन जाता है, जो इसके प्रसार और अनुरक्षण में सहायक होगी। किंतु एक बहुत बड़ी चुनौती है, जो हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं को अंग्रेजी के मुकाबले खड़ा करने में सक्षम और समर्थ बनाने में सहायक होगी। हिन्दी का विकास तभी होगा जब इस का प्रयोग विभिन्न संदर्भों, प्रयोजनों, कार्य क्षेत्रों, स्थितियों में होगा और इसमें यदि सूचना प्रौद्योगिकी और कम्प्यूटर की सहायता ही अधिक सार्थक भूमिका निभाएगी। आज के भूमंडलीकरण के युग में हिन्दी की स्थिति में जो विकास हो रहा है

उसमें अनुवाद की विशिष्ट भूमिका है। इस संबंध में अनुवाद के सामने कई चुनौतियां और संभावनाएं मिलती हैं कि विश्व के इस विपुल साहित्य का अनुवाद कैसे किया जाए ताकि भारतीय भाषाओं के महत्व में वृद्धि हो सके और वे भाषिक भूमंडलीकरण की भाषा के रूप में अपना स्थान बना सकें।

पश्चिमी देशों में अनुवाद की परिकल्पना एवं संकल्पना बाइबिल के अनुवाद से आरंभ मानी जाती है। इस अनुवाद का लक्ष्य धार्मिक अधिक था, साहित्यिक रूप से कम था। रोम में ई.पू. तीसरी शताब्दी में विलियम ऐंद्रोनिकस ने होमर कृत 'ओडिसी' का एक पद्यात्मक और अनगढ़ अनुवाद लैटिन में किया जो पश्चिमी यूरोप में लैटिन के लोकभाषा बनने की आधारशिला बनी। यह मानव सभ्यता के सांस्कृतिक विकास में अनुवादक के योगदान का सर्वोत्तम प्रतीक है। मार्टिन लूथर द्वारा बाइबिल के अनुवाद से जर्मन भाषा को नवजीवन ही नहीं मिला बल्कि उसके परवर्ती अनुवादकों को जर्मन भाषा में सहज लेखन के लिए एक मानकीकृत अनूदित साहित्य मिल गया और यह एक सर्जनात्मक मान्यता के रूप में स्वीकृत हुई। इसी क्रम में 'श्लेगेल' ने 'शेक्सपीयर' के नाटकों का जर्मन में अनुवाद किया।

अमरीकी अनुवादक भी अनुवाद कला की बारीकियों और उसकी महत्ता के प्रति अत्यंत जागरूक हैं। उन्होंने अलग–अलग युगों में हुए अनुवादों का एक भव्य संग्रह प्रकाशित किया है, जो विश्व–साहित्य में एक विशिष्ट प्रयोग है। डब्ल्यू.एच. ऑडेन द्वारा संपादित 'द पोर्टेबल ग्रीक रीडर' इस प्रयोग की एक नवीनतम अभिव्यक्ति मानी जाती है। 'लिओ ताल्स्ताय' का रूसी उपन्यास 'वॉर एंड पीस' विश्व में काफी लोकप्रिय रहा है और इसके कई अनुवाद हुए। 'लियो ताल्स्ताय' की कहानियों के संकलन का अंग्रेजी अनुवाद 'दि डेथ आफ इवॉन इलिंच एंड अदर स्टोरीज' के नाम से कॉस्टेंस गार्नेर, हाजी मुराद और ऐलिमरे मॉड ने सन् 1915 में किया था, जिसका संपादित रूप 2004 में प्रकाशित हुआ। इनके अतिरिक्त जापानी हाइकू के महान कवि बाशो की 50 हाइकू कविताओं का अंग्रेजी अनुवाद 'डि कोर्मन' (1984) ने किया। राबर्ट हास (1994) ने जापानी के सुविख्यात हाइकू कवियों बाशो, बुसोन और इस्सा की विभिन्न हाइकू कविताओं का अंग्रेजी अनुवाद किया।

बीसवीं शताब्दी में पाश्चात्य अनुवाद साहित्य का अभूतपूर्व विकास हुआ है। साहित्य, दर्शन, विज्ञान, समाजशास्त्र आदि सभी विषयों में अनुवाद कार्य हो रहे हैं। आज के युग में अनूदित साहित्य बहुत ही बहुआयामी और व्यापक हो गया है। यूरोप, अमरीका, जापान, चीन, रूस आदि विभिन्न देशों के आचार्य अनुवादक अपने–अपने विश्वविद्यालयों में प्राचीन ग्रंथों की शोधपरक टिप्पणियां ही नहीं प्रस्तुत करते, बल्कि विश्व के विशाल साहित्य को अपनी–अपनी भाषाओं में विशेषकर अंग्रेजी, रूसी और जापानी में रूपांतरित कर रहे हैं। रूसी भाषा में भी अनेक कृतियों के अनुवाद हुए। प्रेमचंद के 'गोदन' और 'रंगभूमि', यशपाल के 'झूठा–सच' और 'दिव्या', अमृतलाल नागर के 'बूंद और समुद्र' तथा 'अमृत और विष', रागेय राघव के 'मुर्दों का टीला' और 'कब तक पुकारूं', फणीश्वरनाथ रेणू के 'मैला आंचल' आदि उपन्यास रूसी भाषा में अनूदित हुए।

भूमंडलीकरण के युग में अनुवाद की भूमिका में काफी विस्तार हो गया है। अब अनुवाद बाजार से भी जुड़ गया। विभिन्न बहुराष्ट्रीय कंपनियों को अनुवाद की आवश्यकता पड़ती रहती है, क्योंकि बाजार के निशाने पर हर देश का उपभोक्ता समाज है। कंपनियों का उद्देश्य मात्र उपभोक्ताओं को लुभाना है, उन्हें अपना उत्पाद उपभोक्ता तक पहुंचाना है। इसलिए उपभोक्ताओं की चेतना में गहरी पैठ बनाकर उनकी संवेदनाओं को स्पर्श करने के लिए विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध सामग्री के अनुवाद से ही संभव है। विश्व के समूचे विज्ञापनों को अनुवाद के सहारे बाजार में प्रसारित और प्रचारित किया जाता है। इसमें विज्ञापनों के अनुवाद में सृजनात्मक शक्ति की भी अधिक आवश्यकता है। इसी संदर्भ में राष्ट्रीय अनुवाद मिशन की स्थापना हुई है जिसमें अनेक विषयों के अनुवाद विश्व की अनेक भाषाओं में किया जा रहा है जो विश्व साहित्य को विशेषकर भारतीय साहित्य को जोड़ेगा। अतः इस चुनौती का सामना करने के लिए भूमंडलीकरण की मांग के अनुरूप अनुवाद को अधिक परिपक्व, आश्वस्त और प्रभावशाली होना होगा।

पृथ्वी और पर्यावरण की रक्षा

*श्री ललित कुमार स्यानियां एवं श्रीमती राधा

1. भाग्यशाली हैं हम जो धरती पर पैदा हुए

हमारी सुंदर धरती का जो रूप हम देख रहे हैं, वह पूरे ब्रह्मांड में शायद ही कहीं देखने को मिले। हमें अपने आप को भाग्यशाली मानना होगा कि हमारा जन्म इस ग्रह पर हुआ। सूर्य और चंद्रमा की पृथ्वी से दूरी, पृथ्वी पर पानी और वनस्पतियों की मौजूदगी, धरती का एक निश्चित समय में अपने कक्ष में सूर्य का चक्कर लगाना, इन सब संयोगों से ही हमारा जीवन संभव हुआ है। कल्पना करो कि पृथ्वी सूर्य के करीब होती तो आग का गोला होती और दूर होती तो बर्फ का पिंड। अपने कक्ष में नहीं घूमती तो ना पानी होता ना जीवन और ना दिन–रात ना मौसम होते। ना ही हजारों तरह की फसलें होतीं। लेकिन आज इंसान खुद धरती को मिटाने पर आमादा है। यही हाल रहा तो आने वाले समय में हमारा इस पृथ्वी पर रहना ही मुश्किल हो जाएगा। हमने तो अपना जीवन आराम से निकाल लिया है, लेकिन आने वाली पीढ़ी का कभी हमने सोचा है। हमें हमारी धरती को आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ और सुंदर रखना होगा, ताकि उन्हें भी स्वच्छ हवा, स्वच्छ आकाश और शुद्ध पानी मिल सके।

2. आत्महत्या की तैयारी में लगे हैं हम

आज के हालात में यह कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि इस धरती पर रहने वाले हम इंसान सामूहिक आत्महत्या के रास्ते पर चल पड़े हैं। बल्कि इससे भी भयानक यह बात है कि हम चार अरब वयस्क, तीन अरब बच्चों और निर्दोष युवाओं को भी मौत की तरफ घसीट कर ले जा रहे हैं, जो इस पाप में अभी तक भागीदार नहीं बने। तमाम भविष्यवाणियां यह दिखा रही हैं, खतरे की घंटियां हर तरफ से बज रही हैं और सभी को इस बात का अंदाजा है कि हमारे लालच और जुल्म के आगे धरती की सहनशक्ति खत्म हो गई है। हवा और पानी जहरीले हो रहे हैं। भूगर्भ के खजाने खाली हो रहे हैं। तापमान चढ़ रहा है। धरती के सुरक्षा कवच टूट रहे हैं। विशाल ग्लेशियर पिघल रहे हैं और समुद्र धरती को निगलने के लिए बढ़ रहा है। मौसम का चक्र गड़बड़ा रहा है। बाढ़ और सूखे के अचानक हमलों से हाहाकार मच रहा है। विडंबना देखिए कि हम दो–चार दिन दिल्ली के स्मॉग या केरल की बाढ़ की चर्चा करते हैं और फिर वापस अपनी नींद में लौट जाते हैं। महाविनाश के कदमों की गूंजती आहट को हम सुनने से इनकार कर देते हैं। पृथ्वी की लाखों प्रजातियों में अकेले हम ही हैं, जो खुद को इस तरह आत्महत्या के लिए तैयार कर सकते हैं। हमारी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं को देखिए। वहां हमारे लीडर अब भी इस बात पर बहस में खोए हैं कि धरती खतरे में है या नहीं, है तो क्या किया जाना चाहिए, कौन इसकी जिम्मेदारी उठाए और कैसे इस जिम्मेदारी से बचा जाए। बहुतों को लगता है कि यह सिर्फ हमारा वहम है और अगर हम कुछ देर आंखें बंद करके बैठे रहेंगे तो सब कुछ ठीक हो जाएगा। लेकिन आशंका इस बात की है कि शायद वह समय कभी ना आए। वापसी की कोई गुंजाइश ही न बचे और महाविनाश अपना रथ आगे बढ़ा दे। कोई नहीं जानता कि धरती के प्राकृतिक संतुलन का बिगड़ना कितनी बड़ी आपदा लाएगा। हो सकता है कि खुशकिस्मत और साधन संपन्न लोग खुद को बचा ले जाएं, जबकि एक बड़ी आबादी इसके गर्भ में समा जाए तो जो बचेंगे, वे क्या करेंगे, वे क्या सोचेंगे? क्या वे इस बात से तसल्ली करेंगे कि धरती का बोझ खत्म हो गया या वे मृत्यु के भय में जीने के लिए अभिशप्त रहेंगे, क्योंकि धरती फिर कभी उनकी मां नहीं बन सकेगी। अगर हम सबको इस सामूहिक आत्महत्या से बचना है, तो नींद से जागना होगा।

बचपन में हम अपने बुजुर्गों से सुनते थे कि एक दिन ये धरती खत्म हो जाएगी। पहले लोग पेड़–पौधे लगाते थे। आज हर कोई अपने काम में व्यस्त है। उसे दीन–दुनिया का कुछ नहीं पता है। हम कुदरत से खिलवाड़ कर रहे हैं। आए दिन कहीं तूफान तो कहीं बाढ़ आ जाती है। काफी जान–माल का नुकसान

*कनिष्ठ अभियंता एवं अवर श्रेणी लिपिक, नई दिल्ली

होता है। आज विकास के नाम पर पेड़ों की कटाई तो होती है, लेकिन उसके बदले में पौधे लगाना सिर्फ एक खानापूर्ति बनकर रह गई है। आज हमारी धरती सुरक्षित नहीं है। अगर ऐसा चलता रहा तो इस धरती और ब्रह्मांड का कोई भी प्राणी सुरक्षित नहीं होगा। यह बात बिल्कुल सच है कि हम लोग खुद ही अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहे है। इतना कुछ होने के बाद भी हम अपनी पृथ्वी की रक्षा के लिए सजग नहीं हो रहे हैं।

3. प्राकृतिक संसाधनों का अत्याधिक दोहन पर्यावरण के लिए खतरा

विकास के लिए जिंदा रहना जरूरी है और जिंदा रहने के लिए पर्यावरण जरूरी है, लेकिन किसी भी देश के अजेंडे में पर्यावरण प्राथमिक नहीं है। कोई इसके प्रति गंभीर नहीं है। प्राकृतिक संसाधनों का दोहन बड़े पैमाने पर सक्षम लोग कर रहे हैं। विज्ञान का प्रयोग मात्र कुछ लोगों को ज्यादा से ज्यादा आरामदायक जीवन देना रह गया है। वह भी उन लोगों के लिए उपलब्ध है, जो उसकी कीमत चुका सकते हैं। कुछ प्रतिशत लोगों के लिए पर्यावरण की बलि दी जा रही है। रोटी, कपड़ा और मकान किसी भी व्यक्ति के जीवन यापन के लिए आवश्यक हैं, लेकिन हम ज्यादा रोटी, ज्यादा कपड़ा और ज्यादा मकान की अंधी दौड़ में अंधाधुंध प्राकृतिक संसाधनों का दोहन किए जा रहे हैं। बिना इस पर विचार किए कि इसकी कीमत मानव सभ्यता का विनाश है। अगर हमने पर्यावरण को अपनी प्राथमिकता में जगह नहीं दी तो कुछ समय बाद इस पर विचार करने के लिए भी शायद हम जीवित ना रहें।

धरती के अलावा कोई और ऐसी दुनियां नहीं है, जहां मानव जाति शरण पा सके और फल फूल सके। जहां शिक्षा के साथ संस्कार और सामाजिक जागरूकता न हो, मानवीय संवेदना न हो, तो वह शिक्षा किस काम की। आज की शिक्षा केवल स्वार्थी नागरिक पैदा कर रही है। उन्हें धन कमाने से फुरसत ही नहीं है। उनके पास समाज, देश, पर्यावरण, प्रकृति, किसान, मजदूर, रोजगार, राष्ट्रहित जैसे मुद्दों से कोई लेना–देना नहीं है। जिसे देखो वही प्रकृति का दोहन करने में लगा है। प्रकृति के बेहिसाब दोहन के कारण वह समय–समय पर अपना विकराल रूप दिखा रही है। कहीं बाढ़ तो कही सूखा पड़ रहा है। लेकिन इसके बाद भी हम समझ नहीं रहे हैं। भविष्यवाणी की जा रही है कि 2050 तक समुद्र के किनारे बसे शहरों के अस्तित्व को खतरा पैदा हो जाएगा। प्रकृति के साथ खिलवाड़ धीरे–धीरे एक भयानक विनाश को आमंत्रण दे रहा है।

4. बढ़ते प्रदूषण के कारण कुछ पर्यावरणीय प्रभाव

(अ) अब महसूस नहीं होती पहले जैसी ठंड

हम मंगल ग्रह में जाने की तैयारी में हैं, लेकिन हमें अपनी धरती को लेकर भी इतनी ही मेहनत और फिक्र होनी चाहिए। धरती पर तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है। पहले अक्तूबर की शुरुआत में ही ठंड का अहसास हो जाता था, लेकिन अब पहले जैसी ठंड महसूस ही नहीं होती है। सर्दी का सीजन भी अब बहुत छोटा हो गया है। पर्यावरण को बचाने के लिए हम कई तरीके से योगदान दे सकते हैं। जैसे ज्यादा से ज्यादा पौधे लगाकर, प्लास्टिक और हानिकारक केमिकलों का कम से कम इस्तेमाल कर, नदियों और अपने आसपास साफ–सफाई रख हम पर्यावरण को बचाने के काम में अपनी भागीदारी दे सकते हैं।

(ब) आज साफ हवा में सांस लेने को हम तरस गए हैं

साफ हवा में सांस लेने का हक हर किसी को है, लेकिन बढ़ते प्रदूषण के चलते हम गैस चेंबर में सांस लेने को मजबूर हैं। यह सब हम लोगों की ही देन है। शहर में विकास ने रफ्तार जरूर पकड़ी है लेकिन पेड़, साफ हवा व पानी दूर होते चले गए हैं। पर्यावरण और पृथ्वी को बचाने के लिए आए दिन बहुत से सेमिनार आयोजित होते हैं। लेकिन यह कुछ लोगों तक ही सीमित रहते हैं। अगर हमें अपने पर्यावरण को बचाना है तो इसके लिए जनआंदोलन शुरू करना होगा। इसमें हर शख्स को भागीदार बनाना होगा। साथ ही कड़े कानून बनाने होंगे। आजकल लोग शादियों में उपहार के तौर पर पौधे भी देते हैं। यह एक अच्छी पहल है। जब भी कोई प्राकृतिक आपदा आती है, तभी

हमारी नींद खुलती है। अपनी धरती को बचाने के लिए क्या हम लोगों की कोई नैतिक जिम्मेदारी नहीं। क्या हम सब यह संकल्प नहीं ले सकते कि अपने आसपास के एक पेड़ की आजीवन देखभाल करेंगे। आज साफ हवा में सांस लेने को हम तरस गए हैं। क्योंकि विकास की अंधी दौड़ में खेती की जमीन और जंगल को हम इस कदर खत्म कर चुके हैं कि कंक्रीट के जंगल में सबका दम घुट रहा है। हम अपने हर काम के लिए वक्त निकालते हैं, तो अपने पर्यावरण को बचाने के लिए हम चंद मिनट क्यों नहीं दे सकते ?

(स) क्लाइमेट चेंज का खतरा

हमारी सेहत को क्लाइमेट चेंज के खतरों से आज की तारीख में पहले से कहीं ज्यादा नुकसान है। इसके बावजूद ज्यादातर देश इस खतरे से निपटने के लिए अपनी योजनाओं पर कारगर तरीके से अमल नहीं कर रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा क्लाइमेट चेंज पर आई ताजा रिपोर्ट में यह बात सामने आई है। इसके तहत वातावरण में खतरनाक गैसों के बढ़ने से दुनिया में सालाना 70 लाख से ज्यादा मौतें हो रही हैं। इस रिपोर्ट में WHO ने 101 देशों की योजनाओं का जायजा लिया। दिलचस्प बात यह है कि इन तमाम देशों ने क्लाइमेट चेंज से पैदा हुए चैलेंज से निपटने के लिए कई योजनाएं भी बनाई हैं। रिपोर्ट में शामिल करीब 50% देशों ने अपने यहां इस खतरे से निपटने के लिए बाकायदा रणनीतियों या योजनाओं का ऐलान किया हुआ है। लेकिन केवल 38% देश ऐसे हैं, जिनके पास इन योजनाओं पर थोड़ा–बहुत अमल करने लायक फंड है। उनमें भी केवल 10% देश ऐसे हैं, जिनके पास पर्याप्त फंड हैं और जो अपनी योजनाओं पर अमल भी कर रहे हैं।

5. आने वाली पीढ़ी के लिए सोचना होगा

प्रदूषण विश्व की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है। मौजूदा समय में जितने लोग युद्ध से नहीं मर रहे हैं, उससे ज्यादा लोग प्रदूषण से मर रहे हैं। आने वाले समय में यह समस्या और भी अधिक विकराल हो सकती है। पर्यावरण संरक्षण आज विश्व के सामने एक चुनौती है। हमें अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए पर्यावरण को स्वच्छ रखना होगा। भारत जैसे देश में चिपको, चिलका जैसे पर्यावरण आंदोलन हुए हैं, लेकिन इसके साथ–साथ ऐसे आंदोलन को और व्यापक करने की जरूरत है। आम लोगों को चाहिए कि वह अपनी लाइफ स्टाइल में बदलाव करें और ऐसी चीजों के प्रयोग से दूर रहें जो कार्बन उत्सर्जन और पर्यावरण प्रदूषण को बढ़ाते हैं। कड़े कदम उठाकर ही पर्यावरण को संरक्षित किया जा सकता है। हमें विकास और पर्यावरण के बीच में संतुलन बनाने की जरूरत है।

6. पर्यावरण संरक्षण में सभी की भागीदारी हो

जब भी हम प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की बात करते हैं तो देखते है कि कागजों पर कई सौ करोड़ रुपये खर्च किए जा चुके हैं, लेकिन इसके बाद भी उम्मीद के मुताबिक परिणाम नहीं मिलते। इसका प्रमुख कारण यह है कि पर्यावरण के प्रति नीति बनाने वाले और लागू करने वाले दोनों ही संजीदा नहीं हैं और न ही आम नागरिक इसके लिए प्रयास कर रहा है। जब तक जवाबदेही तय नही होगी, इसको अमलीजामा पहनाना एक कठिन काम है। साथ ही इसके लिए हमें स्कूलों में बच्चों को पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रैक्टिकली इन्वॉल्व करना होगा। केवल कागजी प्रतियोगिता से बात नहीं बनेगी। देश का भविष्य इन्हीं बच्चों पर निर्भर है। वही आने वाले समय के पर्यावरण प्रहरी होंगे। उन्हें यही सारी बातें इन्वॉल्व करके सिखानी होगी। धरती को तभी रहने लायक बनाया जा सकता है जब सरकार, आम नागरिक, मीडिया, अधिकारी व सामुदायिक सहभागिता सुनिश्चित हो।

आज हर इंसान और राष्ट्र में शक्तिशाली/महाशक्ति बनने की होड़ मची है। हर कोई प्रकृति का मनमाने ढंग से दोहन करने में लगा है। यही सबसे बड़ी वजह है कि पृथ्वी को लगातार नुकसान पहुंच रहा है। विकास के नाम पर हम अपनी धरती को ही बर्बाद करने में लगे हैं। अभी भी वक्त है। दुनिया के बड़े राष्ट्र प्रमुखों को एक मंच पर आकर इस मुद्दे पर गंभीरता से सोच–विचार करना होगा। लोगों को भी इस बारे में सोचना होगा। अगर जल्द ही हम नहीं संभले तो बहुत देर हो जाएगी। हमारी करनी का फल हमारी आने वाली पीढ़ी को भी झेलना पड़ेगा।

जल–जीवन और प्रबंधनः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

*हरिओम वार्ष्णेय

पृथ्वी पर प्रत्येक प्राणी एवं वनस्पति के लिए जल एक महत्वपूर्ण घटक है। जल की इस महत्ता को देखते हुए प्राणीमात्र का ही यह दायित्व बनता है कि वे इस अमूल्य एवं सीमित सम्पदा का संरक्षण एवं प्रबंधन करें एवं इसे एक आदत बनाकर जीवन के अभिन्न अंग के रूप में इसकी महत्ता को दूसरों तक पहुॅचाएं। पृथ्वी मण्डल का अधिकांश जल समुद्री जल के रूप में ही हमारे समक्ष है। इस समुद्री जल का समुचित उपयोग करना अब तक संभव नहीं हो पाया है। यह बात अलग है कि आज के युग में हम State of Arts Technologies से लैस हैं परन्तु इसके बावजूद भी पृथ्वी पर कुल जल के लगभग 4% जल से ही पूरी दुनिया का गुजारा हो रहा है। हमारे देश के संदर्भ में भी यही लागू होता है। अतः जब इस 96% समुद्री जल को साफ कर उपयोग करने की दिशा में कोई भी कदम उठाना संभव न हो तो खारे समुद्री जल के अलावा 4% उपयोग योग्य की मात्रा के आधार पर ही हमें अपने जल उपयोग संबंधी सभी अन्य गणनाएं करनी होती हैं।

जल संसाधनों के संबंध में भारतीय परिप्रेक्ष्य में यदि बात की जाए तो इसे प्राचीन भारत और आधुनिक भारत की जल संबंधी व्यवस्थाओं के संदर्भ में देखना ज्यादा प्रासंगिक होगा। प्राचीन भारत में विदेशी आक्रमणों से पहले इसके प्रमाण प्राचीन मठों, शिलालेखों, स्थानीय परंपराओं, रीतिरिवाजों एवं पुरातात्विक अवशेषों में जल उपयोग एवं उसके महत्व संबंधी प्रसंग पाए गए हैं जिन्हें भित्तिचित्र आदि द्वारा दर्शाया गया माना जा सकता है, यहां तक कि पुराणों, महाभारत, रामायण कालीन, वैदिक काल, बौद्ध और जैन धर्मों के ग्रंथों में नहरों, कुओं, तालाबों आदि का उल्लेख है। इसके अलावा जल की महत्ता के संदर्भ में नैतिक और आध्यात्मिक, सामाजिक संदर्भो में भी प्रकाश डाला गया है और इस व्यवस्था को बनाए रखने में शासकों और आम जनमानस का भी अपूर्ण सहयोग मिलता रहता था। परंतु अब वर्तमान में शासकों एवं आम जन मानस से इसी सहयोग एवं तालमेल की अपेक्षा की जाती है। जोकि वास्तव में जमीनी स्तर पर नहीं देखी जाती है।

परंतु आधुनिक काल में धरती पर आबादी का दबाव बढ़ा है, जीवन शैली बदली है और उसी के अनुरूप जल का उपयोग भी बदला जिसमें जल की खपत पर सीधा असर पड़ा है। आधुनिक युग में प्रचलित जल प्रयोग की वर्तमान मानसिक दशा ब्रिटिशकालीन जल संरक्षण प्रणालियों के वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिक नहीं रही हैं। अब इसके उपयोग और दुरूपयोग को ध्यान में रखते हुए वर्तमान प्रणालियों को विकसित किए जाने पर मात्र प्रकाश डालने ही नहीं बल्कि इस पर जमीनी स्तर पर व्यावहारिक एवं तकनीकी दृष्टि से कार्य करने की आवश्यकता महसूस होने लगी है। इस बात की चर्चा अब राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी होने लगी है।

इसी संदर्भ में वर्ष 2015 में संयुक्त राष्ट्र ने सतत विकास लक्ष्य (Sustainable Development Goal) 2015–2020 तैयार किया है। इसके अंतर्गत जल संबंधी विभिन्न विकास लक्ष्यों यथाः पीने के लिए स्वच्छ पानी, कृषि, उद्योगों, जल विद्युत ऊर्जा, पर्यावरण तथा इसके असंतुलन के कारण उत्पन्न बाढ़ और सूखे की विभीषिका से निपटने की योजनाएं शामिल है।

संयुक्त राष्ट्र के इन लक्ष्यों को यदि प्राचीन भारतीय जल संसाधन उपयोग एवं संरक्षण के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो तमिलनाडु राज्य के तिरूचिरापल्ली में कावेरी नदी पर बना कल्लानई बांध जिसे कि ग्रांड अनीकट भी कहा जाता है, इसका एक ज्वलंत उदाहरण हो सकता है। आधुनिक विकल्पों की अवधारणा पर तैयार किया गया यह प्राचीन बांध मूल रूप से चोल राजा करिकालन द्वारा 100 ईशा पूर्व बनवाया गया था। यह दुनिया की चौथी सबसे पुरानी जल विभाजन संरचना है जो वर्तमान में भी उपयोग में लायी जा रही है। इसी

*कनिष्ठ अभियंता, नई दिल्ली

क्रम में आधुनिक पेरियार बांध, कृष्ण राज सागर बांध आदि को रखा जा सकता है। परंतु सबसे विचारणीय मुद्दा यह है कि आज भी हमारे देश में जल संरचनाएं पुराने तंत्रों के इर्द–गिर्द ही घूमती प्रतीत होती हैं। जिनमें अब और सुधार करने की एवं रख रखाव की आवश्यकता महसूस होती है।

भारत वैश्विक परिप्रेक्ष्य में आर्थिक मोर्चे पर अपनी अलग पहचान बना चुका है। दुनियां का वह हर देश जो वैश्विक एवं औद्योगिक प्रतिस्पर्धा चाहता है उसकी एक दृष्टि भारतीय अर्थव्यवस्था तथा भारत में निवेश पर भी बनी रहती है। विगत कुछ वर्षों में जिस प्रकार अन्य क्षेत्रों में प्रगति हुई है उसको देखते हुए जल संसाधन क्षेत्र अभी भी अछूता है और इस ओर थोड़ा भी ध्यान नहीं दिया गया है। बेहतर होता यदि सरकारें और निवेशक देश के 4% जल से अपनी गिद्ध दृष्टि हटाकर शेष 96% समुद्री खारे जल को उपयोग योग्य बनाने हेतु अपना प्रयास आरंभ करें, इनमें निवेश करें तो प्रतिदिन इस दहशत में रहना कि ''अगला विश्वयुद्ध पानी पर ही होगा'' के भय से कई पीढ़ियों को मुक्ति मिल जाती तथा पानी की अधिकता के कारण जल संत्रास भोग रहे देश के कई कोनों को तो तुरंत राहत मिल सकती है। भारत सरकार के जल संसाधन मंत्रालय द्वारा रा.ज.वि.अ. को सौंपे गए उद्देश्यों को काफी हद तक पूरा करने में भी सफलता मिल सकती है।

वर्तमान भारत में जल संसाधनों के ईष्टतम उपयोग को दृष्टि में रखते हुए रा.ज.वि.अ. द्वारा किए जाने वाले प्रयासों को काफी हद तक सफल माना जा सकता है। परंतु मात्र परियोजनाएं कागजों में तैयार करने से सफल नहीं होती हैं बल्कि इनको धरातल पर उतारना भी महत्वपूर्ण होता है जिसके संबंध में हम विफल रहे हैं। इस प्रकार की कागजी परियोजनाओं को तैयार करना तथा राजनीतिक एवं कूटनीतिक स्तर पर उनका विफल होना देश के आर्थिक विकास में एक रोड़ा साबित हो सकता है। किसी परियोजना का आरंभ उसके पीछे के वर्षो की समस्याओं, जनहित की इच्छाओं, आर्थिक लाभों, रोजगार के अवसरों आदि को दृष्टिगत रखते हुए किया जाता है जिसमें सरकार एवं जनता की हजारों प्रकार की आशाएं एवं आकांक्षाएं समाहित होती हैं। परंतु उसके विफल होने पर अभियंताओं और उससे जुड़े हुए अन्य लोगों में अवसाद एवं निराशा की भावनाओं का जन्म लेना स्वाभाविक ही है। अवसाद एवं निराशा की भावनाएं केवल जल संसाधन परियोजनाओं के क्षेत्र में ही नहीं होती बल्कि सरकार की अन्य परियोजनाओं में संलग्न लोगों की श्रम आशाओं एवं आकांक्षाओं पर भी ठीक इसी तरह लागू होती है। ऐसी परियोजनाओं को लेकर हमारे पास प्रायः किम्कर्त्तव्यविमूढ़ की स्थिति से आगे निकलकर इन परियोजनाओं को भारतीय जनमानस की आकांक्षाओं एवं अपेक्षाओं पर खरे उतरने के प्रयास बार–बार करते रहना चाहिए। गिरकर उठना ही हमारी सफलता का आधार एवं निरंतर आगे बढ़ते रहना ही हमारी संकल्पना होनी चाहिए। तब कहीं जाकर हम परियोजनाओं को एक नया आकार एवं प्रकार देने में सफल हो पाएंगे।

आज के सुविधा सम्पन्न युग एवं सुविधा भोगी दौर में जल के प्रबंधन एवं उसके सदुपयोग को अधिक महत्व नहीं दिया जा रहा है। शहरों में टैप कल्चर का प्रचलन है और यह व्यवहार में भी दिख रहा है। इस टैप कल्चर में हम जल का अंधाधुंध दोहन तो करते हैं परंतु इस 4% जल में से भविष्य में हमारी पीढ़ी को प्रतिदिन कितनी मात्रा में जल मिलना शेष है इस पर कभी किसी का ध्यान भी नही जाता। जल उपयोग के संबंध में आवश्यक है कि अगली पीढ़ी को उसी प्रकार शिक्षा दी जाए जिस प्रकार उन्हें समाज व्यवहार में प्रतिष्ठा पाने और जीविका का निर्वहन करने के लिए बच्चे को बचपन से ही मानसिक रूप से तैयार किया जाता है और वह कमोबेश तैयार भी होता है। बच्चों की पढ़ाई के मानक और उसके जीवन में जीविका कमाने की सफलता एवं सम्पन्नता के साथ–साथ जल उपयोग की दक्षता का स्तर भी बनाएं रखने के मानकों को तय किया जाए। इसके परिणाम स्वरूप यह परिणाम परिलक्षित होगा कि हमारी अगली पीढ़ी परिवार एवं जीवन के अन्य संस्कारों, रीतियों, रिवाजों के साथ जल ही जीवन का नारा व्यवहार में कितना आत्मसात कर पाए हैं ?

जुलाई–सितम्बर, 2019 में समाप्त तिमाही का तकनीकी सारसंग्रह

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण ने राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना के अधीन संभाव्यता रिपोर्ट (सं.रि.) तैयार करने के लिए 30 लिंक (प्रायद्वीपीय घटक के अधीन 16 तथा हिमालयी घटक के अघीन 14 लिंक) अभिज्ञात किए हैं। सभी 30 लिंकों की पूर्व संभाव्यता रिपोर्ट (पू.सं.रि.) पूरी कर ली हैं तथा संबंधित राज्य सरकारों को परिचालित कर दी गई हैं।

संभाव्यता रिपोर्टें (सं.रि.)

प्रायद्वीपीय घटक के अधीन अभिज्ञात 16 लिंकों में से कर्नाटक से संबंधित 2 छोटे लिंकों नामतः बेदथी–वरदा और नेत्रावती–हेमावती लिंकों को छोड़कर अन्य सभी की संभाव्यता रिपोर्टें पूरी कर ली गई हैं ।

रा.ज.वि.अ. ने हिमालयी घटक के अधीन अभिज्ञात 14 लिंकों में से 2 लिंकों नामतः शारदा–यमुना तथा घाघरा–यमुना (भारतीय भाग) की संभाव्यता रिपोर्टें पूरी कर ली हैं। उपरोक्त के अतिरिक्त 7 लिंकों नामतः (i) यमुना–राजस्थान (ii) चुनार–सोन–बैराज लिंक (iii) सुबर्णरेखा–महानदी लिंक (iv) गंगा–दामोदर–सुबर्णरेखा लिंक (v) फरक्का–सुंदरबन लिंक (vi) राजस्थान–साबरमती लिंक (vii) गंडक–गंगा लिंक से संबंधित भारतीय भाग में सर्वेक्षण एवं अन्वेषण तथा संभाव्यता रिपोर्ट के प्रारूप तैयार करने का कार्य पूरा कर लिया है। केन्द्रीय जल आयोग/पंचेश्वर विकास प्राधिकरण द्वारा पंचेश्वर बांध की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट का कार्य पूरा होने के बाद शारदा–यमुना लिंक की संभाव्यता रिपोर्ट की समीक्षा की जाएगी। सोन बांध– गंगा की सहायक नदियों (एस.टी.जी.) की संभाव्यता रिपोर्ट तैयार करने के लिए दूरस्थ संज्ञान नक्शों का प्रयोग करते हुए सर्वेक्षण एवं अन्वेषण कार्य पूरा कर लिया है। एम.एस.टी.जी. (विकल्प– II मानस बांध के बिना) की संभाव्यता रिपोर्ट का प्रारूप पूरा कर लिया है तथा इसे अंतिम रूप दिया जा रहा है। पूरी तरह से नेपाल के सीमा क्षेत्र में आने वाले कोसी – मेची लिंक तथा एम.एस.टी.जी. का विकल्प जोगी घोपा – तीस्ता – फरक्का की संभाव्यता रिपोर्ट तैयार करने का लक्ष्य अभी नहीं है।

विस्तृत परियोजना रिपोर्ट

तीन लिंक परियोजनाओं नामतः केन–बेतवा लिंक (चरण I एवं II), दमनगंगा–पिंजाल लिंक तथा पार–तापी–नर्मदा लिंक की विस्तृत परियोजना रिपोर्टें पूरी कर ली हैं। 3 लिंकों के संबंध में संबंधित राज्यों के मध्य मतैक्यता स्थापित कराने/क्रियान्वयन के लिए माननीय मंत्री, (ज. श.), सचिव (ज. सं. न. वि. व गं. स. वि.) तथा महानिदेशक रा.ज.वि.अ. भरसक प्रयास कर रहे हैं।

माननीय मंत्री, (ज. श.) ने उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश राज्यों के माननीय मुख्य मंत्रियों के साथ दिनांक 25.09.2017 को बैठक की तथा माननीय मुख्य मंत्री मध्य प्रदेश सरकार के साथ दिनांक 13.02.2018 एवं 18.05.2018 को बैठक की। के बी एल पी के क्रियान्वयन पर मतैक्यता के लिए समझौता ज्ञापन का प्रारूप मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश राज्यों को भेज दिया गया है। केन–बेतवा लिंक परियोजना के समझौता ज्ञापन पर विचार विमर्श करने के लिए सचिव (ज.सं.न.वि.व गं.सं.वि.) ने उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश सरकार के मुख्य सचिवों/अधिकारियों के साथ दिनांक 23.04.2018 एवं 20.07.2019 को बैठक की।

पार–तापी–नर्मदा तथा दमनगंगा पिंजाल लिंक परियोजना के क्रियान्वयन के लिए समझौता ज्ञापन का प्रारूप महाराष्ट्र तथा गुजरात सरकारों को सितंबर 2017 में भेज दिया है। माननीय मंत्री (ज.श.) ने गुजरात तथा महाराष्ट्र सरकार के मुख्य मंत्रियों के साथ दिनांक 25.09.2017 को बैठक की। दमनगंगा–पिंजाल तथा पार–तापी–नर्मदा लिंक परियोजनाओं की स्थिति की समीक्षा करने के लिए माननीय मंत्री, (ज.श.) ने दोनों राज्यों के अधिकारियों के साथ 16 जनवरी 2018 को बैठक की। इन दोनों लिंक परियोजनाओं के क्रियान्वयन के लिए समझौता ज्ञापन को अंतिम रूप देने के लिए सचिव (ज. सं. न. वि. व गं. वि.), ने भी महाराष्ट्र तथा गुजरात सरकार के अधिकारियों के साथ दिनांक 20.04.2018 एवं 07.09.2018 को बैठक की।

महानदी तथा गोदावरी नदी बेसिनों से पथांतरित किए जाने वाले जल की मात्रा पर मतैक्यता नहीं हो पाई है, रा.ज.वि.अ. ने गोदावरी–कावेरी लिंक द्वारा गोदावरी बेसिन के इंदरावती उप बेसिन के अप्रयुक्त जल को कावेरी बेसिन में अंतरित करने के लिए वैकल्पिक अध्ययन किया है। संबंधित राज्य सरकारों से सहमति लेने के लिए तकनीकी संभाव्यता नोट परिचालित कर दिया है। तदनुसार, रा.ज.वि.अ. ने गोदावरी (इंचमपल्ली/जामपेट) कावेरी (ग्रांड अनीकट) लिंक परियोजना की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट बनाने का कार्य पूरा कर लिया है तथा पक्षकार राज्यों को उनकी टिप्पणी/विचार जानने के लिए मार्च 2019 में भेज दिया है।

कावेरी–वैगई–गुंडार तथा वेदती– वरदा लिंक परियोजनाओं की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने का कार्य प्रगति पर है।

अंतः राज्यीय लिंक

रा.ज.वि.अ. को 9 राज्यों नामतः महाराष्ट्र गुजरात, झारखंड, ओडिशा, बिहार, राजस्थान, तमिलनाडु, छत्तीसगढ़, तथा कर्नाटक से कुल 47 अंतः राज्यीय लिंक प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। रा.ज.वि.अ. ने इन 47 अंतः राज्यीय लिंक प्रस्तावों में से 36 लिंकों की पूर्व संभाव्यता रिपोर्टें पूरी कर ली हैं।

बिहार राज्य की बूढ़ी गंडक–नून–बाया–गंगा लिंक तथा कोसी–मेची, तमिलनाडु की पोनय्यार (नेडुंगल–अनीकट) – पालार लिंक, महाराष्ट्र की वेनगंगा (गोसीखुर्द) – नलगंगा (पूरना–तापी) लिंक परियोजना की विस्तृत परियोजना रिपोर्टें पूरी कर ली हैं तथा इन्हें संबंधित राज्य सरकारों को भेज दिया है। महाराष्ट्र की दमनगंगा(इकदारे)–गोदावरी लिंक तथा दमनगंगा–वैतरणा–गोदावरी (कदवादेव) लिंक परियोजना की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट का कार्य प्रगति पर है ।

तकनीकी बैठकों/सेमिनारों/प्रशिक्षण कार्यक्रमों/कार्यशालाओं मे भागीदारी

महानिदेशक रा.ज.वि.अ. तथा रा.ज.वि.अ. के अन्य अधिकारियों ने तिमाही के दौरान समय – समय पर चालीस तकनीकी बैठकों, दो सेमिनारों, चार कार्यशालाओं और एक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

संसदीय प्रश्नों /वी.आई.पी./पी.एम.ओ./पी.जी./पी.एस. संदर्भों के उत्तर

तिमाही के दौरान 182 वी.आई.पी./ पी.एम.ओ./ पी.जी./ पी.एस. ग्राम संदर्भों तथा 47 संसदीय प्रश्नों / मामलों के उत्तर दिए गए।

पी.एम.के.एस.वाई.–ए.आई.बी.पी. के अंतर्गत नाबार्ड निधियन

पी.एम.के.एस.वाई.–ए.आई.बी.पी. के अंतर्गत वर्ष 2016 से सितंबर 2019 तक 16 राज्यों, उत्तरी कोइल तथा पोलावरम परियोजनाओं को 17779.22 करोड़ रूपए संवितरित किए गए।

रा.ज.वि.अ. सोसाइटी की विशेष सामान्य बैठक

माननीय मंत्री (जल शक्ति) की अध्यक्षता में रा.ज.वि.अ. सोसाइटी की छठी विशेष सामान्य बैठक दिनांक 21.08.2019 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में हुई।

रा.ज.वि.अ. सोसाइटी की वार्षिक सामान्य बैठक

माननीय मंत्री (जल शक्ति) की अध्यक्षता में रा.ज.वि.अ. सोसाइटी की 33वीं वार्षिक सामान्य बैठक दिनांक 21.08.2019 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में हुई।

नदी जोड़ पर विशेष समिति (न जो पर वि स)

माननीय मंत्री (जल शक्ति) की अध्यक्षता में नदी जोड़ पर विशेष समिति की 16वीं बैठक दिनांक 21.08.2019 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में हुई।

छठा भारत जल सप्ताह

दिनांक 24 से 28 सितंबर 2019 तक विज्ञान भवन, नई दिल्ली में छठे भारत जल सप्ताह का आयोजन किया गया। भारत के राष्ट्रपति, महामहिम श्री राम नाथ कोविंद ने इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

01.07.2019 से 30.09.2019 तक नियुक्तियां

इस अवधि में सीधी भर्ती/प्रतिनियुक्ति द्वारा निम्नलिखित भर्ती की गई

(क) सीधी भर्ती प्रतिनियुक्ति पर नियुक्ति

क्र.सं.	नाम और पदनाम	प्रतिनियुक्ति/सीधी भर्ती	नियुक्ति का स्थान
1	श्री आशीष श्योरान, कनिष्ठ अभियंता	सीधी भर्ती 03.07.2019 (पूर्वा.) से	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., पटना
2	श्री उपेन्द्र चौधरी, कनिष्ठ अभियंता	सीधी भर्ती 05.07.2019 (पूर्वा.) से	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., वलसाड
3	श्री यतिन मल्होत्रा, कनिष्ठ अभियंता	सीधी भर्ती 11.07.2019	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., नागपुर
4	श्री सोनू कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	सीधी भर्ती 23.09.2019 (पूर्वा.) से	रा.ज.वि.अ., (मुख्यालय), नई दिल्ली
5	श्री एस.वी. शिव कुमार यादव, आशुलिपिक ग्रेड -II	सीधी भर्ती 23.09.2019 (पूर्वा.) से	मुख्य अभियंता (दक्षिण), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद
6	श्री अमन त्रिवेदी, आशुलिपिक ग्रेड -II	सीधी भर्ती 24.09.2019 (पूर्वा.) से	मुख्य अभियंता (दक्षिण), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद
7	श्री महेन्द्र, अवर श्रेणी लिपिक	सीधी भर्ती 25.09.2019 (पूर्वा.) से	रा.ज.वि.अ., (मुख्यालय), नई दिल्ली
8	श्री चलपका वेन्कट किशोर, अवर श्रेणी लिपिक	सीधी भर्ती 25.09.2019 (पूर्वा.) से	अ.स., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद
9	श्री साहिल बालयान, अवर श्रेणी लिपिक	सीधी भर्ती 26.09.2019 (पूर्वा.) से	रा.ज.वि.अ., (मुख्यालय), नई दिल्ली
10	श्री विनीत, अवर श्रेणी लिपिक	सीधी भर्ती 26.09.2019 (पूर्वा.) से	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., झांसी
11	श्री मनोज कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	सीधी भर्ती 26.09.2019 (पूर्वा.) से	रा.ज.वि.अ., (मुख्यालय), नई दिल्ली
12	श्री शशि रंजन, अवर श्रेणी लिपिक	सीधी भर्ती 30.09.2019 (पूर्वा.) से	रा.ज.वि.अ., (मुख्यालय), नई दिल्ली
13	श्री अभिषेक शर्मा, आशुलिपिक ग्रेड -II	सीधी भर्ती 30.09.2019 (पूर्वा.) से	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., झांसी
14	श्री गोविंद, आशुलिपिक ग्रेड -II	सीधी भर्ती 30.09.2019 (पूर्वा.) से	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., भोपाल
15	श्री खुशी राम, अवर श्रेणी लिपिक	सीधी भर्ती 30.09.2019 (पूर्वा.) से	मुख्य अभियंता (उत्तर) का कार्यालय, रा.ज.वि.अ., लखनऊ

(ख) पदोन्नति इस अवधि के दौरान पदोन्नति पाने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों का विवरण इस प्रकार है –

क्र.सं.	नाम और पदनाम	पदोन्नति का पद एवं दिनांक	पदोन्नति के बाद तैनाती का स्थान
1	श्री डी.जी. चौहान, सहायक कार्यपालक अभियंता	कार्यपालक अभियंता 04.07.2019 (पूर्वा) से	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., वलसाड
2	श्री के.ए. नायडू, सहायक निदेशक	कार्यपालक अभियंता 04.07.2019 (पूर्वा) से	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., नागपुर
3	श्री एस.के. सिंघल, सहायक कार्यपालक अभियंता	कार्यपालक अभियंता 09.09.2019 (पूर्वा) से	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., वडोदरा
4	श्री एम. नागेश्वर राव, सहायक कार्यपालक अभियंता	कार्यपालक अभियंता 05.07.2019 (पूर्वा) से	अ.प्र.– I, रा.ज.वि.अ., नासिक

क्र.सं.	नाम और पदनाम	पदोन्नति का पद एवं दिनांक	पदोन्नति के बाद तैनाती का स्थान
5	श्री आर. ए. श्रीनिवास, सहायक अभियंता	सहायक निदेशक 11.07.2019 (पूर्वा) से	अ.वृत्त, रा. ज.वि.अ., भुवनेश्वर
6	श्री अशोक कुमार प्रसाद, सहायक अभियंता	सहायक कार्यपालक अभियंता 11. 07.2019 (पूर्वा) से	अ.उ.प्र., रा.ज. वि.अ., रांची
7	श्री पी.के. शर्मा, सहायक अभियंता	सहायक कार्यपालक अभियंता 10.07.2019 (मध्यान्ह) से	अ.प्र., रा. ज.वि.अ., ग्वालियर
8	श्री पी.के. श्रीवास्तव, सहायक अभियंता	सहायक निदेशक 10.07.2019 (पूर्वा) से	रा.ज.वि.अ., (मुख्यालय), नई दिल्ली
9	श्री एस.सी. मंगल, सहायक अभियंता	सहायक निदेशक 10.07.2019 से	रा.ज.वि.अ., (मुख्यालय), नई दिल्ली
10	श्री एम. श्रीनिवास, अवर श्रेणी लिपिक	प्रधान लिपिक 11.07.2019 से	अ.स., रा. ज.वि.अ., हैदराबाद
11	श्री बी.के. पात्रा, प्रधान लिपिक	अधीक्षक ग्रेड – II 11.07. 2019	रा.ज.वि.अ., (मुख्यालय), नई दिल्ली
12	श्री आर. चन्द्रशेखरन, सहायक अभियंता	सहायक कार्यपालक अभियंता 15. 07.2019 से	अ.प्र., रा.ज. वि.अ., चेन्नई
13	श्री महेश कुमार, एम.टी.एस.	अवर श्रेणी लिपिक 16.07. 2019 से	रा.ज.वि.अ., (मुख्यालय), नई दिल्ली
14	श्री पी.एस. मूर्ति, सहायक अभियंता	सहायक कार्यपालक अभियंता 01.08.2019 से	अ.प्र., रा. ज.वि.अ., हैदराबाद

क्र.सं.	नाम और पदनाम	पदोन्नति का पद एवं दिनांक	पदोन्नति के बाद तैनाती का स्थान
15	श्री पी. श्रीनिवासुलु, सहायक अभियंता	सहायक कार्यपालक अभियंता 09.08.2019 से	अ.प्र.–II, रा.ज.वि.अ., नासिक
16	श्री एस.के. गवांडे, सहायक अभियंता	सहायक कार्यपालक अभियंता 13. 08.2019	अ.प्र., रा.ज. वि.अ., भोपाल
17	श्री के. गिरिधर, अवर श्रेणी लिपिक	प्रधान लिपिक 19.08.2019 से	मुख्य अभियंता (द.) का कार्यालय, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद
18	श्री जे. देवा सुंदर, सहायक अभियंता	सहायक कार्यपालक अभियंता 29. 08.2019	अ.प्र., रा. ज.वि.अ., कोलकाता
19	श्री एम. सत्यनारायण, आशुलिपिक ग्रेड – I	निजी सचिव 03.09.2019 से	मुख्य अभियंता (द.) का कार्यालय, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद
20	श्री एन.डी. शुक्ला, कनिष्ठ अभियंता	सहायक अभियंता 20.09.2019 (मध्यान्ह) से	अ.प्र., रा.ज. वि.अ., भोपाल
21	श्री के. एच. रहमान, कनिष्ठ अभियंता	सहायक अभियंता 20.09.2019 (मध्यान्ह) से	रा.ज.वि.अ., (मुख्यालय), नई दिल्ली
22	श्री प्रमोद कुमार रॉय, कनिष्ठ अभियंता	सहायक अभियंता 20.09.2019 (मध्यान्ह) से	अ.स., रा.ज. वि.अ., पटना
23	श्री आर. बालाकृष्णन, सहायक अभियंता	सहायक निदेशक 21.09.2019 से	रा.ज.वि.अ., (मुख्यालय), नई दिल्ली

(ग) सेवानिवृत्ति/त्यागपत्र/प्रत्यावर्तन

रा.ज.वि.अ. से सेवानिवृत्त / त्यागपत्र/ प्रत्यावर्तन पदाधिकारी

क्रं.सं.	नाम और पदनाम	सेवानिवृत्ति/ प्रत्यावर्तन का दिनांक
1	श्रीमती अनिता लालचंदानी, सहायक निदेशक, रा.ज.वि.अ., नई दिल्ली	31.07.2019
2	श्री सुरेश बाबू मिश्रा, स.अ., अ.प्र., रा.ज.वि.अ., ग्वालियर	31.07.2019
3	श्री एस.के. तैलंग, अवर श्रेणी लिपिक, रा.ज.वि.अ., नई दिल्ली	31.07.2019
4	श्रीमती भावना पी. जोशी, प्रधान लिपिक, वलसाड	31.07.2019
5	श्री बलबंत सिंह, एम.टी.एस., ग्वालियर	31.07.2019
6	श्री डाल चंद, एम.टी.एस., ग्वालियर	31.07.2019
7	श्री जगवंत खेड़ा, प्रारूपकार–II, रा.ज.वि.अ., नई दिल्ली	10.08.2019 (स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति)
8	श्री एस. मोहन कुमार, का.अ., अ.प्र., पटना	31.08.2019
9	श्रीमती विजयलक्ष्मी, प्रारूपकार– I, अ.प्र., हैदराबाद	30.09.2019
10	श्रीमती रंजना घोटणकर, प्रधान लिपिक, अ.प्र., रा.ज.वि.अ., ग्वालियर	30.09.2019

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण की गतिविधियां
मुख्यालय में हिन्दी पखवाड़ा 2019 का आयोजन

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, मुख्यालय, नई दिल्ली एवं क्षेत्रीय कार्यालयों में 01 सितम्बर, 2019 से 15 सितम्बर, 2019 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। पखवाड़े के शुभारंभ समारोह में निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी ने मुख्य अभियंता (मुख्यालय) महोदय का पुष्प गुच्छ से स्वागत किया। तत्पश्चात् मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने अन्य अधिकारियों के साथ दीप प्रज्ज्वलन कर पखवाड़े का शुभारंभ किया। श्रीमती जसविंदर कौर, श्री हरिओम वार्ष्णेय, श्री के.सी. बघेल, श्री अंशुल जैन, श्री बिमलेश गोस्वीमी, श्री नानक चंद, श्रीमती उर्मिला रानी, श्रीमती संगीता मेहरोत्रा एवं श्रीमती ऊषा रानी ने सरस्वती वंदना की प्रस्तुति की। तत्पश्चात् श्रीमती नलिनी मोहन, श्रीमती राधा, श्रीमती रीना वाधवा, श्रीमती रजनी शर्मा, श्री अनुराग, श्री विक्रम सिंह, श्री योगश एवं मो. इरफान ने वन्देमातरम् की भाव भीनी प्रस्तुति की।

सहायक निदेशक (राजभाषा) ने पखवाड़े की रूपरेखा प्रस्तुत की।

निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी, श्री के. पी. गुप्ता ने मुख्य अभियंता तथा सभी पदाधिकारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण नदियों के अंतर्योजन द्वारा देश में जल संसाधनों के विकास के लिए प्रतिबद्ध एकमात्र संगठन है। जिस प्रकार नदियों को जोड़ कर हम देश को एकजुट करना चाहते हैं उसी प्रकार से हिन्दी का प्रयोग हम पूरी निष्ठा और संवैधानिक नियमों–उपनियमों के अनुसार कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि वे स्वयं मंत्रालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति और नराकास की बैठकों में भाग लेते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि महानिदेशक महोदय ने स्वयं राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में भी सदस्यों से कहा है कि जहां तक संभव हो छोटे–छोटे पत्र मौलिक रूप से हिन्दी में लिखे जाएं। आप सभी हिन्दी में बहुत अच्छे से टिप्पणियां लिख रहे हैं तो पत्रों में भी हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग सुनिश्चित करें। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण ने इस वर्ष हिन्दी में छठी तकनीकी संगोष्ठी हैदराबाद में आयोजित की जिसमें राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण के तकनीकी पदाधिकारियों के अलावा गैर तकनीकी पदाधिकारियों ने भी लेख लिखे जो अत्यंत सराहनीय है।

मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने सभी साथियों को हिन्दी पखवाड़े के शुभारंभ के अवसर पर बधाई दी और महानिदेशक महोदय द्वारा इस अवसर पर जारी अपील प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि ''हिन्दी एक अत्यंत सरल और सहज भाषा है। सरकार द्वारा हिन्दी को राजभाषा घोषित किया गया है और हम सभी इसका उपयोग बड़ी सरलता से कर सकते हैं। मैंने देखा है कि जब फाइल नीचे से अर्थात डीलिंग हैंड द्वारा हिन्दी में भेजी जाती है तो उस पर सभी अधिकारी हिन्दी में ही टिप्पणी करते हैं। हमारे कार्यालय में आप सभी के सहयोग से हिन्दी में काम करने का जो वातावरण तैयार हुआ है उसे हमेशा बनाए रखने की जरूरत है। इसके लिए उन्होंने सभी की सराहना और प्रशंसा की। जैसा कि निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी ने बताया कि इस वर्ष तकनीकी संगोष्ठी हैदराबाद में सफलतापूर्वक आयोजित की गई। इस संगोष्ठी के संपादक मंडल का अध्यक्ष होने के नाते मुझे यह देखकर बहुत हर्ष होता है कि एन.डब्ल्यू.डी.ए. के सभी पदाधिकारी चाहे वो तकनीकी कार्य से जुड़े हों या अन्य कार्यों से, सभी जल को लेकर बहुत गहराई से सोचते हैं''। ऐसा ही अनुभव मुझे हिन्दी के लिए होता है जब मैं देखता हूं कि कार्यालय में हिन्दी का काम बहुत अच्छे से किया जा रहा है। उन्होंने कहा

कि मेरा आप सभी से अनुरोध है कि प्रतियोगिताओं में बड़ी संख्या में भाग लें और पखवाड़े को सफल बनाएं। हमारे क्षेत्रीय कार्यालयों में भी पखवाड़ा मनाया जा रहा है।

तत्पश्चात् श्री ललित कुमार स्यानियां, कनिष्ठ अभियंता ने अपने गीत की प्रस्तुति से सभी को भाव विभोर कर दिया।

अंत में राष्ट्रगान के साथ पखवाड़े के उद्घाटन समारोह का समापन हुआ।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान छह विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिनमें रा.ज.वि.अ. के सभी पदाधिकारियों ने उत्साहपूर्वक बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया और इस पखवाड़े को सफल बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। हिन्दी पखवाड़े के दौरान छह प्रतियोगिताएं निम्नानुसार आयोजित की गई।

वाद–विवाद प्रतियोगिता–03.09.2019

दिनांक 03.09.2019 को वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता बहुत रोचक रही तथा इसमें बहुत बढ़–चढ़ कर बड़ी संख्या में पदाधिकारियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता के निर्णायक श्री के.पी. गुप्ता, निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी एवं श्री रूपेश कुमार सिन्हा, निदेशक (वित्त) थे। इस प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करने वाले पदाधिकारियों का विवरण निम्नानुसार है:

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	ललित कुमार स्यानियां, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम
2	बिमलेश गोस्वामी, प्रारूपकार	द्वितीय
3	राधा, अवर श्रेणी लिपिक	तृतीय
4	मोहम्मद इरफान, अवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन संयुक्त
5	बी.के. टंडेल, सहायक अभियंता	
6	नलिनी मोहन, आशुलिपिक	प्रोत्साहन

प्रार्थनापत्र लेखन, प्रतियोगिता 05.03.2019

(केवल चालकों एवं एम.टी.एस. के लिए)

दिनांक 05.09.2019 को प्रार्थनापत्र लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। यह प्रतियोगिता विशेषतौर पर केवल चालकों एवं एम.टी.एस. कर्मचारियों के लिए आयोजित की जाती है। इसमें सभी पदाधिकारियों ने बड़े उत्साह से हिस्सा लिया। इस प्रतियोगिता के निर्णायक श्री चिरब्रत सरकार, निदेशक (प्रशासन) एवं श्री अफरोज आलम, अधीक्षक अभियंता थे। इस प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करने वाले कर्मचारियों का विवरण निम्नानुसार है:

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री)	पुरस्कार
1	परविरेंद्र सिंह नेगी, एम.टी.एस.	प्रथम संयुक्त
2	के.एस. उपाध्याय, एम.टी.एस.	
3	दरम्यान सिंह, वाहन चालक	द्वितीय संयुक्त
4	गोपाल दत्त, एम.टी.एस.	
5	उमेश चन्द्र, एम.टी.एस.	तृतीय संयुक्त
6	अजय सिंह, वाहन चालक	
7	हकीकत राय, एम.टी.एस.	प्रोत्साहन
8	भोपाल सिंह, एम.टी.एस.	प्रोत्साहन संयुक्त
9	राजकंवर, एम.टी.एस.	

गीत, दोहा, चौपाई अंताक्षरी प्रतियोगिता – 09.09.2019

दिनांक 09.09.2019 को गीत, दोहा, चौपाई अंताक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया इसमें पांच टीमों (गंगा समूह, यमुना समूह, कृष्णा समूह, सरस्वती समूह, कावेरी समूह) ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता के निर्णायक श्रीमती जानसी विजयन (एम.डी.यू) एवं श्री रूपेश कुमार सिन्हा, निदेशक (वित्त) थे। इस प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करने वाले पदाधिकारियों का विवरण निम्नानुसार है:

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
सरस्वती समूह	राधा, अवर श्रेणी लिपिक	प्रथम संयुक्त
	के. एस. उपाध्याय, एम. टी. एस.	
	ललित कुमार स्यानियां, कनिष्ठ अभियन्ता	
	पी. के. श्रीवास्तव, सहायक अभियन्ता	
	अनिल कुमार जैन, उप निदेशक	
कृष्णा समूह	राजेश कुमार, उप निदेशक (प्रशासन)	द्वितीय संयुक्त
	राजीव निगम, कनिष्ठ अभियन्ता	
	हरि ओम वार्ष्णेय, कनिष्ठ अभियन्ता	
	बी. के. टंडेल, सहायक अभियन्ता	
कावेरी समूह	बिमलेश गोस्वामी, प्रारूपकार	तृतीय संयुक्त
	अंशुल जैन, कनिष्ठ अभियन्ता	
	राम किशन, कनिष्ठ अभियन्ता	
	संगीता मेहरोत्रा, आशुलिपिक	
	राकेश कुमार गुप्ता, कार्यपालक अभियन्ता	
गंगा समूह	अशोक भटेले, कनिष्ठ अभियन्ता	प्रोत्साहन संयुक्त
	रीता कश्यप, आशुलिपिक	
	ललित कुमार सामंतराय, प्रशासनिक अधिकारी	
	मो. इरफान, अवर श्रेणी लिपिक	
	नलिनी मोहन, आशुलिपिक	
यमुना समूह	मुख्तारूल हक, कनिष्ठ अभियंता	प्रोत्साहन संयुक्त
	ऊषा रानी, आशुलिपिक	
	रामदास सिंह, अवर श्रेणी लिपिक	
	संजीव कुमार राणा, अवर श्रेणी लिपिक	
	के. के. श्रीवास्तव, उपनिदेशक	

निबंध प्रतियोगिता – 11.09.2019

दिनांक 11.09.2019 को निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया इसमें बड़े उत्साह से पदाधिकारियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता के निर्णायक श्री आर. के. जैन, मुख्य अभियंता (मुख्यालय) एवं श्री मुजफ्फर अहमद, अधीक्षक अभियंता थे। इस प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करने वाले पदाधिकारियों का विवरण निम्नानुसार है:

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	ललित कुमार स्यानियां, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम संयुक्त
2	राधा, अवर श्रेणी लिपिक	
3	राजीव निगम, कनिष्ठ अभियन्ता	
4	रीता कश्यप, आशुलिपिक	
5	हरिओम वार्ष्णेय, कनिष्ठ अभियंता	द्वितीय संयुक्त
6	बी.के. टंडेल, सहायक अभियंता	
7	रमा शंकर लाल, प्रोग्राम सहायक	
8	मो. इरफान, अवर श्रेणी लिपिक	

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
9	बिमलेश गोस्वामी, प्रारूपकार	तृतीय संयुक्त
10	ऊषा रानी, आशुलिपिक	
11	मुख्तारूल हक़, कनिष्ठ अभियंता	
12	अजय प्रताप सिंह, अवर श्रेणी लिपिक	
13	अंशुल जैन, कनिष्ठ अभियन्ता	प्रोत्साहन संयुक्त
14	ईश्वर लाल मौर्य, प्रारूपकार	
15	अनुराग, आशुलिपिक	प्रोत्साहन संयुक्त
16	रामदास सिंह, अवर श्रेणी लिपिक	

एक मिनट की स्वभाषण प्रतियोगिता – 12.09.2019

दिनांक 12.09.2019 को एक मिनट की स्वभाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में लगभग 40 शीर्षकों को चुना गया। हर शीर्षक की अलग–अलग पर्ची बनाई गई। प्रत्येक प्रतिभागी ने 2 पर्ची उठाई और एक शीर्षक को चुन कर दूसरी पर्ची वापस रख दी और चुने गए विषय पर एक मिनट का भाषण दिया। इस प्रतियोगिता के निर्णायक श्रीमती जानसी विजयन, निदेशक (एम.डी.यू.) एवं श्री मुजफ्फर अहमद, अधीक्षक अभियंता थे। इस प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करने वाले पदाधिकारियों का विवरण निम्नानुसार है:

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	बिमलेश गोस्वाामी, प्रारूपकार	प्रथम संयुक्त
2	राधा, अवर श्रेणी लिपिक	
3	अनिल कुमार जैन, उप निदेशक	
4	अंशुल जैन, कनिष्ठ अभियन्ता	द्वितीय संयुक्त
5	ललित कुमार स्यानियां, कनिष्ठ अभियंता	
6	हरिओम वार्ष्णेय, कनिष्ठ अभियंता	
7	राजीव निगम, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय संयुक्त
8	के.एच. रहमान, कनिष्ठ अभियंता	
9	अशोक भटेले, कनिष्ठ अभियन्ता	
10	रीता कश्यप, आशुलिपिक	
11	राजकंवर, एम.टी.एस.	प्रोत्साहन संयुक्त
12	के.एस. उपाध्याय, एम.टी. एस.	
13	बी.के. टंडेल, सहायक अभियंता	
14	नलिनी मोहन, आशुलिपिक	प्रोत्साहन

राजभाषा हिन्दी प्रश्नावली प्रतियोगिता – 13.09.2019

दिनांक 13.09.2019 को राजभाषा हिन्दी प्रश्नावली प्रतियोगिता आयोजित की गई इसमें पांच टीमों (सरस्वती समूह, कावेरी समूह, गंगा समूह, यमुना समूह, कृष्णा समूह) ने बड़े उत्साह से भाग लिया। जिसमें राजभाषा, सामान्य ज्ञान तथा रा.ज.वि.अ. के क्रिया–कलापों से संबंधित प्रश्नों को लिखित रूप में लिया गया। इस प्रतियोगिता के निर्णायक श्री के.पी. गुप्ता, निदेशक (तकनीकी) व राजभाषा अधिकारी एवं श्रीमती अर्चना गुप्त, सहायक निदेशक (रा.भा.) थे। इस प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करने वाले पदाधिकारियों का विवरण निम्नानुसार है:

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
गंगा समूह	के. सी. बघेल, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम संयुक्त
	राजकंवर, एम.टी.एस.	
	हरिओम वार्ष्णेय, कनिष्ठ अभियंता	
	नलिनी मोहन, आशुलिपिक	
	एस. आर. माहौर, उप निदेशक	
	अजय सिंह, वाहन चालक	
कावेरी समूह	रीता कश्यप, आशुलिपिक	द्वितीय संयुक्त
	के. एच. रहमान, कनिष्ठ अभियंता	
	इन्दू जायसवाल, कनिष्ठ अभियंता	
	अशोक भटेले, कनिष्ठ अभियन्ता	
	ईश्वर लाल मौर्य, प्रारूपकार	
कृष्णा समूह	पी. के. श्रीवास्तव, सहायक अभियंता	तृतीय संयुक्त
	राजीव निगम, कनिष्ठ अभियन्ता	
	अंशुल जैन, कनिष्ठ अभियन्ता	
	अंजू गुलाटी, प्रवर श्रेणी लिपिक	
	नरेन्द्र कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	
यमुना समूह	ऊषा रानी, आशुलिपिक	प्रोत्साहन संयुक्त
	उमेश चन्द्र एम.टी.एस.	
	अनिल कुमार जैन, उप निदेशक	
	कृष्ण स्वरूप उपाध्याय, एम. टी. एस.	
	बिमलेश गोस्वामी, प्रारूपकार	
सरस्वती समूह	राधा, अवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन संयुक्त
	राम किशन, कनिष्ठ अभियन्ता	
	संगीता मेहरोत्रा, आशुलिपिक	
	मुख्तारूल हक, कनिष्ठ अभियंता	
	ललित कुमार स्यानियां, कनिष्ठ अभियंता	

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में वर्ष भर चलाई गई 6 प्रोत्साहन योजनाओं के साथ–साथ रा.ज.वि.अ. पदाधिकारियों के बच्चों के लिए आयोजित निबंध प्रोत्साहन योजना के पुरस्कार भी हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह में महानिदेशक के कर कमलों से प्रतिभागियों ने प्राप्त किए। विवरण निम्नानुसार है:

1.मूल टिप्पण आलेखन प्रोत्साहन योजना में मुख्यालय

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	सत्य प्रकाश तोमर, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम
2	योगेश, अवर श्रेणी लिपिक	प्रथम
3	अन्जू गुलाटी, प्रवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय
4	विक्रम सिंह, अवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय
5	मिथलेश मौर्या, अवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय
6	रजनी शर्मा, अवर श्रेणी लिपिक	तृतीय
7	मोहम्मद इरफान, अवर श्रेणी लिपिक	तृतीय
8	ईश्वर लाल मौर्य, प्रारूपकार	तृतीय
9	रामदास सिंह, अवर श्रेणी लिपिक	तृतीय
10	रमेश चन्द्र, प्रारूपकार	तृतीय

मूल टिप्पण आलेखन प्रोत्साहन योजना में क्षेत्रीय कार्यालय से

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	एस. बी. सिंह, उच्च श्रेणी लिपिक, मुख्य अभियंता (उ.), लखनऊ	प्रथम
2	राजेन्द्र सिंह नयाल, अवर श्रेणी लि. पिक, मुख्य अभियंता (उ.), लखनऊ	प्रथम
3	वलसला कुमारी एस., अ.श्रे.लि, अन्वेषण प्रभाग, भोपाल	द्वितीय
4	स्नेहा अ. विश्वरूप, उ.श्रे.लि., अन्वेषण प्रभाग, भोपाल	द्वितीय
5	के. वी. वी. एस. एस. पी. राजू, अवर श्रेणी लिपिक, मुख्य अभियंता (द.), हैदराबाद	द्वितीय
6	मीनाक्षी डी. पार, अवर श्रेणी लिपिक, अन्वेषण प्रभाग, वलसाड	तृतीय
7	एम.वसुन्धरा, प्रवर श्रेणी लिपिक, मुख्य अभियंता (द.), हैदराबाद	तृतीय

2.श्रुतलेख प्रोत्साहन योजना मुख्यालय से :

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	राकेश कुमार गुप्ता, कार्यपालक अभियंता (मु.)	अधिकारी वर्ग
2	रीना वाधवा, आशुलिपिक	कर्मचारी वर्ग

श्रुतलेख प्रोत्साहन योजना में क्षेत्रीय कार्यालय से

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	श्री सुरेश कुमार गवान्डे, सहायक कार्यपालक अभियंता, नागपुर (आशुलिपिक के बिना)	अधिकारी वर्ग

3. तकनीकी लेख प्रोत्साहन योजना

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	साली अरूण गंगाधर, प्रारूपकार, अन्वेषण प्रभाग, भोपाल	प्रथम

4. प्रारूपकारों हेतु प्रोत्साहन योजना :

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	साली अरूण गंगाधर, प्रारूपकार, अन्वेषण प्रभाग, भोपाल	प्रथम

5. जटिल मामलों पर टिप्पण / आलेखन प्रोत्साहन योजना :

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	ईश्वर लाल मौर्य, प्रारूपकार	प्रथम
2	हरि ओम वार्ष्णेय, कनिष्ठ अभियंता	द्वितीय

6.बच्चों के लिए निबंध प्रोत्साहन योजना :

क्र.सं.	बच्चे का नाम	कक्षा	माता / पिता का नाम एवं पदनाम(सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	आर्यन स्यानियां	7वीं	ललित स्यानियां, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम संयुक्त
2	हर्षिता लाल	6वीं	रमा शंकर लाल	
3	शशांक भटेले	12वीं	अशोक भटेले, कनिष्ठ अभियंता	
4	ओजस वार्ष्णेय	12वीं	हरि ओम वार्ष्णेय, कनिष्ठ अभियंता	
5	यशिका गोस्वामी	6वीं	बिमलेश गोस्वामी, प्रारूपकार	द्वितीय संयुक्त
6	हरि ऊँ कृष्ण	8वीं	इंदु जायसवाल, कनिष्ठ अभियंता	
7	परी वार्ष्णेय	9वीं	हरि ओम वार्ष्णेय, कनिष्ठ अभियंता	
8	कार्तिक बघेल	5वीं	के.सी. बघेल, कनिष्ठ अभियंता	
9	लक्षिता कुमारी	8वीं	राम किशन, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय संयुक्त
10	पुनीत कुमार	10वीं	उमेश चन्द्र , एम.टी.एस.	
11	भाग्रती	10वीं	महेश कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	
12	मयंक भटेले	5वीं	अशोक भटेले, कनिष्ठ अभियंता	
13	वंशिका स्यानियां	6वीं	ललित स्यानियां, कनिष्ठ अभियंता	प्रोत्साहन संयुक्त
14	शुभम सामन्तराय	8वीं	ललित कुमार सामन्तराय, प्रशासनिक अधिकारी	
15	अदा कश्यप	9वीं	रीता कश्यप, आशुलिपिक	
16	प्रेरणा बघेल	चौथी	के.सी. बघेल, कनिष्ठ अभियंता	
17	वैभव कुमार	6वीं	राम किशन, कनिष्ठ अभियंता	
18	श्रेया	तीसरी	राधा, अवर श्रेणी लिपिक	
19	रिदा कश्यप	चौथी	रीता कश्यप, आशुलिपिक	

वर्ष 2018 – 2019 की ''राजभाषा वैजयंती'' अन्वेषण सर्किल, **हैदराबाद** को और लघु राजभाषा वैजयंती उसके अधीनस्थ अन्वेषण प्रभाग, **हैदराबाद,** अन्वेषण प्रभाग, **बंगलौर,** अन्वेषण प्रभाग, **चेन्नई,** अन्वेषण प्रभाग, **नागपुर** एवं अन्वेषण प्रभाग–।।, **नासिक** को प्राप्त हुई।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित कार्यशालाएं

दिनांक 04 सितम्बर, 2019 को मुख्यालय के समिति कक्ष में ''राजभाषा नीति का अनुपालन'' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में व्याख्यान श्रीमती अर्चना गुप्त, सहायक निदेशक (राजभाषा), रा.ज.वि.अ., नई दिल्ली ने दिया। व्याख्यान के बाद अभ्यास करवाया गया तथा अन्त में परीक्षा ली गई। निम्नलिखित पदाधिकारियों ने पुरस्कार प्राप्त किए:

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	रमेश चन्द्र, प्रारूपकार	प्रथम
2	हरिओम वार्ष्णेय, कनिष्ठ अभियंता एवं रीता कश्यप, आशुलिपिक	द्वितीय संयुक्त
3	अंशुल जैन, कनिष्ठ अभियंता एवं बिमलेश गोस्वामी, प्रारूपकार	तृतीय संयुक्त

दिनांक 19 सितम्बर, 2019 को मुख्यालय के समिति कक्ष में ''टिप्पण एवं प्रारूपण'' विषय पर अत्यंत रोचक एवं ज्ञानवर्धक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में व्याख्यान श्री परमजीत यादव, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, जल शक्ति मंत्रालय, श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली ने दिया। व्याख्यान के बाद अभ्यास करवाया गया तथा अन्त में परीक्षा ली गई। निम्नलिखित पदाधिकारियों ने पुरस्कार प्राप्त किए:

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	अंजू गुलाटी, प्रवर श्रेणी लिपिक एवं रामदास सिंह, अवर श्रेणी लिपिक	प्रथम संयुक्त
2	अजय प्रताप सिंह, अवर श्रेणी लिपिक एवं योगेश, अवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय संयुक्त
3	अनुराग, आशुलिपिक	तृतीय

समापन समारोह

दिनांक 16.09.2019 को हिन्दी पखवाड़े का समापन समारोह आयोजित किया गया। मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने पुष्प गुच्छ से महानिदेशक महोदय का स्वागत किया। श्रीमती नलिनी, श्रीमती रीता, श्रीमती रीना, श्री अंशुल जैन, श्री के.सी. बघेल ने ''हिन्द देश के निवासी'' गीत की प्रस्तुति से सभी को भाव विभोर कर दिया।

निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी ने सभी पुरस्कार विजेताओं को अग्रिम बधाई दी तथा सूचित किया कि दिनांक 14.09.2019 को आयोजित ''हिन्दी दिवस समारोह'' में महानिदेशक महोदय ने गृहमंत्री श्री अमित शाह के कर कमलों से राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त किया है और सभी को बधाई दी। उन्होंने गृहमंत्री श्री अमित शाह का हिन्दी दिवस के अवसर पर जारी संदेश प्रस्तुत किया। उन्होंने यह भी बताया कि प्रतियोगिताओं तथा प्रोत्साहन योजनाओं के सभी निर्णायकों ने निर्णय लेते समय ध्यान में रखा है कि जो पदाधिकारी हिन्दी में काम करते हैं उन्हें पूरा प्रोत्साहन मिले और दूसरे लोगों को भी प्रेरणा मिले कि वो अपना काम हिन्दी में करें।

तत्पश्चात् मुख्य अभियंता महोदय ने कहा कि आज हिन्दी दिवस और हिन्दी पखवाड़े के समापन के अवसर पर मुझे आशा ही नहीं पूरा विश्वास भी है कि हिन्दी भाषा के माध्यम से हम अपने सभी प्रकार के काम सरलता से पूरा करने में सक्षम हैं। अन्त में उन्होंने राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के लिए भी सबको बधाई दी।

महानिदेशक महोदय ने हिन्दी पखवाड़े की सभी प्रतियोगिताओं तथा प्रोत्साहन योजनाओं के विजेताओं को पुरस्कार से सम्मानित किया। उसके उपरांत महानिदेशक महोदय ने ''राजभाषा कीर्ति'' पुरस्कार सहायक निदेशक (राजभाषा) को प्रदान किया और कहा कि पूरे राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के संयुक्त प्रयासों का सुपरिणाम है कि राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण को दोबारा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ है और इसमें सहायक निदेशक की मेहनत भी शामिल है। उन्होंने

सभी को बधाई दी। अंत में महानिदेशक महोदय ने हिन्दी पखवाड़े की सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं तथा प्रोत्साहन योजनाओं के विजेताओं को पुरस्कारों को जीतने की बधाई दी और इस उत्साह को सदा कायम रखने की प्रेरणा भी दी।

अंत में सहायक निदेशक (राजभाषा) ने महानिदेशक महोदय, मुख्य अभियंता (मुख्यालय), निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी, निर्णायक की भूमिका निभाने वाले सभी वरिष्ठ अधिकारियों, कार्यपालक अभियंता (मुख्यालय) तथा उनके सहयोगियों और लेखा अनुभाग के पदाधिकारियों और अपने सहकर्मियों को हार्दिक धन्यवाद दिया।

जलपान के साथ समापन समारोह की इति हुई।

क्या आप जानते हैं?

1. हिन्दी की उत्पत्ति देवभाषा संस्कृत से हुई है जो समृद्ध और आधुनिक है। उसे कम्प्यूटर और कृत्रिम बुद्धिमत्ता में प्रयोग करने के लिए सबसे उपयुक्त भाषा माना जाता है।
2. हिन्दी की वर्णमाला दुनिया की सबसे व्यवस्थित वर्णमाला है जिसमें स्वर और व्यंजनों को अलग–अलग व्यवस्थित किया गया है।
3. हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है जो विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है।
4. हिन्दी वर्णमाला में हर ध्वनि के लिए लिपि चिन्ह है यानि हम जो भी बोलते हैं, उसे आसानी से लिखा भी जा सकता है।
5. हिन्दी भाषा का शब्दकोश बहुत विशाल है जिसमें हर कार्य के लिए बहुत से शब्द मौजूद हैं। इस शब्दकोश में शब्दों की संख्या 2.5 लाख से भी ज्यादा है और ये संख्या तेजी से लगातार बढ़ रही है।
6. हिन्दी भाषा इतनी लचीली है कि इसमें दूसरी भाषाओं के शब्द भी आसानी से समा जाते हैं।
7. हिन्दी में साइलेंट लेटर्स नहीं होते हैं इसलिए इसके लेखन और उच्चारण में शुद्धता रहती है।
8. इस भाषा में निर्जीव वस्तुओं के लिए भी लिंग का निर्धारण होता है।
9. हिन्दी ऐसी व्यावहारिक भाषा है जिसमें हर सम्बन्ध–रिश्ते के लिए अलग–अलग शब्द दिए गए हैं।
10. आज दुनिया में दूसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा के रूप में हिन्दी ने अपनी जगह बनायी है।
11. हिन्दी भाषा की पाँच उप–भाषाएँ हैं और कम से कम सोलह बोलियां प्रचलन में हैं।
12. सोशल मीडिया के इस दौर में इंटरनेट पर हिन्दी का प्रयोग बहुत तेजी से बढ़ रहा है और फेसबुक, ट्विटर पर भी हिन्दी का प्रयोग बहुत बढ़ा है।

क्षेत्रीय कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

मुख्य अभियंता (उत्तर) के कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़ा–2019 का आयोजन

मुख्य अभियंता (उत्तर), रा.ज.वि.अ., लखनऊ

मुख्य अभियंता (उत्तर), रा.ज.वि.अ., लखनऊ में दिनांक 01 से 15 सितंबर, 2019 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है:

प्रश्नमंच (मौखिक) प्रतियोगिता

समूह	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
समूह 'अ'	राजीव कनौजिया, सहायक अभियन्ता	प्रथम संयुक्त
	जय प्रकाश, एम.टी.एस.	
	ए. एच. चौधरी, एम.टी.एस.	
समूह 'स'	राजेन्द्र सिंह नयाल, अवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय संयुक्त
	अहीश कुमार, कनिष्ठ अभियन्ता	
	चन्द्र बहादुर थापा, वाहन चालक	
समूह 'द'	बी. एस. उचारिया, उपनिदेशक	तृतीय संयुक्त
	राहुल सक्सेना, कनिष्ठ अभियन्ता	
	एस. बी. सिंह, प्रवर श्रेणी लिपिक	
समूह 'ब'	सुभाष चन्द्र चौधरी, कनिष्ठ अभियन्ता	प्रोत्साहन संयुक्त
	विनय सलूजा, कनिष्ठ लेखाकार	

तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	सुभाष चन्द्र चौधरी, कनिष्ठ अभियन्ता	प्रथम संयुक्त
2.	राजेन्द्र सिंह नयाल, अवर श्रेणी लिपिक	
3.	राहुल सक्सेना, कनिष्ठ अभियन्ता	द्वितीय संयुक्त
4.	विनय सलूजा, कनिष्ठ लेखाकार	
5.	अहीश कुमार, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय संयुक्त
6.	जय प्रकाश, एम.टी.एस.	
7.	चन्द्र बहादुर थापा, वाहन चालक	प्रोत्साहन संयुक्त
8.	दल बहादुर, एम.टी.एस.	
9.	एस. बी. सिंह, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन संयुक्त
10.	ए. एच. चौधरी, एम.टी.एस.	

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., लखनऊ

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., लखनऊ में दिनांक 01 से 15 सितंबर, 2019 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है।

नारा लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	संजय त्रिपाठी, स.अ.	प्रथम संयुक्त
2.	आलोक सिंह, क.अ.	
3.	प्रमोद कुमार, क.अ.	द्वितीय संयुक्त
4.	एस. के. बल, प्र.श्रे.लि.	
5.	बिपिन कुमार, एम. टी. एस.	तृतीय
6.	बिबियाना सांगा, आशुलिपिक	प्रोत्साहन
7.	अशोक कुमार शुक्ला, अ. श्रे. लि.	प्रोत्साहन

प्रश्नमंच प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	संजय त्रिपाठी, स.अ. एवं	प्रथम संयुक्त
2.	एस. के. बल, प्र.श्रे.लि.	
3.	आलोक सिंह, क.अ. एवं	द्वितीय संयुक्त
4.	बिबियाना सांगा, आशुलिपिक	
5.	प्रमोद कुमार, क.अ.	तृतीय
6.	अशोक कुमार शुक्ला, अ. श्रे. लि.	प्रोत्साहन
7.	बिपिन कुमार, एम. टी. एस.	प्रोत्साहन

मुख्य अभियंता (उत्तर) कार्यालय में हिन्दी पखवाड़े की झलकियां

अन्वेषण सर्किल एवं अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., ग्वालियर

अन्वेषण सर्किल एवं अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., ग्वालियर में संयुक्त रूप से दिनांक 01 से 15 सितंबर, 2019 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। उद्घाटन समारोह में कार्यालयी कार्य में राजभाषा के अधिकतम उपयोग करने का निवेदन किया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है।

अन्वेषण सर्किल, रा.ज.वि.अ., ग्वालियर

श्रुतलेख प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	प्रवीण दीक्षित, अवर श्रेणी लिपिक	प्रथम
2.	दीपक नाफड़े, आशुलिपिक श्रेणी–।	द्वितीय
3.	विनीता शर्मा, कार्यक्रम सहायक	तृतीय
4.	पी.एन. सोनी, क.अ.	प्रोत्साहन
5.	रविन्द्र सेठी, प्रधान लिपिक	प्रोत्साहन

प्रश्नमंच प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	विनीता शर्मा, कार्य.सहा.	सभी पदाधिकारियों ने संयुक्त रूप से भाग लिया ।
2.	पी.एन. सोनी, क.अ.	
3.	डी.के. गोयल, स.अ.अ.	
4.	दीपक नाफड़े, आशुलिपिक श्रेणी –।	
5.	प्रवीण दीक्षित, अ.श्रे.लि.	
6.	रविन्द्र सेठी, प्रधान लिपिक	
7.	गीता बाथम, अ.श्रे.लि.	

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., ग्वालियर

श्रुतलेख प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	राकेश कुमार, प्रारूपकार	प्रथम
2.	सुभाष सक्सेना, प्र.श्रे.लि.	द्वितीय
3.	रमाकान्त मिश्रा, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय संयुक्त
4.	रंजना घोटणकर, प्र.लि.	
5.	नवीन सक्सेना, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन
6.	प्रिया विज, आशुलिपिक – ।।	प्रोत्साहन संयुक्त
7.	सचिन कुमार, क.अ.	

प्रश्नमंच प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	रमाकान्त मिश्रा, क.अ.	सभी पदाधिकारियों ने संयुक्त रूप से भाग लिया।
2.	राकेश कुमार, प्रारूपकार	
3.	सुभाष सक्सेना, प्र.श्रे.लि.	
4.	सचिन कुमार, क.ले.	
5.	नवीन सक्सेना, प्र.श्रे.लि.	
6.	रंजना घोटणकर, प्र.लि.	
7.	प्रिया बिज, आशुलिपिक–।।	

अन्वेषण सर्किल एवं अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., पटना एवं अन्वेषण उप प्रभाग रांची

अन्वेषण सर्किल एवं अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., पटना एवं अन्वेषण प्रभाग, अन्वेषण उप प्रभाग, रांची में दिनांक 01 से 15 सितंबर, 2019 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। उद्घाटन समारोह में कार्यालयी कार्य में राजभाषा के अधिकतम उपयोग करने का निवेदन किया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार हैं:

क्र. सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	प्रतियोगिता का नाम और पुरस्कार			
		त्वरित भाषण	श्रुत लेखन	निबन्ध लेखन	शब्दार्थ
1.	बी.के. सिंह, सहायक अभियंता	प्रथम	द्वितीय	द्वितीय	तृतीय
2.	पी.के. राय, कनिष्ठ अभियंता	––	प्रथम	प्रथम	प्रथम
3.	हिमाँशु टुडू, कनिष्ठ अभियंता	––	प्रोत्साहन	प्रोत्साहन	प्रोत्साहन
4.	आशीष श्योरेन, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय	––	––	––
5.	यू.के. रथ, प्रवर श्रेणी लिपिक, भुवनेश्वर	द्वितीय	––	––	––
6.	करण कुमार, आशुलिपिक श्रेणी –।।	प्रोत्साहन	तृतीय	तृतीय	द्वितीय
7.	निरंजन स्वाइँ, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन	––	––	––
8.	अरविंद कुमार वर्मा, चालक श्रेणी –।	––	प्रोत्साहन	प्रोत्साहन	प्रोत्साहन

अन्वेषण उप प्रभाग, रांची

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	प्रतियोगिता का नाम और पुरस्कार	
		प्रश्नमंच	शब्दावली अनुवाद एवं निबन्ध लेखन
1.	लक्ष्मण टुडू, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम	प्रथम
2.	आर.सी. बेहुरा, एम.टी.एस.	द्वितीय	तृतीय
3.	जी.सी. तराई, वाहन चालक	तृतीय	प्रोत्साहन
4.	एस.के. चम्पती, एम.टी.एस.	प्रोत्साहन	प्रोत्साहन
5.	सुखसाय राम, एस.टी.एस.	प्रोत्साहन	द्वितीय

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., झांसी

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., झांसी में दिनांक 01 से 15 सितंबर, 2019 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार हैः

श्रुतलेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	शुभम जैन, क.अ.	प्रथम
2.	आर.के. बिजोरिया, स.अ.	द्वितीय
3.	बी.डी. शर्मा, क.अ.	तृतीय संयुक्त
4.	ओम प्रकाश लिखार, प्रधान लिपिक	
5.	राजेश कुमार, ड्राइवर	प्रोत्साहन संयुक्त
6.	सुरेश चन्द, एम.टी.एस.	
7.	डी.सी. साहू, प्र.श्रे.लि.	प्रोत्साहन (गैर हिन्दी भाषी)

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	शुभम जैन, क.अ.	सभी पदाधिकारियों ने संयुक्त रूप से भाग लिया।
2.	आर.के. बिजोरिया, स.अ.	
3.	जी.एस. सोनी, क.अ.	
4.	बी.डी. शर्मा, क.अ.	
5.	ओम प्रकाश लिखार, प्रधान लिपिक	
6.	डी.सी. साहू, अ.श्रे.लि.	
7.	राजेश कुमार, वाहन चालक	
9.	सुरेश चन्द, एम.टी.एस.	

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., भोपाल

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., भोपाल में दिनांक 01 से 15 सितंबर, 2019 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार हैः

भाुद्ध लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	वी.पी. नेमा, क.अ.	प्रथम संयुक्त
2.	पी.के. राठौर, क.अ.	
3.	स्नेहा अ. विश्वरूप, उ.श्रे.लि.	
4.	एस.के.गावंडे, स.अ.अ.	द्वितीय संयुक्त
5.	आर.के.पटेल, क.अ.	
6.	साली अरूण गंगाधर, प्रा.–।।	तृतीय संयुक्त
7.	रंजना शुक्ला, कम्प्यूटर ऑपरेटर	
8.	वलसला कुमारी, एस. अ.श्रे.लि.	प्रोत्साहन (गैर हिन्दी भाषी)
9.	बद्री प्रसाद एम.टी.एस.	प्रोत्साहन

हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	वी.पी. नेमा, क.अ.	प्रथम
2.	एन.डी.शुक्ला, क.अ.	द्वितीय
3.	आर.के.पटेल, क.अ.	तृतीय
4.	मर्सी कोशी, प्र.लि.	प्रोत्साहन
5.	पी.के. राठौर, क.अ.	प्रोत्साहन

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., कोलकाता

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., कोलकाता में दिनांक 01 से 15 सितंबर, 2019 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार हैं:

आलेखन, टिप्पण एवं शब्दावली प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	एस.सी. पारूई, कनिष्ठ अभियन्ता,	प्रथम संयुक्त
2.	एस.बी. धीरसामन्त, प्रवर श्रेणी लिपिक	
3.	जे. देवा सुन्दर, स.अ.अ.,	द्वितीय संयुक्त
4.	पी.के. राउतराय, प्रवर श्रेणी लिपिक	
5.	अजय विश्वास, कनिष्ठ अभियन्ता,	तृतीय संयुक्त
6.	पी.के. सामल, एम.टी.एस.	
7.	बी.एल. नायक, प्रवर श्रेणी लिपिक,	प्रोत्साहन
8.	जे.बी. सेठी, एम.टी.एस.	प्रोत्साहन

निबंध लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	पी.के. राउतराय, प्रवर श्रेणी लिपिक,	प्रथम संयुक्त
2.	जी.पी. बेहुरिआ, प्रवर श्रेणी लिपिक	
3.	एस.सी. पारूई, कनिष्ठ अभियन्ता	द्वितीय
4.	एस.बी. धीरसामन्त, प्रवर श्रेणी लिपिक,	तृतीय संयुक्त
5.	बी.एल. नाएक, प्रवर श्रेणी लिपिक	
6.	जी.बी. सामल. एस.टी.एस.	प्रोत्साहन
7.	पी.के. सामल, एम.टी.एस.	प्रोत्साहन

कोलकाता कार्यालय में हिन्दी पखवाड़े की झलकियां

मुख्य अभियंता (दक्षिण) के कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़ा–2019 का आयोजन

मुख्य अभियंता (दक्षिण), अन्वेषण सर्किल एवं अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद

मुख्य अभियंता (दक्षिण), अन्वेषण सर्किल एवं अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद में संयुक्त रूप से दिनांक 01 से 15 सितंबर, 2019 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार हैं:

शब्दावली प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	कार्यालय	पुरस्कार
1.	एम. श्रीनिवास, प्रधान लिपिक	अ.वृ, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रथम
2.	के.एस. नायुडु, स.अ.	कार्यालय मुख्य अभियंता (द.), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	द्वितीय
3.	के.वी.वी.एस.एस.पी. राजु, अ.श्रे.लि.	'वही'	तृतीय
4.	घंटा निर्मला, प्रधान प्रारूपकार	'वही'	प्रोत्साहन
5.	एम. सत्यनारायण, निजी सचिव	'वही'	प्रोत्साहन

प्रश्नमंच प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	कार्यालय	पुरस्कार
1.	के.एस.नायुडु, स.अ.	कार्यालय मुख्य अभियंता (द.), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रथम संयुक्त
2.	आर. विनोद कुमार, स.अ.	अ.वृ. रा. ज.वि.अ., हैदराबाद	
3.	एन. सतीश कुमार, क.अ.	अ.प्र. रा. ज.वि.अ., हैदराबाद	
4.	के. गिरिधर, प्रधान लिपिक	कार्यालय मुख्य अभियंता (द.), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	द्वितीय संयुक्त
5.	सी. महेन्द्र राज, प्रारूपकार – II	अ.वृ. रा. ज.वि.अ., हैदराबाद	
6.	रामकृष्णा, चालक श्रेणी – III	कार्यालय मुख्य अभियंता (द.), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
7.	एम. सत्यनारायण, निजी सचिव	कार्यालय मुख्य अभियंता (द.), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	तृतीय संयुक्त
8.	थामस जार्ज, आशुलिपिक	अ.प्र. रा. ज.वि.अ., हैदराबाद	
9.	आर. प्रकाश बाबू, प्रवर श्रेणी लिपिक	अ.प्र. रा. ज.वि.अ., हैदराबाद	
10.	पी. हरिप्रसाद, कनिष्ठ अभियंता	अ.प्र. रा. ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रोत्साहन संयुक्त
11.	डी. श्यामला, प्रधान लिपिक	अ.प्र. रा. ज.वि.अ., हैदराबाद	
12.	जी. नरसिम्हा राव, प्रवर श्रेणी लिपिक	अ.प्र. रा. ज.वि.अ., हैदराबाद	
13.	सी.एच. लिंगय्या, सहायक अभियंता	अ.प्र. रा. ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रोत्साहन संयुक्त
14.	टी.एस.के.रेड्डी, प्रवर श्रेणी लिपिक	अ.प्र. रा. ज.वि.अ., हैदराबाद	
15.	के.वी.वी.एस.एस.पी. राजू, अ.श्रे.लि.	कार्यालय मुख्य अभियंता (द.), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	

निबंध लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	कार्यालय	पुरस्कार
1.	के.एस.नायुडु, स.अ.	कार्यालय मुख्य अभियंता (द.), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रथम संयुक्त
2.	एम. श्रीनिवास, प्रधान लिपिक	अ.वृ. रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
3.	बी.के.एस.ठाकुर, स.अ.अ.	अ.वृ. रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	द्वितीय संयुक्त
4.	घंटा निर्मला, प्रधान प्रारूपकार	कार्यालय मुख्य अभियंता (द.), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	कार्यालय	पुरस्कार
5.	एम. विजयलक्ष्मी, प्रारूपकार – I	अ.प्र. रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	तृतीय संयुक्त
6.	के.वि.वि.एस.एस.पी. राजू, अ.श्रे.लि.	कार्यालय मुख्य अभियंता (द.), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
7.	पी. हरिप्रसाद, कनिष्ठ अभियंता	अ.प्र. रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रोत्साहन
8.	थॉमस जार्ज, आशु. लिपिक	अ.प्र. रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रोत्साहन संयुक्त
9.	एम. सत्यनारायण, निजी सचिव	कार्यालय मुख्य अभियंता (द.), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	

हैदराबाद कार्यालय में हिन्दी पखवाड़े की झलकियां

अन्वेषण प्रभाग–I एवं II, रा.ज.वि.अ., नासिक

अन्वेषण प्रभाग–I व II रा.ज.वि.अ., नासिक में दिनांक 01 से 15 सितंबर, 2019 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों / कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है:

लिखित प्रश्न उत्तर प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	अरूण रंगारे, सहायक अभियंता	प्रथम
2.	चेतन शर्मा, अ.श्रे.लिपिक	द्वितीय
3.	एन.जे.सरोदे, निजी सचिव	तृतीय

श्रुतलेख, शब्दार्थ एवं व्याकरण लिखित प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	व्ही.एम.भोंसले, प्र.श्रे.लि.	प्रथम संयुक्त
2.	चेतन शर्मा, अ.श्रे.लि.	
3.	आर.के.झाडे, प्रारूपकार–।।	द्वितीय संयुक्त
4.	एस.व्ही.अयाचित, प्र.श्रे.लि.	
5.	आर.एम.सैय्यद, प्रारूपकार–।	तृतीय संयुक्त
6.	एम.एन.राव, अ.अ.–।	
7.	उदय पवन, कनिष्ठ अभियंता	प्रोत्साहन
8.	राम मोहन राव, कनिष्ठ अभियंता	प्रोत्साहन (गैर हिन्दी भाषी)

प्रश्न उत्तर प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	व्ही.एम.भोसले, प्र.श्रे.लि.	प्रथम संयुक्त
2.	चेतन शर्मा, अ.श्रे.लि.	
3.	पी.ए.मालगे, चालक–।	
4.	एम.के.उद्गटी, कनिष्ठ अभियंता	द्वितीय संयुक्त
5.	राम मोहन राव, कनिष्ठ अभियंता	
6.	उदय पवन, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय संयुक्त
7.	ए.आर.भडाले, एम.टी.एस.	
8.	आर.एम. सैय्यद, प्रारूपकार–।	प्रोत्साहन संयुक्त (गैर हिन्दी भाषी)
9.	आर.एन.जाधव, एम.टी.एस.	
10.	पी.श्रीनिवासुलु, स.अ.अ.	प्रोत्साहन संयुक्त
11.	एस.व्ही.अयाचित, प्र.श्रे.लि.	
12.	आर.के.झाडे, प्रारूपकार–।।	

नासिक कार्यालय में हिन्दी पखवाड़े की झलकियां

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., नागपुर

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., नागपुर में दिनांक 01 से 15 सितंबर, 2019 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। उद्घाटन समारोह में कार्यालयी कार्य में राजभाषा के अधिकतम उपयोग करने का निवेदन किया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है :

हिन्दी भाषा ज्ञान (राजभाषा, शब्दावली, शुद्ध लेखन) प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	रूपराव आर हेडाऊ, स.अ.	प्रथम
2.	एस.सुरेश, स.अ.	द्वितीय
3.	यतिन मल्होत्रा, क.अ.	तृतीय
4.	टी.बी.बुर्डे, प्र.लि.	प्रोत्साहन संयुक्त
5.	डी.रामान्जनेयुलू, प्र.श्रे.लि.	
6.	एस.रहीम, प्र.श्रे.लि.	प्रोत्साहन संयुक्त
7.	ए.के.राय, अ.श्रे.लि.	

प्रश्न मंच प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	एस. सुरेश, स.अ.	प्रथम
2.	रूपराव आर हेडाऊ, स.अ.	द्वितीय
3.	एस. रहीम, प्र.श्रे.लि.	तृतीय
4.	यतिन मल्होत्रा, क.अ.	प्रोत्साहन संयुक्त
5.	डी.रामान्जनेयुलु, प्र.श्रे.लि.	
6.	टी.बी.बुर्डे, प्र.लि.	प्रोत्साहन संयुक्त
7.	ए.के.राय, अ.श्रे.लि.	

नागपुर कार्यालय में हिन्दी पखवाड़े की झलकियां

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., बेंगलूरू

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., बेंगलूरू में दिनांक 01 से 15 सितंबर, 2019 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों / कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है :

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	प्रतियोगिताओं का नाम प्रश्नोत्तरी	अनुवाद
1.	डी. जीवमलिनी, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम संयुक्त	–
2.	एस.नारायण मुर्ति, प्रारूपकार– I I		
3.	बी.एन.इन्द्राणी, अ.श्रे.लि.		
4.	एच.यु.प्रभाकर, अ.श्रे.लि.		
5.	पी. चेन्नय्या, सहायक अभियंता	द्वितीय संयुक्त	–
6.	महादेवी एस.ए. बिरादर, प्रारूपकार– I I		
7.	संध्या कुलकर्णी, प्रारूपकार– I I		
8.	ए.आर.रेखा सिंह, अधीक्षक– I I		
9.	एन.एस. भाग्य, प्रारूपकार– I I	तृतीय संयुक्त	–
10.	भारती श्रीराम, आशुलिपिक ग्रेड– I I		
11.	गीता एस.के., प्र.श्रे.लि.		
12.	ए. बालकृष्णन, एम.टी.एस.		
13.	शिवन्ना, सहायक अभियंता	प्रोत्साहन संयुक्त	–
14.	एन. पापन्ना, प्रारूपकार– I I I		
15.	जी.राजन्ना, एम.टी.एस.		
16.	शिवन्ना, सहायक अभियंता	–	प्रथम संयुक्त
17.	महादेवी एस.ए. बिरादर, प्रारूपकार– I I		
18.	एस.नारायण मूर्ति, प्रारूपकार	–	
19.	बी.एन. ईन्द्राणी, अ.श्रे.लि.		
20.	ए.आर. रेखा सिंह, अधीक्षक– I I	–	द्वितीय संयुक्त
21.	एन.पापन्ना, प्रारूपकार– I I I		
22.	ए. बालकृष्णन, एम.टी.एस.		
23.	जी. राजन्ना, एम.टी.एस.		
24.	एन.एस. भाग्य, प्रारूपकार– I I	–	तृतीय संयुक्त
25.	भारती श्रीराम, आशुलिपिक ग्रेड– I I		
26.	गीता एस.के., प्र.श्रे.लि.		
27.	एच.यु.प्रभाकर, अ.श्रे.लि.		
28.	पी.चेन्नय्या सहायक अभियंता	–	प्रोत्साहन संयुक्त
29.	संध्या कुलकर्णी, प्रारूपकार– I I		

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., चेन्नई

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., चेन्नई में दिनांक 01 से 15 सितंबर, 2019 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों / कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है:

हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	एस. जेम्स, सहायक अभियंता	प्रथम संयुक्त
2.	एस. राजा, क. अ.	
3.	सी. सुब्रमणी, एम.टी.एस.	
4.	सी. एन. मुरली, एम.टी.एस.	
5.	बाशा, स.अ.	द्वितीय संयुक्त
6.	पी. वेंकट राव, क.ले.अ.	
7.	टी. महेन्द्रन, क.अ.	
8.	एस. सेकरन, एम.टी.एस.	
9.	एस. मुहम्मद इस्माईल सिधिक, क.अ.	तृतीय संयुक्त
10.	गोमती, उ.श्रे.लि.	
11.	बी. मनवालण, एम.टी.एस.	
12.	वी. सुकुमारण, एम.टी.एस.	
13.	आर. पाण्डुरंगन, प्र.श्रे.लि.	प्रोत्साहन
14.	वि.एस.ए. मुहम्मद अयुब, प्र.श्रे.लि.	प्रोत्साहन संयुक्त
15.	के. वल्सराजन, एम.टी.एस.	

अनुवाद प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	बाशा, स.अ.	प्रथम संयुक्त
2.	पी. वेंकट राव, क.ले.अ.	
3.	गोमती, उ.श्रे.लि.	
4.	के. वल्सराजन, एम.टी.एस.	
5.	एस. मुहम्मद इस्माईल सिधिक, क.अ.	द्वितीय संयुक्त
6.	एस. राजा, क.अ.	
7.	बी. मनवालण, एम.टी.एस.	
8.	एस. सेकरन, एम.टी.एस.	
9.	एस. जेम्स, सहायक अभियंता	तृतीय संयुक्त
10.	सी. सुब्रमणी, एम.टी.एस.	
11.	आर. पाण्डुरंगन, प्र.श्रे.लि.	
12.	वि.एस.ए. मुहम्मद अयुब, प्र.श्रे.लि.	प्रोत्साहन
13.	सी.एन. मुरलि, एम.टी.एस.	प्रोत्साहन

चेन्नई कार्यालय में हिन्दी पखवाड़े की झलकियां

अन्वेषण सर्किल एवं अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., वलसाड

अन्वेषण सर्किल एवं अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., वलसाड में दिनांक 01 से 15 सितंबर, 2019 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों / कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान दोनों कार्यालयों में अलग–अलग प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है:

अन्वेषण सर्किल

कविता एवं गीत प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	जे.डी. पटेल, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम संयुक्त
2.	रीटा ए. नायक, प्र.श्रे.लि.	
3.	कल्पना ए. परमार, प्र.श्रे.लि.	

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
4.	क्रिष्णा पी. देसाई, प्र.श्रे.लि,	द्वितीय संयुक्त
5.	दीपिका आर. पटेल, अ.श्रे.लि.	
6.	एस.एम. मिस्त्री, आशुलिपिक–।	तृतीय संयुक्त
7.	अशोक सी. पटेल, चालक श्रेणी–।	
8.	विनोद डी. पटेल, एम.टी.एस.	
9.	उपेन्द्र चौधरी, कनिष्ठ अभियंता	प्रोत्साहन संयुक्त
10.	के.के. धोकिया, प्रारूपकार श्रेणी–।।	

अन्वेषण प्रभाग

कविता एवं गीत प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	जे. बी. जानी, कनिष्ठ लेखाकार	प्रथम संयुक्त
2.	एस.बी. एकबोटे, प्र.श्रे.लि.	
3.	एम. डी. ढीम्मर, कनिष्ठ अभियंता	द्वितीय संयुक्त
4.	मीनाक्षी डी. पार, अ.श्रे.लि.	
5.	सरोज बाला शर्मा, प्रधान लिपिक	तृतीय संयुक्त
6.	एन.सी. आशरा, प्रारूपकार श्रेणी–।।	
7.	आर. आर. पटेल, स.अ.	प्रोत्साहन

प्रश्नमंच प्रतियोगिता

प्रश्न मंच में अन्वेषण सर्किल, रा.ज.वि.अ., वलसाड एवं अन्वेषण प्रभाग, वलसाड के प्रतियोगियों से प्रश्न पूछे गये एवं ज्यादातर प्रतियोगियों को पुरस्कार प्रदान किये गए।

वलसाड कार्यालय में हिन्दी पखवाड़े की झलकियां

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., वडोदरा

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., वडोदरा में दिनांक 01 से 15 सितंबर, 2019 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है :

प्रश्नमंच प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	जे.डी.पांडे, स.अ.	सभी पदाधिकारियों ने संयुक्त रूप से भाग लिया।
2.	डी.बी.ओझा, क.अ.	
3.	डी.बी.शाह, प्र.लि.	
4.	ओम प्रकाश कुमार, आशुलिपिक–II	
5.	वाय.जे.व्यास, प्रा.श्रेणी–II	
6.	ए.एन.मेहता, प्रा.श्रेणी.–III	
7.	डी.बी.बारोट, चालक श्रेणी.–II	

निबंध प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	जे.डी.पांडे, स.अ.	प्रथम संयुक्त
2.	डी.बी. शाह, प्र.लि.	
3.	ओम प्रकाश कुमार, आशुलिपिक.–II	द्वितीय संयुक्त
4.	वाय.जे.व्यास, प्रारूपकार श्रेणी. –II	
5.	डी.बी.ओझा, क.अ.	तृतीय संयुक्त
6.	डी.बी. बारोट, चालक श्रेणी. –II	
7.	ए.एन. मेहता, प्रा.श्रेणी. –III	प्रोत्साहन

अन्वेषण सर्किल, अन्वेषण प्रभाग, भुवनेश्वर

अन्वेषण सर्किल, अन्वेषण प्रभाग, भुवनेश्वर, रा.ज.वि.अ., में दिनांक 01 से 15 सितंबर, 2019 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है :

काव्य पाठ प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	के. पी. राव, सहायक अभियंता	प्रथम संयुक्त
2.	एम. एम. धल, आशुलिपिक श्रेणी –II	
3.	ए. पी. पात्र, प्रवर श्रेणी लिपिक	
4.	विवके दाधीच, कनिष्ठ लेखाकार	
5.	निरंजन पाठक, आशुलिपिक श्रेणी –II	
6.	बी. रविचन्दर, अधिशासी अभियंता	द्वितीय संयुक्त
7.	आर. ए. श्रीनिवास, सहायक अधिशासी अभियंता	
8.	एम. कोदण्डराम, कनिष्ठ अभियंता	
9.	कुमारी सुजाता सेनापति, कनिष्ठ अभियंता	
10.	कुमारी बी. एल. देई, प्रधान लिपिक	
11.	बी. महान्ती, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय संयुक्त
12.	ए. पी. बास्की, कनिष्ठ अभियंता	
13.	एस. आर. महापात्र, प्रारूपकार श्रेणी –III	
14.	एस. महान्ती, प्रारूपकार श्रेणी –III	
15.	बी. के. बराल, प्रवर श्रेणी लिपिक	
16.	बी. सी. बारिक, प्रधान लिपिक	
17.	ए. नायक, अवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन संयुक्त
18.	आर. एन. पण्डा, प्रवर श्रेणी लि. पिक	
19.	के. के. महान्ती, प्रारूपकार श्रेणी –II	
20.	आर. के. मल्लिक, एम.टी.एस.	
21.	जे. के. मुदुली, चालक विशेष श्रेणी	प्रोत्साहन संयुक्त
22.	एस. एन. गौड़, एम.टी.एस.	
23.	एस. मोहन राव, एम.टी.एस.	
24.	पी. के. आचार्य, एम.टी.एस.	

निबन्ध प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	विवेक दाधीच, कनिष्ठ लेखाकार	प्रथम संयुक्त
2.	ए. पी. बास्की, कनिष्ठ अभियंता	
3.	बी. महान्ती, कनिष्ठ अभियंता	
4.	बी. के. बराल, प्रवर श्रेणी लिपिक	
5.	निरंजन पाठक, आशुलिपिक श्रेणी –II	
6.	उदय कुमार रथ, प्रवर श्रेणी लिपिक	
7.	एम. कोदण्ड राम, कनिष्ठ अभियंता	द्वितीय संयुक्त
8.	के. पी. राव, सहायक अभियंता	
9.	आर. ए. श्रीनिवास, सहायक अधिशासी अभियंता	
10.	बी. सी. बारिक, प्रधान लिपिक	
11.	ए. पी. पात्र, प्रवर श्रेणी लिपिक	
12.	जे. महालिक, प्रारूपकार श्रेणी –III	
13.	कुमारी बी. एल. देई, प्रधान लिपिक	
14.	एस. आर. महापात्र, प्रारूपकार श्रेणी –III	तृतीय संयुक्त
15.	कुमारी सुजाता सेनापति, कनिष्ठ अभियंता	
16.	आर. एन. पण्डा, प्रवर श्रेणी लिपिक	
17.	के. के. महान्ती, प्रारूपकार श्रेणी –II	
18.	आर. के. मल्लिक, एम.टी.एस.	
19.	एम. एम. धल, आशुलिपिक श्रेणी –II	
20.	ए. के. पाढ़ी, वाहन चालक श्रेणी –I	
21.	ए. नायक, अवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन संयुक्त
22.	एस. एन. गौड़, एम.टी.एस.	
23.	उमा कान्त मिश्र, वाहन चालक श्रेणी –II	
24.	एस. महान्ती, प्रारूपकार श्रेणी –III	
25.	जे. के. मुदुली, चालक विशेष श्रेणी	
26.	धनेश्वर मलिक, प्रवर श्रेणी लिपिक	
27.	एस. मोहन राव, एम.टी.एस.	
28.	आरिफ हुसैन, एम.टी.एस.	

अन्वेषण उप–प्रभाग, रा.ज.वि.अ., राजामुंद्री

अन्वेषण उप–प्रभाग, राजामुंद्री, रा.ज.वि.अ., में दिनांक 01 से 15 सितंबर, 2019 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों / कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है :

प्रश्नमंच प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	बी. सुब्रमन्यम, एम.टी.एस.	प्रथम
2.	डी. जे. प्रसूना, कनिष्ठ अभियंता	द्वितीय
3.	के. आदिविष्णुवु, प्रवर श्रेणी लिपिक	तृतीय

निबन्ध लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम और पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	डी. जे. प्रसूना, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम
2.	बी. सुब्रमन्यम, एम.टी.एस.	द्वितीय
3.	के. आदिविष्णुवु, प्रवर श्रेणी लिपिक	तृतीय

जल की व्यथा

*राजीव निगम

हे मानव! सुन मेरे जीवन की कथा,

आज मैं कहता हूँ अपने मन की व्यथा।

जल प्रकृति में जीवन का आधार है,

अन्न व औषधि भी जल के उपहार हैं।

जल प्रकृति में सभी तापों को हर लेता है,

वन्य जीवों को भी जीवन यही देता है।

जल शक्ति से ऊर्जा तुम सब पाते,

फिर भी नष्ट करने से बाज नहीं आते।

जल मनुष्य को कमाने का साधन भी देता है,

पर मनुष्य जल की ही गुणवत्ता हर लेता है।

जल की भी अपनी प्राण–आत्मा होती है,

जब लोग इसे दूषित करते हैं तो रोती है।

जल किसी व्यक्ति, राज्य या देश का अधिकार नहीं,

यह जीवों को प्रकृति की देन है कोई व्यापार नहीं।

जल सभी जीवों के हर क्रियाकलाप का हिस्सा है,

संरक्षित न कर सके तो धरा पर जीवन किस्सा है।

ऐ मनुष्य! अब भी तू मुझे दूषित करने से बाज ना आयेगा,

तो याद रख, भविष्य में तू स्वयं ही बहुत पछतायेगा।

*कनिष्ठ अभियंता, नई दिल्ली

तकनीकी संगोष्ठी की रिपोर्ट

विषय : ''जल संसाधन के ईष्टतम उपयोग में प्रबंधन की भूमिका''

उद्घाटन सत्र

दिनांक 14–15 जून, 2019 को ''जल संसाधन के ईष्टतम उपयोग में प्रबंधन की भूमिका'' विषय पर हैदराबाद में तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उद्घाटन समारोह में माननीय श्री आर के जैन, अध्यक्ष, गोदावरी नदी प्रबंधन बोर्ड, हैदराबाद मुख्य अतिथि थे तथा श्री सोमेश कुमार, विशेष मुख्य सचिव, सिंचाई एवं कमान क्षेत्र विकास, हैदराबाद विशिष्ट अतिथि थे। श्री एम के श्रीनिवास, महानिदेशक, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण ने इस समारोह की अध्यक्षता की। श्री आर.के. जैन, मुख्य अभियंता (मुख्यालय), श्री एन.सी. जैन मुख्य अभियंता (उत्तर), डॉ. आर. एन. संखुआ, मुख्य अभियंता (दक्षिण) तथा श्री के.पी. गुप्ता, निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी भी इस अवसर पर मंच पर पदासीन थे। राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण की ओर से सभी सम्मान्य जनों का पुष्प गुच्छ से स्वागत किया गया। सभी गणमान्य अधिकारियों ने दीप प्रज्ज्वलन कर संगोष्ठी का शुभारंभ किया। तत्पश्चात् श्रीमती भावना जोशी ने सरस्वती वंदना से वातावरण को और अधिक पवित्र बना दिया। इसके पश्चात सभी सम्मान्य अधिकारियों ने इस अवसर पर प्रकाशित स्मारिका का लोकार्पण किया। स्मारिका में सचिव, जल शक्ति मंत्रालय, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, भारत सरकार, श्री यू पी सिंह; एवं महानिदेशक, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, श्री एम के श्रीनिवास के संदेश, मुख्य अभियंता (मुख्यालय), राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, श्री आर.के. जैन; निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, श्री के. पी. गुप्ता द्वारा शुभकामना तथा सहायक निदेशक (राजभाषा), राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, श्रीमती अर्चना गुप्त द्वारा प्रस्तावना के साथ राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण एवं मंत्रालय के अन्य संगठनों के 27 लेखकों के लेख प्रकाशित किए गए।

श्री के.पी. गुप्ता, निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी ने अपने स्वागत भाषण में मुख्य अतिथि, माननीय श्री आर. के. जैन, अध्यक्ष, गोदावरी नदी प्रबंधन बोर्ड, हैदराबाद, विशिष्ट अतिथि, श्री सोमेश कुमार, विशेष मुख्य सचिव, सिंचाई एवं कमान क्षेत्र विकास, हैदराबाद, संगोष्ठी के अध्यक्ष, श्री एम. के. श्रीनिवास, महानिदेशक, श्री आर.के. जैन, मुख्य अभियंता (मुख्यालय), श्री एन.सी.जैन, मुख्य अभियंता (उत्तर), डॉ. आर. एन. संखुआ, मुख्य अभियंता (दक्षिण) और इस अवसर पर उपस्थित अन्य कार्यालयों से पधारे अन्य अधिकारियों का हार्दिक स्वागत किया।

श्री आर.के. जैन, अध्यक्ष, गोदावरी नदी प्रबंधन बोर्ड, हैदराबाद ने अपने उद्घाटन भाषण में इस बात पर जोर देते हुए कहा कि ''जल प्रत्येक जीव के लिए आवश्यक है और जब हम जन–जन की भाषा के माध्यम से जल प्रबंधन संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के कार्यों को करेंगे तथा उस कार्य को जल उपयोगकर्ता तक पहुंचाएंगे तो यह कार्य हमारे समाज के लिए अधिक सार्थक सिद्ध होगा। भाषा ही एक ऐसा माध्यम है जिससे जल संसाधनों के सदुपयोग का संदेश जन–जन तक पहुंचाया जा सकता है। इस कार्य में केवल सरकार से ही अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए बल्कि जल का उपयोग करने वाले प्रत्येक नागरिक का यह दायित्व है कि वह इसके ईष्टतम उपयोग पर बल दे। व्यवहार्यतः तकनीकी कार्य हिन्दी में करना कठिन प्रतीत होता है परन्तु इतना भी कठिन नहीं है कि हम अपनी सोच और समझ को अपनी मातृभाषा में प्रकट ना कर सकें, इसके लिए तो बस एक पहल की जरूरत है। उन्होंने आगे कहा कि जल के क्षेत्र में अब आकांक्षाएं एवं उसका परिदृश्य बदल चुका है। हमारा देश 21वीं सदी में प्रवेश कर चुका है। सरकार वैश्विक स्तर पर विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी आधारित विकास करना चाहती है और इसे पूरा करने का दायित्व सरकार ने हमें सौंपा है। नदी जोड़ परियोजनाएं पूरी हो जाती हैं तो खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के साथ–साथ नौवहन, मत्स्य पालन, कृषि, यातायात, पर्यटन, ऊर्जा उत्पादन, रोजगार की समस्याएं भी समाप्त होंगी और हमारी अगली पीढ़ी और अधिक समृद्ध होगी। व्यावहारिक दृष्टि से देखा जाए तो आज की यह संगोष्ठी हिन्दी में कार्य करने वाले अभियंताओं, वैज्ञानिकों एवं विषेशज्ञों के लिए प्रेरणादायक है। इस अभिनव प्रयास के लिए राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण को और आगामी सत्रों में लेख प्रस्तुत करने वाले सभी प्रतिभागियों को मैं अग्रिम बधाई और शुभकामनाएं देना चाहता हूं।

श्री सोमेश कुमार, विशेष मुख्य सचिव, सिंचाई एवं कमान क्षेत्र विकास, हैदराबाद ने अपने अभिभाषण में इस बात पर जोर देते हुए कहा कि ''जहां तक तकनीकी क्षेत्र में आम बोल–चाल की भाषा का प्रश्न है, तो मैं इस बात से बिल्कुल सहमत नहीं हूं कि हिन्दी में तकनीकी कार्य न किया जा सके। उन्होंने स्वयं का उदाहरण देते हुए कहा कि ''वे मूलतः बिहार जैसे हिन्दी भाषी प्रदेश के निवासी हैं परन्तु अपने काडर में तेलंगाना जैसा अहिन्दी भाषी कार्य क्षेत्र मिला, शुरूआत में कुछ कठिनाई जरूर हुई लेकिन धीरे–धीरे अपना सारा कार्य तेलुगु भाषा में ही करना सीख गए जोकि यहां की राज्य सरकार के काम काज की भाषा है''। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि इस प्रकार की तकनीकी संगोष्ठियों के आयोजन से हम समय–समय पर एक मंच पर एकत्र होते रहें और एक दूसरे के विचारों से अवगत होते रहें, यह हमारी व्यावहारिक कार्यशाला होगी जिसके माध्यम से अपने कार्यों में और अधिक पेशेवर एवं सक्षम बनेंगे ऐसा मेरा मानना है।

महानिदेशक महोदय ने अपने अभिभाषण में कहा कि ''आज की संगोष्ठी का विषय ''जल संसाधन के ईष्टतम उपयोग में प्रबंधन की भूमिका'' बहुत उपयुक्त है और यह वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सभी संभावनाओं को

पूरा करने की इच्छा को अपने अंदर समेटे हुए है तथा वर्तमान समस्याओं एवं मांगों से जुड़ा हुआ है। भारत के स्वर्णिम भविष्य के लिए राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण नदियों के अंतर्योजन के माध्यम से राष्ट्र को खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए निरंतर प्रयास कर रहा है। जल के कुशल प्रबंधन के द्वारा ही देश की वर्तमान आशाओं एवं आकांक्षाओं पर हम खरे उतर सकते हैं। उन्होंने आगे तकनीकी कार्यों की भाषा पर बल देते हुए कहा कि यह हमारे अभियंताओं और संबंधित विशेषज्ञों के लिए बड़े गौरव की बात है कि जनसाधारण की भाषा में ही तकनीकी ज्ञान उन तक पहुंचाया जा रहा है और ऐसा होना भी चाहिए क्योंकि हम जिनके लाभ के लिए कार्य कर रहे हैं यदि उन तक अपनी बात उनकी आम भाषा में न पहुंचा सके तो हमारा प्रयास सार्थक सिद्ध नहीं होगा ऐसा मेरा मानना है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास भी है कि हम भविष्य में इस तरह के जल प्रबंधन संबंधी जटिल विषयों पर संगोष्ठियों के माध्यम से हिन्दी के मौलिक उपयोग को और अधिक बढ़ावा देने में सफल होंगे। मैं आप सभी को आगामी तकनीकी सत्रों में सुनने के लिए उत्सुक हूं।''

उद्घाटन समारोह के अंत में डॉ. आर.एन. संखुआ, मुख्य अभियंता (दक्षिण), राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण ने सभी को धन्यवाद प्रस्ताव समर्पित किया।

अंत में श्री एम.के. श्रीनिवास, महानिदेशक, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण ने सभी को इस अवसर पर स्मृति चिन्ह प्रदान किए।

उद्घाटन समारोह की झलकियां

प्रथम तकनीकी सत्र

उद्घाटन समारोह के पश्चात प्रथम तकनीकी सत्र का आरंभ हुआ। तकनीकी सत्र की अध्यक्षता श्री एन. सी. जैन, मुख्य अभियंता (उत्तर), राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, लखनऊ ने की और इस सत्र के रिपोर्टियर श्री बी.एल. शर्मा, अधीक्षक अभियंता, अन्वेषण सर्किल, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, भुवनेश्वर थे।

श्री आर.के. जैन, मुख्य अभियंता (मुख्यालय), रा.ज. वि.अ. द्वारा ''नदी जोड़ परियोजना में कैनाल टॉप सौर फोटोवाल्टिक ऊर्जा उत्पादन का उपयोग के लाभ'' विषय पर अपने प्रस्तुतिकरण में कहा कि नदी जोड़ परियोजना में कैनाल टॉप सौर फोटोवाल्टिक ऊर्जा उत्पादन का उपयोग अधिक लाभकारी होगा तथा इससे परियोजना की लागत में भी भारी कमी आएगी। रा.ज.वि.अ., ने अब तक दो लिंकों पर कैनाल टॉप सौर फोटोवाल्टिक ऊर्जा संयंत्र लगाने की योजनाएं बनाई हैं, परन्तु यदि परियोजना अधिकारी एवं अन्य राज्य सरकारें इस प्रस्ताव पर सहमत होती हैं तो अन्य परियोजनाओं नामतः केन–बेतवा लिंक, गोदावरी–कृष्णा–कावेरी–ग्रांड अनीकट, महानदी–गोदावरी के संबंध में भी विचार किया जा सकता है जिससे जल की समस्याओं से छुटकारा पाने के साथ साथ विद्युत ऊर्जा उत्पादन भी किया जा सकता है। इससे विद्युत ऊर्जा की मांग की पूर्ति के साथ–साथ इन परियोजनाओं से होने वाले लाभों में भी वृद्धि होगी।

श्री एच.के. मीना, सदस्य, कृष्णा नदी प्रबंधन बोर्ड, हैदराबाद ने अपने प्रस्तुतिकरण ''कृष्णा नदी बेसिन में जल प्रबंधन'' विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि कृष्णा नदी बेसिन में जल प्रबंधन के लिए आंध्र प्रदेश और तेलंगाना राज्यों के बीच कानूनी प्रक्रियाएं चल रही हैं, इस पर निर्णय देने के लिए समय–समय पर कई कानूनी पंचाट भी बनाए गए जिन पर समय–समय पर निर्णय भी आते रहे हैं परन्तु यदि तेलंगाना और आंध्र प्रदेश राज्य दोनों राज्यों की समृद्धि को ध्यान में रखते हुए आपसी सहमति से इस दिशा में आगे बढ़ें तो कृष्णा नदी बेसिन में जल प्रबंधन के माध्यम से जल का क्षेत्रीय असंतुलन दूर किया जा सकता है। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि कृष्णा नदी प्रबंधन बोर्ड के गठन के बाद भी दोनों राज्यों के बीच कई छोटे मुद्दों पर असहमति बनी रहती है, जिन्हें जल्दी हल करने से हम जल संकट से छुटकारा पा सकेंगे।

श्री डी.के. शर्मा अधीक्षक अभियंता, रा.ज.वि.अ. ने अपने प्रस्तुतिकरण ''दमनगंगा (एकधारे)–गोदावरी लिंक परियोजना–नासिक जिले की जल आपूर्ति एवं सिचाई समस्या का समाधान'' के माध्यम से यह चिंता व्यक्त की कि लोगों के जीवन स्तर में लगातार सुधार, जन संख्या वृद्धि के कारण घरेलू एवं औद्योगिक क्षेत्रों में बढ़ रही मांगों को देखते हुए इस पर बहुत व्यावहारिक ढंग से सोचने की आवश्यकता है। उन्होंने दमनगंगा (एकधारे)–गोदावरी लिंक परियोजना के लाभों पर विस्तृत चर्चा करते हुए बताया कि इससे नासिक जिले में 15625 हैक्टेयर कृषि भूमि की सिंचाई होगी तथा इसके साथ इस जिले की लगभग 8 लाख जनसंख्या को पीने योग्य पानी भी उपलब्ध होगा। इसके अतिरिक्त पानी को पुनः साफ कर औद्योगिक क्षेत्र में भी उपयोग किया जा सकता है।

श्री पुष्कर सिंह कुटियाल, सदस्य, गोदावरी नदी प्रबंधन बोर्ड, ने अपने प्रस्तुतिकरण में कहा कि ''जल संसाधनों के ईष्टतम उपयोग'' में जीवन के महत्वपूर्ण घटकों में से एक जल संसाधनों में इस तरह अभूतपूर्व तनाव, जनसंख्या में तेजी से वृद्धि के कारण विकास में वृद्धि, सिंचित कृषि, शहरीकरण और औद्योगिकीकरण में वृद्धि तथा जलवायु परिवर्तन के खतरे को समझना, स्थानीय स्तर पर वैश्विक स्तर पर सहयोग, अस्थायी और स्थानिक वर्षा पैटर्न, मांग और हिस्सेदारी की कमी के मद्देनजर पारस्परिक आवश्यकता के लिए हितधारकों की भागीदारी की मांग से निपटने, जल प्रबंधन पर जोर देते हुए नदी बेसिन प्रबंधन के बारे में विस्तृत चर्चा की। नदी बेसिन संगठन के माध्यम से कैसे व्यावहारिक नदी बेसिन प्रबंधन किया जाये, हितधारकों के हित को कैसे सुरक्षित किया जाये, कैसे डाटा एकत्रित किया जाये, बाढ़ तथा सूखा से बचाव और इसमें निहित वित्त प्रबंधन को किस प्रकार किया जाये जिससे कि परियोजनाओं का क्रियान्वयन सुचारू रूप से किया जा सके। उन्होंने यह भी बताने का प्रयास किया है कि गोदावरी की उप बेसिनें कटोरा के रूप साबित हो रही हैं और यह भी बताया कि नदी जोड़ द्वारा किस प्रकार इन्हें एक घड़े के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

श्री एन.एस.आर.के. रेड्डी, रा.ज.वि.अ. ने अपने प्रस्तुतिकरण ''वेनगंगा (गोसीर्खुद) – नलगंगा (पूर्णा–तापी) लिंक – एक बहु उद्देश्यीय एवं बहु घटकीय अंतर राज्यीय लिंक परियोजना'' में वेनगंगा (गोसीर्खुद) – नलगंगा (पूर्णा–तापी) लिंक के महत्व को बताते हुए विदर्भ क्षेत्र के अंतर्गत नागपुर डिवीजन में आने वाले नागपुर, वर्धा, भंडारा, गोंदिया, चंद्रपुर एवं गढ़चिरोली, अमरावती डिवीजन के अधीन पांच जिले – अमरावती, अकोला, बुल्ढ़ाना, वासिम और यवतमाल, कुल ग्यारह जिले शामिल हैं। इन क्षेत्रों में कृषि हेतु सिंचाई के लिए जल की बहुत कमी रहती है। श्री रेड्डी ने बताया कि महाराष्ट्र के कुल 20 अंतःराज्यीय प्रस्ताव हैं उसमें से यह एक अनमोल अंतःराज्यीय परियोजना है तथा इसकी डी. पी. आर. बन गई है। यह परियोजना राज्य के विदर्भ क्षेत्र के सूखाग्रस्त इलाकों जिनमें छः जिलों नागपुर, वर्धा, अमरावती, यवतमाल, अकोला और बुल्ढ़ाना के 15 तालुकों में लगभग 3.71 लाख हेक्टेयर को सिंचाई का लाभ पहुंचाएगी और पेयजल के साथ–साथ औद्योगिक जल आपूर्ति भी करेगी। यह माना जाता है कि विदर्भ क्षेत्र के लिए यह परियोजना एक जीवन रेखा बनेगी।

श्री हरि ओम वार्ष्णेय, कनिष्ठ अभियंता, रा.ज.वि.अ. ने अपने प्रस्तुतिकरण ''जल संसाधन के ईष्टतम उपयोग में प्रबंधन की भूमिका'' विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए देश की बढ़ती हुई जनसंख्या, औद्योगिकीकरण, शहरीकरण तथा अन्य विकास के कारण मानव की मूलभूत आवश्यकता जल तथा निरंतर बढ़ रही इसकी मांग पर चिंता व्यक्त करते हुए अपने सुझाव रखे। उन्होंने अपने इन व्यावहारिक सुझावों को क्रमवार प्रस्तुत किया। महाराष्ट्र के रालेगांव सिद्धि का उदाहरण देते हुए जल संरक्षण एवं प्रबंधन के उपायों पर चर्चा की। खेतों में वर्षा जल रोकने के लिए

मेढ़बंदी करने का सुझाव दिया, कम पानी की खपत से पैदा होने वाले फसल चक्र का चुनाव किए जाने पर बल दिया तथा सिंचाई के माईक्रो इरीगेशन पद्धति पर ध्यान दिए जाने की आवश्यकता बताई।

तकनीकी सत्र की समाप्ति पर श्री बी.एल. शर्मा, अधीक्षक अभियंता ने सभी प्रस्तुतिकरणों की विस्तार से समीक्षा की।

इस सत्र के अध्यक्ष श्री एन सी जैन, मुख्य अभियंता (उत्तर), राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, लखनऊ ने अपने प्रस्तुतिकरण के बारे में बताया जो 'बुंदेलखंड का पुराना जल प्रबंधन, वर्तमान में जल अभाव एवं केन–बेतवा लिंक प्रोजेक्ट' विषय पर था। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण ने कई योजनाओं का अध्ययन किया जिसमें केन–बेतवा लिंक परियोजना में जनता की भागीदारी एवं जल की मांग से निपटने, जल प्रबंधन पर जोर देते हुए नदी बेसिन प्रबंधन के बारे में विस्तृत चर्चा की।

उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में सभी लेखों के गुण–दोषों पर प्रकाश डाला औार उन्हें स्मृति चिह्न प्रदान किया।

द्वितीय तकनीकी सत्र

भोजन के पश्चात द्वितीय तकनीकी सत्र का आरंभ हुआ। इस तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ. आर.एन. संखुआ, मुख्य अभियंता (दक्षिण) राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, हैदराबाद, ने की और इस सत्र के रिपोर्टियर श्री एस. सी. अवस्थी, अधीक्षक अभियंता, अन्वेषण सर्किल, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, ग्वालियर थे।

श्री कुणाल कपूर, अनुसंधान सहायक, केंद्रीय जल एवं विद्युत अनुसंधान शाला, खड़कवासला, पुणे ने अपने प्रस्तुतिकरण ''भारत में जल प्रबंधन की आवश्यकता की भूमिका'' में जल प्रबंधन के ईष्टतम उपयोग पर बल देते हुए अपने विचार रखे और उन्होंने कहा कि भारत में जल प्रबंधन के सन्दर्भ में जल विभाजन विकास, वर्षा जल संचयन, नदी जोड़ा कार्यक्रम, जलविद्युत विकास और अन्य संबंधित क्षेत्रों में काफी काम चल रहा है। इनमें से कुछ कार्य गैर–सरकारी संगठनों द्वारा भी किए जा रहे हैं। आने वाले दशकों में जनसंख्या में तेजी से वृद्धि और देश की बढ़ती

अर्थव्यवस्था के कारण इसकी मांग में लगातार वृद्धि होने की संभावना है। देश के विशाल क्षेत्रों में एक ही समय पर बाढ़ और सूखा पड़ता है। बाढ़ और सूखे को कम करने के लिए बेहतर वैज्ञानिक संरचनात्मक और गैर–संरचनात्मक उपायों की आवश्यकता होती है। अतः पानी की उपलब्धता बढ़ाने और इसकी मांग को कम करने की आवश्यकता है। जल संसाधनों की उपलब्धता बढ़ाने के लिए मौजूदा भंडारण के बेहतर प्रबंधन और अतिरिक्त भंडारण के निर्माण की भी आवश्यकता है।

कु. माधवी गजरे, अनुसंधान सहायक, केंद्रीय जल एवं विद्युत अनुसंधान शाला, खड़कवासला, पुणे ने अपने प्रस्तुतिकरण ''जल संसाधन के ईष्टतम उपयोग में प्रबंधन की भूमिका'' में पारंपरिक जल प्रौद्यौगिकी के संदर्भ में इस बात पर अधिक बल देते हुए चिंता व्यक्त की कि हमारे देश में भूजल जलाशयों की प्राकृतिक भर्ती का पुनर्भरण धीमा है और देश के विभिन्न हिस्सों में भूजल संसाधनों के अत्यधिक निरंतर शोषण के साथ तालमेल रखने में असमर्थ है। इसके परिणामस्वरूप देश के बड़े क्षेत्रों में भूजल स्तर में कमी आई है और भूजल संसाधन कम हो गए हैं। भूजल की प्राकृतिक आपूर्ति में वृद्धि के लिए, भूजल के लिए कृत्रिम रिचार्ज एक महत्वपूर्ण और फ्रंटल प्रबंधन रणनीति बन गया है। मूल रूप से उपयुक्त सिविल संरचनाओं के माध्यम से भूजल जलाशय में सतह के पानी के प्राकृतिक जल संरक्षण में वृद्धि कर रहे हैं। कृत्रिम जलीय रिचार्ज की तकनीकों से स्रोत जल को भूजल जलाशय में जोड़ती हैं और एकीकृत करती हैं ।

श्रीमती विनीता शर्मा, प्रोग्राम सहायक, रा.ज.वि.अ. ने अपने लेख ''जल संसाधन के ईष्टतम उपयोग में प्रबंधन की भूमिका'' के माध्यम से अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि देश में जल संसाधन संरक्षण के लिए अंतर बेसिन जल अंतरण एक दीर्घकालिक उपाय है। इसमें जल की अधिकता वाले क्षेत्र से अतिरिक्त जल, जल की कमी वाले क्षेत्र में जल उपलब्ध कराया जाता है। इस तरह की परियोजनाएं आस्ट्रेलिया, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, कनाडा, इजराइल, चीन आदि देशों में बन चुकी हैं एवं सफल भी हैं। इस तरह की परियोजनाओं पर भारत में भी काम चल रहा है। उन्होंने जल संरक्षण के लिए घरों में अपनाए जाने वाले छोटे–छोटे उपायों पर भी प्रकाश डाला।

पुष्पेंद्र कुमार अग्रवाल, वैज्ञानिक 'बी', राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान, रूड़की ने ''गुजरात में प्रस्तावित कल्पसर परियोजना का जल उपलब्धता अध्ययन'' पर प्रस्तुतिकरण दिया । इस परियोजना के अंतर्गत गुजरात राज्य के दक्षिणी भाग में सौराष्ट्र क्षेत्र में समुद्र में प्रवाहित होने वाले विभिन्न नदियों जैसे–साबरमती, माही, धाधर, नर्मदा एवं सौराष्ट्र की अन्य छोटी नदियों के अतिरिक्त जल के उपयुक्त प्रबंधन द्वारा इस अतिरिक्त जल के ईष्टतम उपयोग हेतु कल्पसर परियोजना को प्रस्तावित किया गया है। इस परियोजना के पूर्ण होने पर सौराष्ट्र क्षेत्र में हरित क्रान्ति आ सकेगी तथा वहाँ के जन मानस की घरेलू पेयजल, सिंचाई की मांगों को पूर्ण किया जा सकेगा। साथ ही साथ क्षेत्र में जल शक्ति के निर्माण से क्षेत्र का औद्योगिक विकास संभव हो सकेगा। परियोजना पर बनने वाला बांध भावनगर जिले के घोघा और भरूच जिले के हंसोत नगरों को आपस में जोड़ने का कार्य करेगा जिससे इन शहरों के बीच की दूरी बहुत कम हो जाएगी। इसके अतिरिक्त परियोजना के निर्माण से सौराष्ट्र क्षेत्र की 1,100 वर्ग किलोमीटर अनुपयोगी लवणीय भूमि का उपयोग भी कृषि के लिए किया जा सकेगा।

श्री राजीव निगम, कनिष्ठ अभियंता, रा.ज.वि.अ., ने ''देश में जल संसाधनों के एकीकृत विकास के लिए प्रबंधन की जरूरत'' विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भारत में जल संसाधन विकास परियोजनाओं की गंभीर उपेक्षा और एकीकृत विकास की कमी के कारण, देश के कई क्षेत्रों में समय – समय पर जल की उपलब्धता पर दबाव का अनुभव होता रहा है। उन्होंने यह भी सुझाव दिए कि जल को उपयोग योग्य बनाकर कृषि, औद्योगिक उत्पादन और मानव उपभोग के लिए जल का कुशल उपयोग किया जा सकता है जल के दुरुपयोग को रोकने के लिए विनियामक उपायों को लागू करना और पानी के विवेकपूर्ण उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए पुरस्कार और सजा देना, जल संरक्षण के लिए

सहायक होगा। हमारे देश को शीघ्र ही एक ऐसी पद्धति अपनानी होगी, जिसमें क्रमबद्ध प्रशासनिक और नीतिगत परिवर्तन हो, बौद्धिक निर्णय क्षमता को बढ़ाने हेतु एक उपयुक्त कानूनी दस्तावेज बने और जल संसाधन विकास के लिए पर्याप्त निधि उपलब्ध कराने के लिए उपयुक्त आर्थिक और वित्तीय व्यवस्था का प्रावधान किया जाए।

कुमारी सिब्रत बेतुरकर, अनुसंधान सहायक, केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला खड़कवासला, पुणे ने अपने प्रस्तुतिकरण ''जल संसाधन के ईष्टतम उपयोग में प्रबंधन की भूमिका'' में प्रतिस्पर्धी क्षेत्रों में बढ़ती मांग, सूखा, पानी की गुणवत्ता में गिरावट, अंतर–राज्यीय नदी विवाद, बढ़ते वित्तीय संकट, अपर्याप्त संस्थागत सुधार और प्रवर्तन आदि देश के जल क्षेत्र की कुछ महत्वपूर्ण समस्याओं पर अपनी चिंता व्यक्त रखते हुए कहा कि हमारे देश में सुरक्षित पेयजल की उपलब्धता अपर्याप्त है। गंभीर जल की कमी से पहले से ही उपयोगकर्ताओं (कृषि, उद्योग, घरेलू), राज्यों के बीच संघर्ष बढ़ रहा है। वर्तमान वैश्विक उभरती चुनौतियों में मौजूदा बुनियादी ढांचे और जल संसाधन का प्रबंधन शामिल है। भारत में जल सुधार ज्यादातर उन साधनों के बजाय संगठनात्मक मुद्दों पर केंद्रित हैं जो नियामक और उपयोगकर्ता के बीच संबंधों को नियंत्रित करते हैं। उन्होंने राष्ट्रीय जल नीति का संदर्भ देते हुए यह बताने का प्रयास किया कि यह नीति किस प्रकार सार्वजनिक निजी भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित करने की सिफारिश करती है जिसके माध्यम से जल संसाधनों के व्यावहारिक प्रबंधन एवं ईष्टतम उपयोग को सुनिश्चित किया जा सके।

श्री के.एस. नायडु, सहायक अभियंता, रा.ज.वि.अ. ने अपने प्रस्तुतिकरण ''भूजल संसाधनों का कुशल प्रबंधन – जनसाधारण का सकल कल्याण'' के माध्यम से चिंता व्यक्त की कि लोगों की आकांक्षाएं बदलती हैं, समाज की ज़रूरतें बदलती हैं उससे हितों का संघर्ष उत्पन्न होता है। हालांकि ऐसे संघर्षों से बचने के लिए, जल संसाधनों की योजना, विकास और संचालन में एक लचीला तरीका अपनाने योग्य तंत्र होना चाहिए। भारत में, हर तरह के संसाधन यानी जल संसाधन, भू संसाधन तथा मानव संसाधन पर्याप्त मात्र में उपलब्ध हैं। समाज के लाभ के लिए इन संसाधनों का उचित उपयोग आवश्यक है। उचित नियोजन से मानसून की अनियमितता का सामना करना होगा। जिससे सतत जल संसाधन विकास व्यवस्था की आकांक्षा पूरी होगी।

श्री ललित कुमार स्यानियां, कनिष्ठ अभियंता, रा.ज. वि.अ. ने अपने लेख ''जल संसाधन के ईष्टतम उपयोग में प्रबंधन की भूमिका'' के प्रस्तुतिकरण के दौरान बताया कि वर्तमान में गिरते भू–जल को संभालना, पानी रीचार्ज करना, बेहतर नियोजन से जल–संरक्षण को बढ़ाना और परंपरागत जल–संरक्षण स्रोतों की रक्षा करना– ये सभी कार्य बहुत जरूरी हैं। यह बहुत चिंता की बात है कि देश के अनेक गांवों और शहरी इलाकों में जल संकट लगभग स्थायी रूप से उपस्थित हो गया है और ऐसी बस्तियों की संख्या दिनों दिन बढ़ ही रही है। गर्मी के दिनों में यह संकट और गंभीर हो जाता है। इस मुद्दे को उच्च प्राथमिकता देते हुए जल संकट के समाधान के प्रयास जन सहयोग से होने चाहिए। इन सभी मोर्चों पर एक साथ मुस्तैदी से और जन–सहयोग से कार्य हो तो मुश्किल के इस दौर में भी न जाने कितनी बहुमूल्य जिंदगियां बचाई जा सकती हैं और बहुत से लोगों की कठिनाइयों को कम किया जा सकता है और यह सब केवल और केवल हमारे उपलब्ध जल संसाधनों के उचित प्रबंधन के द्वारा ही संभव है।

दूसरे तकनीकी सत्र की समाप्ति पर इस सत्र के रिपोर्टियर श्री एस. सी अवस्थी, अधीक्षक अभियंता, अन्वेषण सर्किल, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, ग्वालियर ने सभी प्रस्तुतिकरणों की विस्तार से समीक्षा की। डॉ. आर.एन. संखुआ, मुख्य अभियंता (दक्षिण) राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, हैदराबाद ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सभी लेखों के गुण–दोषों पर प्रकाश डाला और सभी प्रस्तुतिकरणों की सराहना की और अंत में सभी प्रस्तुति कर्ताओं को स्मृति चिन्ह प्रदान किए।

समापन समारोह

समापन समारोह में डॉ. आर.के. गुप्ता, अध्यक्ष, कृष्णा नदी प्रबंधन बोर्ड, हैदराबाद मुख्य अतिथि थे। श्री एम के श्रीनिवास, महानिदेशक, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, श्री आर.के. जैन, मुख्य अभियंता (मुख्यालय), राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, डॉ. आर एन संखुआ, मुख्य अभियंता (दक्षिण) तथा श्री के.पी. गुप्ता, निदेशक तकनीकी (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी भी मंच पर उपस्थित थे।

मुख्य अभियंता (मुख्यालय) राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, जो इस संगोष्ठी की स्मारिका के संपादक मंडल के अध्यक्ष भी हैं, ने अपने अध्यक्षीय भाषण में बहुत प्रसन्नता व्यक्त की और कहा कि न केवल राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण अपितु मंत्रालय के अन्य संगठनों के प्रस्तुतिकरणों ने भी विषय के साथ पूरा न्याय किया है। उन्होंने संतोष व्यक्त किया कि राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण के कनिष्ठ अभियंता भी विषय को इतनी गंभीरता से समझते हैं। उन्होंने कहा कि इस संगोष्ठी के संपादक मंडल का अध्यक्ष होने के नाते मैं इससे गहराई से जुड़ा रहा हूं और लेखों की चयन प्रक्रिया के दौरान सभी लेखों को अध्ययन करने का अवसर भी मुझे मिला। नदी जोड़ ही जल संसाधनों के संरक्षण का भविष्य है। भविष्य की पीढ़ी के लिए हमें आज ही सोचना होगा वरना प्रकृति की ये अपार संपदा कब विलुप्त हो जाएगी हमें पता भी नहीं चलेगा। सरकारी प्रयासों से ही हम इस खतरे से निपट नहीं सकते हैं, इसके लिए हमें जन–जन में यह भावना जागृत करनी होगी कि भविष्य के लिए जल संरक्षण एवं इसका समुचित प्रबंधन हम सबका साझा उत्तरदायित्व है और इसी वजह से हिन्दी में तकनीकी संगोष्ठी करने की योजना बनाई गई। ये हमारी छठी संगोष्ठी है और मुझे यह कहते हुए अत्यंत गर्व हो रहा है कि हमारे ज्यादातर इंजीनियर हिन्दी में तकनीकी दृष्टिकोण को साझा करने में सफल हुए हैं। मंत्रालय के अन्य संगठनों से प्राप्त लेख भी अधिकांशतः वैज्ञानिकों द्वारा लिखे गए हैं। मैं उनकी भी बहुत सराहना करता हूं। हिन्दी को तकनीकी से जोड़ने की हमारी सोच सफल रही है हर संगोष्ठी में बढ़ती लेखों की संख्या इस बात का प्रमाण है। राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण नदियों के अंतरयोजन के क्रियान्वयन से जुड़ा होने के कारण इस बात को

समझता है कि यदि आज हमने नदी जोड़ नहीं बनाए तो कल इस बात के लिए बहुत देर हो जाएगी।

अंत में श्री आर.के. खरबंदा, अधीक्षक अभियंता, अन्वेषण सर्किल, हैदराबाद ने मुख्य अतिथि डॉ. आर. के. गुप्ता, अध्यक्ष, कृष्णा नदी प्रबंधन बोर्ड, हैदराबाद का धन्यवाद किया और कहा कि उन्होंने अपनी उपस्थिति से इस समारोह की गरिमा को और बढ़ाया है। महानिदेशक श्री एम. के. श्रीनिवास का धन्यवाद करते हुए कहा कि वे हृदय से उनके आभारी हैं। उन्होंने राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण के तीनों मुख्य अभियंताओं श्री आर.के.जैन, मुख्य अभियंता (मुख्यालय), डॉ आर. एन. संखुआ, मुख्य अभियंता (दक्षिण) तथा श्री एन.सी. जैन, मुख्य अभियंता (उत्तर) का धन्यवाद किया और कहा कि वे विशेष तौर पर डॉ आर. एन. संखुआ जी को धन्यवाद देना चाहते हैं जिन्होंने संगोष्ठी की व्यवस्था की देखरेख स्वयं की और हमें भी मार्गदर्शन प्रदान किया। तीनों मुख्य अभियंताओं की अध्यक्षीय भूमिका निर्वहन के लिए भी उनका आभार व्यक्त किया।

दोनों तकनीकी सत्रों के रिपोर्टियर श्री बी एल शर्मा, अधीक्षक अभियंता, भुवनेश्वर और श्री सतीश चन्द्र अवस्थी, अधीक्षक अभियंता, ग्वालियर का भी धन्यवाद व्यक्त किया जिन्होंने सभी लेखकों के लेखों की इतनी गहराई से समीक्षा की और अपने विचारों से सभी को लाभन्वित किया है। उन्होंने श्री के.पी. गुप्ता, निदेशक (तकनीकी) और राजभाषा अधिकारी जो इस संगोष्ठी के सूत्रधार हैं उनका भी बहुत–बहुत धन्यवाद किया और कहा कि उनका मार्गदर्शन हमें निरंतर सुलभ रहा है। उन्होंने अपने सहयोगियों का भी धन्यवाद किया जिन्होंने संगोष्ठी की लौजिस्टिक व्यवस्था का दायित्व संभाला और पूरी तरह उसका निर्वहन किया। अंत में उन्होंने कहा कि वे संगोष्ठी में पधारे सभी लेखकों और व्यवस्थाकार पदाधिकारियों का भी धन्यवाद करना चाहते हैं जिनके बिना इस संगोष्ठी का आयोजन संभव ही नहीं था।

तकनीकी संगोष्ठी के समाचार को हैदराबाद में स्थानीय समाचार पत्रों में भी प्रमुखता से प्रकाशित किया गया।

समापन सत्र की झलकियां

अध्ययन दौरा

दिनांक 15 जून, 2019 को प्रातः नागार्जुन सागर बांध परियोजना के अध्ययन दौर के लिए सभी ने प्रस्थान किया। सर्व प्रथम नागार्जुन सागर बांध परियोजना के ऊर्जा घर पर सभी एकत्र हुए। नागार्जुन सागर बांध परियोजना के ऊर्जा घर में कार्यरत सहायक अभियंता ने विस्तार से इस परियोजना का परिचय दिया जिसने सभी को विस्मृत और आल्हादित कर दिया। सहायक अभियंता ने श्री आर.के. जैन, मुख्य अभियंता (मुख्यालय), राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण को शॉल भेंटकर उन्हें सम्मानित किया। अगले दिन स्थानीय समाचार पत्रों में इस खबर को प्रमुखता से प्रकाशित किया गया। इस बहुमंजिला ऊर्जा घर के ऊपर और नीचे के तल पर खड़े होकर सभी अत्यंत रोमांचित थे। इसके पश्चात बांध की संरचना को बाहर और भीतर से देखना सभी के लिए अत्यंत हर्षदायी रहा। जल एक चुनौती की तरह सभी को पुकारता है और उस पर बने बांध शायद उसे नियंत्रित करके चुनौती का एक हल प्रस्तुत करते हैं। वहां से वापसी के साथ ही हैदराबाद में 14–15 जून, 2019 की संगोष्ठी का समापन हुआ। यह अविस्मरणीय अनुभव सभी की यादों में संचित रहेगा।

नागार्जुन सागर बांध परियोजना के अध्ययन दौरे की झलकियां

छठा भारत जल सप्ताह– 2019

वर्ष 2012 में पहली बार भारत जल सप्ताह की अवधारणा रखी गई और इसका आयोजन किया गया। यह जल शक्तिमंत्रालय, भारत सरकार का एक नियमित फोरम है जहां उपलब्ध जल के संरक्षण, परिरक्षण और ईष्टतम उपयोग के लिए महत्वपूर्ण नीतियों को क्रियान्वित करने के लिए सहयोग प्राप्त करने, जल के प्रति जागरूकता तैयार करने के लिए सेमिनारों, सत्रों तथा प्रदर्शनी के माध्यम से प्रख्यात स्टेकहोल्डर्स हितधारकों के साथ विचार–विमर्श तथा चर्चा की जाती है। ''जल सहयोग–21 वीं शताब्दी की चुनौतियों का सामना'' भारत जल सप्ताह 2019 के छठे संस्करण का आयोजन 24 से 28 सितम्बर 2019 तक नई दिल्ली में किया गया।

भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने 24 सितम्बर 2019 को विज्ञान भवन नई दिल्ली में श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, माननीय मंत्री, जल शक्ति तथा श्री रतन लाल कटारिया, माननीय राज्य मंत्री, जल शक्ति मंत्रालय की विशिष्ट उपस्थिति में भारत जल सप्ताह 2019 के बहु–विषयी सम्मेलन का उद्घाटन किया। भारत के माननीय राष्ट्रपति ने इस कार्यक्रम का उद्घाटन करते समय कहा कि पानी के मुद्दे इतने बहुआयामी और जटिल हैं कि इन्हें कोई सरकार या राष्ट्र अकेले हल नहीं कर सकता। भविष्य के लिए पानी संपोषित करने के लिए सभी देशों को एक साथ आना होगा। तद्नुसार, इस वर्ष भारत जल सप्ताह–2019 की विषय वस्तु ''जल सहयोग– 21 वीं शताब्दी की चुनौतियों का सामना'' में इसके सभी पहलुओं को विचार विमर्ष में शामिल किया गया उद्घाटन सत्र के पष्चात् प्लेनेरी सत्र का आयोजन किया गया जिसमें जल संसाधन क्षेत्र के जाने–माने विशेषज्ञों नें अपने वक्तव्य दिए। श्री यू.पी. सिंह, सचिव, जल संसाधन व नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग ने सत्र का

प्रारम्भ करते हुए अपने देश के जल क्षेत्र के परिदृश्य को रेखांकित करते हुए इस क्षेत्र में जो चुनौतियां है उन पर भी प्रकाश डाला। श्री परमेश्वरन अय्यर, सचिव, पेयजल तथा स्वच्छता विभाग ने जल शक्ति अभियान और जल जीवन मिशन के उद्देश्य प्रस्तुत किए। श्री ए.वी. पांड्या, महासचिव, आई.सी.आई.डी. ने क्षेत्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का परिदृष्य प्रस्तुत किया। न्यायाधीश टी.एस. दोअविया ने जल संसाधनों के प्रबंधन पर सहयोग में शामिल मुद्दों पर चर्चा की।

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, माननीय मंत्री, जल शक्ति ने श्री रतन लाल कटारिया, माननीय राज्य मंत्री, जल शक्ति की विशिष्ट उपस्थिति में इस कार्यक्रम के साथ–साथ चलने वाले प्रदर्शनी का उद्घाटन 25 सितम्बर 2019 को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कलाकेन्द्र (आई.पी.एन.सी.ए.) नई दिल्ली में किया।

जपान और यूरोपीय संघ ने अंतर्राष्ट्रीय भागीदार के रूप में भाग लिया और इस कार्यक्रम में जापान से श्री के.जी. हीरामात्सू जापान के राजदूत, के नेतृत्व में प्रतिनिधि मंडल तथा जर्मनी से श्री वाल्टर लिंडनेर, जर्मनी के राजदूत, के नेतृत्व में प्रतिनिधि मंडल ने सक्रिय रूप से भागलिया। जापान और यूरोपीय संघ के विभिन्न विशेषज्ञों तथा पेशेवरों ने इस सम्मेलन तथा प्रदर्शनी में भाग लिया। इस कार्यक्रम में कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्रालय, ऊर्जा मंत्रालय, शहरी विकास मंत्रालय, ग्रामीण विकास मंत्रालय, पर्यावरण, वन तथा जलवायु परिवर्तन मंत्रालय तथा नीति आयोग ने सहयोग दिया। आंध्रप्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, केरल, कर्नाटक, गुजरात, राजस्थान तथा गोआ राज्यों ने भागीदार राज्यों के रूप में भाग लिया। सी.एस.आई.आर.–नीरी, कर्नाटक नीरावरी लिमिटेड, एस.एस.एन.एन.एल., विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, विश्वेश्वरय्या जल निगम लिमिटेड, जीआईजेड सपोर्ट, मेसर्स क्जाइलैम वॉटर सोल्यूशन, मेसर्स वीएटेक वाबाग लिमिटेड ने प्रायोजकों के रूप में भागीदारी की। पांच दिवसीय बहु–विषयी सम्मेलन में 15 सेमिनार, 12 पैनल चर्चाएं, 4 ब्रेनस्ट्रोमिंग सत्र तथा 6 विशेष सत्र आयोजित किए गए। इन सत्रों के दौरान लगभग 170 तकनीकी पेपर प्रस्तुत किए गए तथा उन परचर्चा की गई जिनमें जल संसाधन विकास एवं प्रबंधन क्षेत्र के जाने–माने विशेषज्ञों ने अपने–अपने अनुभव साझा किए। भारत जल सप्ताह 2019 के दौरान माननीय मंत्री जल शक्ति ने राष्ट्रीय जल मिशन पुरस्कार प्रदान किए। स्कूली बच्चों के लिए एक आपसी–विचार विमर्श सत्र का आयोजन किया गया जिसमें 400 से अधिक छात्रों ने भाग लिया तथा इंडिया–एन.पी.आई.एम. ने भागीदारी सिंचाई प्रबंधन पर एक सत्र का आयोजन किया जिसमें किसानों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

इस कार्यक्रम में पूरे विश्व भर से जल संसाधन समाज से लगभग 1500 प्रतिभागियों के रूप में अपार सहयोग मिला। जिसमें 75 अंतर्राष्ट्रीय प्रतिभागी और 166 तकनीकी पेपर शामिल थे।

इस चार दिवसीय प्रदर्शनी में सम्मेलन की विषयवस्तु के समर्थन में विभिन्न हितधारकों तथा सामान्य जनता को लाभान्वित करने के लिए कृषि तथा सिंचाई, जल आपूर्ति तथा ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्रों में नवीनतम विकास और समाधानों को विभिन्न देशों के 60 प्रदर्शकों, संस्थानों, व्यक्तियों, राज्य सरकारों, गैर सरकारी संस्थानों तथा हितधारकों ने प्रदर्शित किया।

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, माननीय मंत्री, जल शक्ति ने श्री रतन लाल कटारिया, माननीय राज्य मंत्री, जल शक्ति की विशिष्ट उपस्थिति में भारत जल सप्ताह 2019 का समापन भाषण दिनांक 28 सितंबर 2019 को विज्ञान भवन नई दिल्ली में दिया। सत्र के दौरान भारत जल सप्ताह 2019 में सामने आई संस्तुतियों को प्रस्तुत किया गया।

भारत जल सप्ताह–2019 की झलकियां

भारत जल सप्ताह–2019 की झलकियां

राजभाषा संबंधी प्रमुख बैठकें

1. दिनांक 18.09.2019 को महानिदेशक महोदय की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक आयोजित की गई। पिछली बैठक के निर्णयों की अनुवर्ती कार्रवाई और पत्राचार की स्थिति पर विचार किया गया। इस बैठक के विचारणीय विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई एवं उन पर निर्णय लिए गए।

2. दिनांक 30.09.2019 को जल शक्ति मंत्रालय, जल संसाधन नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग के सहायक निदेशक (राजभाषा) की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक आयोजित की गई। पिछली बैठक के निर्णयों की अनुवर्ती कार्रवाई और पत्राचार की स्थिति पर विचार किया गया। इस बैठक के विचारणीय विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई एवं उन पर निर्णय लिए गए।

सीएसआईआर द्वारा आयोजित दिनांक 06 सितम्बर, 2019 को राष्ट्रीय हिन्दी वैज्ञानिक कार्यशाला में ''स्मार्ट शहरों के संदर्भ में कुशल जलापूर्ति प्रणाली'' विषय पर श्री राजीव निगम, कनिष्ठ अभियंता,रा.ज.वि.अ., नई दिल्ली शील्ड प्राप्त करते हुए

CSIR राष्ट्रीय हिन्दी वैज्ञानिक कार्यशाला

आधारभूत ढांचा के विकास में विज्ञान मे और
प्रौधोगिकी का योगदान: 21वीं सदी की चुनौतियां

प्रमाण पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि श्री/सुश्री/कुमारी/श्रीमति राजीव निगम, कनिष्ठ अभियंता,
राजविअ, नई दिल्ली ने 6 सितम्बर 2019 की राष्ट्रीय हिन्दी वैज्ञानिक कार्यशाला में पेपर
स्मार्ट शहरों के संदर्भ में कुशल जल आपूर्ति प्रणाली प्रस्तुत किया है।

आयोजन समिति
राष्ट्रीय हिन्दी कार्यशाला

अन्वेषण सर्किल, ग्वालियर को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर से प्राप्त प्रशस्ति–पत्र

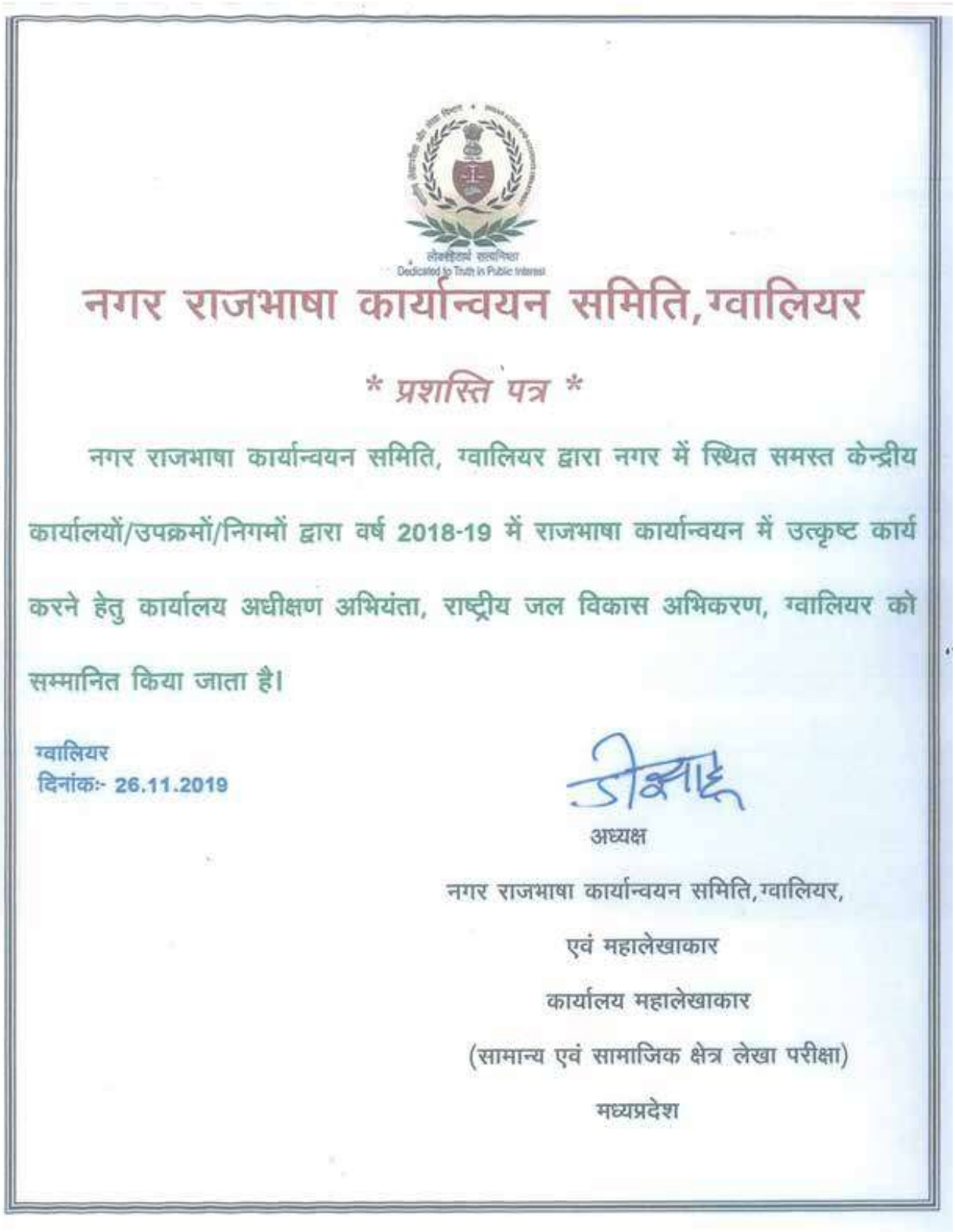

सत्यमेव जयते
Dedicated to Truth in Public Interest

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर

* प्रशस्ति पत्र *

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर द्वारा नगर में स्थित समस्त केन्द्रीय कार्यालयों/उपक्रमों/निगमों द्वारा वर्ष 2018-19 में राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु कार्यालय अधीक्षण अभियंता, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, ग्वालियर को सम्मानित किया जाता है।

ग्वालियर
दिनांकः- 26.11.2019

अध्यक्ष
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर,
एवं महालेखाकार
कार्यालय महालेखाकार
(सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखा परीक्षा)
मध्यप्रदेश

अन्वेषण सर्किल, भुवनेश्वर को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भुवनेश्वर से प्राप्त प्रशस्ति–पत्र

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
MINISTRY OF HOME AFFAIRS, DEPTT. OF OFFICIAL LANGUAGE
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भुवनेश्वर (कार्यालय)
TOWN OFFICIAL LANGUAGE IMPLEMENTATION COMMITTEE, BHUBANESWAR (OFFICE)
कार्यालयः प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), ओड़िशा, भुवनेश्वर
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), ODISHA, BHUBANESWAR

प्रशस्ति पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, ओड़िशा, भुवनेश्वर** कार्यालय ने माह जनवरी, 2019 से जून, 2019 (अर्ध वर्ष) के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भुवनेश्वर (कार्यालय) स्तर पर आयोजित राजभाषा उत्कृष्ट कार्य प्रतियोगिता में भाग लिया एवं **द्वितीय** स्थान प्राप्त किया ।

तिथिः 21.01.2020
Date

सचिव
Secretary

अध्यक्ष
Chairman

कीर्ति पुरस्कार

श्री एम. के. श्रीनिवास, महानिदेशक, रा.ज.वि.अ. हिन्दी दिवस समारोह 2019 में माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह से पुरस्कार प्राप्त करने से पूर्व हाथ मिलाते हुए।

श्री एम. के. श्रीनिवास, महानिदेशक, श्री आर. के. जैन, मुख्य अभियंता (मुख्यालय) एवं श्री के. पी. गुप्ता, निदेशक (तकनीकी) व राजभाषा अधिकारी विज्ञान भवन में हिन्दी दिवस के अवसर पर

हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह की झलकियां

हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह की झलकियां

श्री एम. के. श्रीनिवास, महानिदेशक, रा.ज.वि.अ.

हिन्दी दिवस समारोह– 2019 में शील्ड प्राप्त करते हुए

जल विकास www.nwda.gov.in पर भी उपलब्ध है

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, तृतीय तल, पालिका भवन, नई दिल्ली–110021 द्वारा प्रकाशित

हिन्दी पखवाड़े के उद्घाटन समारोह की झलकियां

"जल ही जीवन है, इसका संरक्षण करें"

श्री एम. के. श्रीनिवास, महानिदेशक, रा.ज.वि.अ.
हिन्दी दिवस समारोह– 2019 में भील्ड प्राप्त करते हुए

जल विकास **www.nwda.gov.in** पर भी उपलब्ध है

Jal Vikas can also be accessed at www.nwda.gov.in

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, 18-20, सामुदायिक केन्द्र, साकेत
नई दिल्ली-110 017 द्वारा प्रकाशित

Design and Printed by Royal Press # 93101 32888